लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–11

काश्मीर की लोक कथाऐं–4

जेम्स हिन्टन नोलिस

1887

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-11
Book Title: Kashmir Ki Lok Kathayen-4 (Folk-tales of Kashmir-4)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Kashmir

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

काश्मीर की लोक कथाऐं–4 7

57 टूटे जहाज़ों वाला राजकुमार 9

58 गगरवाल और उसका नौकर रतन 71

59 नीच रानियॉ 78

60 चार राजकुमार 111

61 जोगी की बेटी 154

62 गुल्लाला शाह 166

63 मछली हॅसी क्यों 227

64 नागरे और हीमाल 239

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

काश्मीर की लोक कथाऐं–4

"लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज़ की यह पुस्तक अब आपके हाथ में प्रस्तुत है भारत के काश्मीर प्रान्त की लोक कथाओं की। यह काश्मीर की लोक कथाओं की पहली पुस्तक थी जिसे जेम्स हिन्टन नोलिस ने पहली बार 1887 में प्रकाशित किया था। उन्होंने इसमें 64 लोक कथाऐं लिखी थीं।[2] उस पुस्तक का दूसरा संस्करण 1892 में प्रकाशित किया गया था। उसी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

भारत में बहुत सारे प्रान्त हैं जिनमें बहुत सारी भाषाऐं बोली जाती हैं। एक दूसरे की भाषा पढ़ना समझना बहुत कठिन काम है इसलिये एक पान्त की भाषा दूसरे प्रान्तों के लोगों के लिये विदेशी भाषा हो जाती है। अपने अपने प्रान्तों की अपनी अपनी लोक कथाऐं हैं। उन दूसरे भाषा वाले प्रान्तों की लोक कथाओं को हिन्दी भाषा भाषी लोगों के पढ़ने के लिये यह प्रयास किया गया है।

तो लीजिये पढ़िये ये लोक कथाऐं भारत के काश्मीर प्रान्त की अब हिन्दी में। लोक कथाओं की अधिकता के कारण यह पुस्तक चार भागों में बॉट दी गयी है। इसके तीन भाग पहले ही प्रकाशित किये जा चुके हैं अब यह इसका चौथा और अन्तिम भाग प्रस्तुत है।

मूल पुस्तक के बारे में

लोक कथाओं की यह पुस्तक जेम्स हिन्टन नोलिस की लिखी हुई है जिसमें उन्होंने अपने चार साल के काश्मीर के निवास काल में एकत्र की थीं। इसका दूसरा संस्करण 1892 में प्रकाशित किया था। जेम्स एक मिशनरी थे जो यहॉ इतने समय रहे। उन्होंने इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि मिशनरी होने के नाते वह बहुत सारे लोगों के सम्पर्क में आये और उन्होंने उन लोगों से बहुत सारी बातें सीखीं। उनके इन कथाओं के संग्रह का मुख्य उद्देश्य काश्मीरी भाषा को जानना था जो वहॉ की स्थानीय भाषा है और दूसरा उद्देश्य वहॉ के लोगों के विचारों और तौर तरीकों को जानना था।

इस संग्रह की कुछ कहानियॉ उन्होंने भारतीय पत्रिकाओं में भी प्रकाशित करवायीं और उन्हीं की सलाह पर यह संग्रह प्रकाशित किया गया। इस संग्रह में से बहुत सारी कथाऐं केवल काश्मीरी हैं जबकि बाकी की कथाऐं भारत में प्रचलित कथाऐं हैं। इसमें की कुछ कथाऐं यूरोप के कई देशों की कथाओं से मिलती जुलती हैं।

वह लिखते हैं कि इन कथाओं के उद्‌गम स्थान को ढूँढना मेरा उद्देश्य नहीं है पर उन्हें इस बात का यकीन है कि बहुत सारी पूर्वी कहानियॉ चंगेज़ खान के समय में हैन्स[3] के द्वारा यूरोप में ले जायी गयीं। बहुत सारी कहानियों का फारसी भाषा में अनुवाद किया गया और उसके बाद सीरिया की भाषा और अरबी भाषा में। और शायद ये फिर वहॉ से यूरोप गयीं।

---

[2] "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1892. 64 Tales. This book is available in English at the Web Site : https://books.google.ca/books?id=ChaBAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

[3] Hans Andersen

57 टूटे जहाज़ों वाला राजकुमार[4]

एक बार एक बहुत ही अक्लमन्द और होशियार राजा था जिसके चार बेटे थे। उसके चारों बेटे उसी की तरह अक्लमन्द और होशियार थे। एक दिन राजा ने सोचा कि वह अपने सब बेटों की अक्लमन्दी और होशियारी का इम्तिहान ले सो उसने अपने चारों बेटों को अपने पास बुलाया।

उसने उनको अलग अलग बुला कर उनसे बहुत सारे सवाल पूछे। उनमें से एक सवाल यह भी था कि किसकी खुशकिस्मती से उसको इतना बड़ा और ताकतवर राज्य मिला और वह उस राज्य पर इतनी अक्लमन्दी से राज कर सका। उसने पूछा — "क्या वह मेरी किस्मत है या तुम्हारी माँ की या तुम्हारी या तुम्हारे भाइयों की?"

राजा के सबसे बड़े बेटे ने कहा — "पिता जी यह आपकी खुशकिस्मती है कि आपके पास यह राज्य है और इतनी ताकत है।" उसके दूसरे और तीसरे बेटों ने भी उसको यही जवाब दिया।

पर जब यही सवाल सबसे छोटे बेटे से पूछा गया तो वह बोला — "आपकी ताकत और आपकी शान यह सब मेरी अच्छी किस्मत का फल है किसी और की किस्मत का फल नहीं।"

---

[4] The Shipwrecked Prince (Tale No 57)

राजा अपने सबसे छोटे बेटे का यह तीखा और बहादुरी भरा जवाब सुन कर उतना ही गुस्सा हो गया जितना कि वह अपने बड़े तीनों बेटों का अपनी बड़ाई भरा जवाब सुन कर खुश हुआ था।

गुस्से में भर कर उसने कहा — "क्या मैं तब अक्लमन्द और ताकतवर राजा नहीं था जब तू पैदा भी नहीं हुआ था? यह राज्य और ताकत मेरे पास तेरे जन्म होने के बाद नहीं आयी है। ओ घमंडी और बेवकूफ लड़के दूर हो जा मेरी नजरों के सामने से।"

फिर उसने दरबान को बुला कर उससे राजकुमार को वहॉ से दूर ले जाने के लिये कहा। राजकुमार को वहॉ से जबरदस्ती भेजने की जरूरत नहीं पड़ी। वह अपने इरादों का पक्का था और अपने फैसले खुद कर सकता था सो वह जल्दी से वहॉ से खुद ही चला गया। उसने अपना कुछ जरूरी सामान बॉधा और महल छोड़ दिया।

कुछ देर बाद ही राजा का गुस्सा कुछ ठंडा पड़ने लगा। जब राजा की राजधानी में यह खबर फैल गयी कि सबसे छोटा राजकुमार वाकई महल छोड़ कर चला गया है तो राजा ने सब तरफ अपने दूत उसको ढूँढने के लिये भेजे ताकि वे उसको वापस ला सकें।

जल्दी ही उसे एक सड़क पर पकड़ लिया गया। पर उनका उससे यह सब कहना बेकार था जब दूतों ने उससे कहा कि राजा का गुस्सा अब ठंडा हो चुका था। अगर वह वापस लौट चले तो राजा उसको बहुत सारी भेंटें देंगे और उसको माफ कर देंगे।

नौजवान राजकुमार अपने रास्ते चलता रहा।

उस दिन सारे दरबार में दुख छाया रहा। शहर के लोग भी उसके जाने से बहुत दुखी थे। पर गये हुए राजकुमार की पत्नी के दुख की तो कोई हद नहीं थी।

कोई भी चीज़ उसको आराम नहीं दे पा रही थी। उसने अपने बाल नोच डाले उसने अपनी छातियाँ पीटीं उसने अपना सारा गहना उतार दिया। वह तो बस एक ऐसी पागल सी दिखायी देने लगी जैसे मरने वाली हो।

आखिर उसने अपने पति के पीछे पीछे जाने का विचार किया। अपनी सास और दूसरे लोगों की प्रार्थना को न मानते हुए उसने एक फकीर का वेश रखा और बिना कोई पैसा लिये हुए अकेली ही अपने पति की खोज में चल दी।

वह जल्दी ही उसके पास पहुँच गयी क्योंकि उसके प्यार में वह बहुत जल्दी जल्दी चलती रही। राजकुमार उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उसने उसको बहुत प्यार किया। उसके साथ में वह अपने आपको अमीर और खुश महसूस कर रहा था। अब उसको दरबार की या किसी बिज़नैस की कोई चिन्ता नहीं थी।

वह बोला — "प्रिये मेरी आँखों की रोशनी, तुम क्या सोचती हो क्या हम यहाँ इन जंगलों में ही न रहें और जो कुछ भी हमें इस तीर कमान और गुलेल[5] से हासिल हो उसी पर गुजारा करें?"

[5] Translated for the word "Sling".

वह राजी हो गयी और वे दोनों वहीं रहने लगे। इस तरह रहते रहते वहॉ उनको कुछ दिन बीत गये कि उनका तीर कमान और गुलेल से जी भर गया। उससे कोई शिकार भी हाथ न आया तो उन्होंने अपना जंगल वाला घर छोड़ दिया और आस पास के गॉवों में जा जा कर रास्ते पर भीख मॉगना शुरू कर दिया।

घूमते घूमते वे एक दिन समुद्र के किनारे पहुॅच गये। वहॉ जब उन्होंने इतना सारा पानी देखा तो वे आश्चर्य में पड़ गये। और जब वे वहॉ ज्वार भाटा देख रहे थे कि कैसे पानी चढ़ता है और फिर कैसे उतर जाता है तो उनको लगा कि वे तो ज़िन्दा पानी को देख रहे थे जो उनको और उनके पीछे पड़ी जमीन को खाने के लिये दौड़ रहा था।

खैर उनकी यह इच्छा तो नहीं थी कि वे समुद्र को पार करें पर यह उन्होंने जरूर चाहा कि वे कुछ समय उसके ऊपर रहें। सो उन्होंने जहाज़ के मल्लाहों को ढूॅढना शुरू किया जो कभी कभी किनारे पर आ जाते थे।

उन्होंने उनसे प्रार्थना की कि वे उनको अपने जहाज़ पर सैर करा दें। पर मल्लाहों ने उनको मना कर दिया क्योंकि वे बहुत गरीब थे और उनके पास उनको देने के लिये कुछ भी नहीं था।

आखिर एक दिन एक दयालु और अमीर व्यापारी का जहाज़ वहॉ आ कर लगा। उसने उनकी इच्छा को सुना तो उसको उन पर दया आ गयी और यह देख कर कि वे बहुत ढंग के और कुलीन

लोग थे अपने जहाज़ पर एक बर्थ दे दी। वह जहाज़ वहाँ से जल्दी ही किसी समुद्री यात्रा के लिये रवाना होने वाला था।

किनारा छोड़ने से पहले व्यापारी ने उनसे पूछा कि वे कौन थे कहाँ से आये थे और क्या चाहते थे। व्यापारी ने कहा मुझे लगता है कि यकीनन तुम लोग शाही परिवार के हो पर बस किसी बेवकूफी की चाल की वजह से इस गरीबी की हालत में हो।

राजकुमार रोते हुए बोला — "हाँ यह ठीक है।" और फिर उसने उसको अपनी सब कहानी सुना दी। वह बोला —

मैं राजकुमार हूँ एक शानदार किस्मत वाला
केवल मेरी वजह से ही राजा को यह राज्य और ताकत मिली है
पर एक बुरे दिन मेरे प्यारे पिता ने मुझसे पूछा
यह किसकी किस्मत से है कि मैं राज करता हूँ तेरी से या अपनी से
मैंने उनसे कहा ओ राजा मेरी से उन्होंने कहा क्या तेरी से
ओ घमंडी बेवकूफ बच्चे तू मेरी आँखों के सामने से दूर हो जा
और मैंने अपने पिता का प्यार छोड़ा और घर छोड़ा
अकेला ही घूमता रहा रेगिस्तान में जंगल में

उसके बाद मेरी पत्नी मेरे पास आयी तो हम खुश खुश रहे
जब मेरे तीर कमान ने मेरा साथ छोड़ा मुझे शिकार नहीं मिला
फिर हम भूख से मारे मारे फिरे पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण
रोटी और शरण ढूँढने के लिये भिखारी की तरह
आखिर अल्लाह हमें यहाँ ले आया तो हमें खुशी मिली
तुम्हारी दया सहानुभूति और सहायता मिली
ओ दोस्त तुम बहुत दिन जियो खुशी से बिना किसी दुख के
और मरने के बाद भी ऊपर अमीरी में रहो

राजकुमार की कहानी सुन कर व्यापारी का दिल भर आया। किसी तरह से वह अपने आपको रोने से रोक सका। वह बोला — “मुझे मालूम है कि जो कुछ भी तुमने अपने पिता से कहा वह सही कहा क्योंकि जैसे ही तुमने अपने पिता का राज्य छोड़ा मेरा एक आदमी जो वहाँ रहता है उसने मुझे बताया कि उनके राज्य पर किसी विदेशी राजा ने हमला कर दिया।

उसने वहाँ के बहुत से रहने वालों को मार डाला और राजा और तुम्हारे भाइयों को सबको उनकी पत्नियों और परिवार सहित बन्दी बना लिया।”

जैसे ही राजकुमार ने यह सुना तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा और अपनी गरीबी और अपने असहाय होने को दोष देने लगा कि इस हालत से वह अपने पिता भाई और जनता की कोई सहायता नहीं कर पा रहा था जिनको वह इतना प्यार करता था।

उसकी पत्नी और व्यापारी के लिये भी उसको कोई तसल्ली देना बेकार था कि “तुम खुदा का शुक्र करो कि जब यह सब हुआ तब तुम वहाँ नहीं थे।”

राजकुमार इन सब बातों के लिये बहुत कुलीन था। बल्कि वह तो अपने आपको कोसने लगा कि वह उस समय वहाँ क्यों नहीं था। अगर वह होता तो शायद यह सब कुछ होता ही नहीं।

उन लोगों को जहाज़ खेते खेते बहुत समय बीत गया और जिस देश में उनको उतरना था वहाँ पहुँचते पहुँचते बहुत देर हो गयी

क्योंकि हवा उनके अनुकूल नहीं बह रही थी। बल्कि किनारे तक पहुँचने से पहले ही हवा इतनी तेज़ और भयानक हो गयी जिससे जहाज़ कभी भी डूब सकता था।

सब लोग काम में जुटे हुए थे और लोगों की सुरक्षा के लिये वे जो कुछ भी कर सकते थे कर रहे थे। इस तरह वे घंटों तक ज़िन्दगी और मौत के बीच झूलते रहे। और बस फिर एक लहर आयी जो पिछली सब लहरों से तेज़ भयानक और ज़ोर की थी और उसने जहाज़ को तोड़ दिया।

जहाज़ दो हिस्सों में टूट गया। पूरा जहाज़ पानी में बह गया। उसके ऊपर के सभी लोग मारे गये केवल दो को छोड़ कर – राजकुमार और उसकी पत्नी जिन्होंने टूटे हुए जहाज़ के तख्ते पकड़ कर अपनी जान बचा ली थी। वे तख्तों के सहारे सहारे तैरते हुए किनारे लग गये थे।

हालाँकि दोनों किनारे लग गये थे पर वे दोनों एक दूसरे से बहुत दूर दो अलग अलग देशों में पहुँच गये थे। राजकुमारी एक बागीचे के पास के किनारे जा लगी थी। बागीचा बहुत अच्छी तरह से रखा हुआ था पर उसमें कोई फूल या पत्ती नहीं थी।

जैसे ही राजकुमारी वहाँ पहुँची तो बागीचे में बहार आने लगी। पेड़ों और झाड़ियों में पत्ते आने लगे और एक बहुत छोटी सी कली निकली। माली जो वहाँ अक्सर उसको देखने के लिये आया करता

था अगले दिन उस बागीचे में यह बदलाव देख कर आश्चर्य में पड़ गया।

असल में वह तो उस दिन उनमें से कई पेड़ों को उखाड़ कर फेंक देने का या फिर आग जलाने के लिये इस्तेमाल करने के लिये हुक्म देने आया था पर यह सब देख कर तो वह चौंक गया। उसने अपने नीचे काम करने वालों से कहा कि वे उस दिन छुट्टी मना सकते थे क्योंकि उस दिन उनको कोई काम नहीं था।

माली इस अच्छी बात की खबर अपने मालिक यानी उस देश के राजा को देने गया। राजा तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया। उसने सोचा कि अल्लाह ने उसके बागीचे को फलों फूलों से हरा भरा कर दिया यह कितनी अच्छी बात है। उसके ऊपर तो उसने बहुत सारा पैसा खर्च किया था फिर भी कुछ नहीं हो पाया था।

यह खबर राजा को सुना कर माली एक बार फिर उस बागीचे को देखने के लिये लौटा तो उसने देखा कि बागीचे के फाटक के पास एक स्त्री बैठी थी। उसने उससे पूछा कि वह कौन थी कहाँ से आयी थी और क्या चाहती थी। पर राजकुमारी के मुँह से कोई बोल ही नहीं निकला सो माली उसे वहीं छोड़ कर वहाँ से चला गया।

जहाँ राजकुमार किनारे से लगा था वहाँ पास में ही एक बहुत बड़े शानदार शहर की दीवार थी। वह उस शहर में घुस गया और एक बहुत ही सुन्दर बागीचे में आ निकला जिसमें बहुत रंग के फूल पत्ते थे और वह सारा बागीचा फूलों की महक से महक रहा था।

उसने उसके अन्दर झाँक कर देखा पर उसके अन्दर घुसने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। क्योंकि उसके अन्दर कोई आदमी नहीं था तो उसको लगा कि शायद उसमें किसी आदमी को अन्दर घुसने की इजाज़त नहीं होगी सो वह बाहर ही रुक गया।

वह भी एक राजा का बागीचा था। जब वह उसकी सुन्दरता देख रहा था तो उसमें उसका शाही माली आया। एक आदमी को अपने बागीचे की तरफ प्यार से देखते देख कर उसे लगा कि वह शायद उसके अन्दर से हो कर गया हो और उसने वहाँ से कुछ फूल चुरा लिये हों। इस समय राजकुमार डर के मारे काँप रहा था क्योंकि अगर ऐसा है तो पता नहीं राजा उसके साथ क्या करेगा।

पर जब माली को यह पता चला कि उसके बागीचे को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया गया है तो वह उस अजनबी से बहुत खुश हुआ। उसको लगा कि वह होशियार और अच्छे स्वभाव का भी था तो उसने उससे पूछा कि वह कौन है और वहाँ क्या कर रहा है।

राजकुमार बोला — "मैं एक भिखारी हूँ और एक दूर देश से आया हूँ।"

माली बोला — "तब तुम मेरे साथ आओ मैं तुम्हारे खाने कपड़े का इन्तजाम करता हूँ।"

भिखारी राजकुमार यह सुन कर बहुत खुश हुआ और माली के पीछे पीछे चल दिया। माली के घर जा कर उसने बताया कि किस तरह से वह गरीब था और रोटी के टुकड़ों के लिये इधर उधर मारा

मारा फिर रहा था। माली ने उसको खाना खिलाया पहनने के लिये कपड़े दिये फिर उसको आग के पास बिठाया ताकि उस ठंड में उसको कुछ गर्मी मिल सके।

बातों बातों में अजनबी मेहमान ने माली से पूछा कि उसने बागीचे से फूल क्यों तोड़े थे। माली ने बताया कि यह राजा का हकुम था कि रोज ताज़े फूल शाही घराने के लिये लाये जायें। इस लिये इस बागीचे की खास देखभाल की जाती थी कि कोई इसमें से कोई फूल न तोड़े ताकि कहीं ऐसा न हो कि शाही घराने के लिये फूल कम पड़ जायें।

राजकुमार बोला — "क्या मैं इन फूलों का एक गुलदस्ता तैयार कर सकता हूँ। ये फूल राजा साहब को इतने ज़्यादा सुन्दर लगेंगे और वह उस गुलदस्ते को देख कर बहुत खुश होंगे।"

माली राजी हो गया और राजकुमार ने उन फूलों के कई सुन्दर गुलदस्ते तैयार कर दिये जो शाही घराने को ले जाने के लिये तैयार थे। माली उन गुलदस्तों को शाही महल में ले गया।

राजा और उसके परिवार ने जब वे गुलदस्ते देखे तो उनको देख कर वे बहुत खुश हुए और खुश हो कर माली को बहुत सारी भेंटें दीं। साथ में उसे यह भी हुक्म दिया कि वह ऐसे ही गुलदस्ते रोज तैयार कर के वहॉ लाया करे। माली ने राजा को सिर झुकाया और वहॉ से चला गया।

घर पहुँच कर उसने राजा के खुश होने की बात अपनी पत्नी को बतायी और उन भेंटों के बारे में भी बताया जो राजा से उसे उस दिन मिले थे।

फिर वह राजकुमार के पास गया और ईमानदारी से उसके गुलदस्तों की तारीफ करते हुए उसे बताया कि उस दिन उसके गुलदस्तों की वजह से उसे कितनी इज़्ज़त मिली थी।

फिर उसने उससे प्रार्थना की कि वह वहीं उसी के पास रहे और रोज उसके लिये फूलों का गुलदस्ता बनाये क्योंकि अगर वह वहाँ से चला गया तो राजा की इच्छा अधूरी रह जायेगी। और यह भी हो सकता है कि वह उसे जेल में डाल दे। राजकुमार ने सोचा कि इससे अच्छा उसे कुछ और नहीं मिल सकता था सो वह भी इस बात पर राजी हो गया।

अब राजा को रोज नयी नयी तरह के गुलदस्ते देखने को मिलने लगे और माली को बहुत सारी भेंटें।

माली दिनोंदिन अमीर होने लगा और जैसे जैसे उसके पास पैसा बढ़ने लगा वह पैसे को बहुत प्यार करने लगा। अब माली और उसकी पत्नी को यह डर लगने लगा कि कहीं अगर उनका मेहमान उनको छोड़ कर चला गया तो वे तो फिर से बहुत गरीब हो जायेंगे।

सो उसको वहाँ रोके रखने का उन्होंने एक प्लान बनाया कि वे अपनी एकलौती बेटी की शादी उसके साथ कर दें। तब शायद वह उनको छोड़ कर न जाये।

उन्होंने आपस में सोचा "हालाँकि वह हमारे पास बड़े दुख के समय में आया था तो भी यह हम कैसे मालूम कर सकते हैं कि वह कहीं किसी बड़े खानदान का तो नहीं है जो बेचारा किस्मत का मारा हो।

खैर सच तो यह है कि वह सब तरीके से बहुत होशियार और अक्लमन्द है और कुलीन है। उसी के सहारे हम लोग इतने अमीर हुए हैं।"

इस तरह से माली की बेटी की शादी राजकुमार से तय कर दी गयी। पहले राजकुमार ने कुछ ना नुकुर की पर फिर वह इस शर्त पर मान गया कि शादी के बाद वह जहाँ जाना चाहेगा वहाँ जाने की उसे इजाज़त दे दी जायेगी।

माली ने यह सोचते हुए उसकी यह बात मान ली कि एक बार वह यहाँ ठहर गया तो फिर वह खुद ही यहाँ से नहीं जा पायेगा। शादी हुई शादी में काफी पैसा खर्च किया गया। बहुत खुशियाँ मनायी गयीं।

कुछ समय तक सब ठीक चलता रहा। सब लोग खुश थे कि एक दिन ऐसा आया कि माली खुद महल नहीं जा सका सो उसको

अपने दामाद राजकुमार को फूलों के गुलदस्ते ले कर महल भेजना पड़ा।

वह चला गया पर जब वह वहाँ से वापस आ रहा था तो रास्ते में उसको राजकुमारी मिल गयी। उसने देखा कि वह लड़का सुन्दर था होशियार था और किसी कुलीन खानदान का लगता था सो वह उससे प्यार करने लगी। तुरन्त ही उसने अपनी एक दासी से उसका पीछा करने के लिये कहा और यह देखने के लिये कहा कि वह कहाँ रहता है।

दासी उसके पीछे पीछे चल दी और उसने देखा कि वह माली के घर में घुस रहा था। आ कर उसने यह बात अपनी मालकिन को बतायी। अगली सुबह राजकुमारी ने माली को बुलाया और उससे कहा कि वह उस लड़के को किसी भी हालत में वहाँ से न जाने दे बल्कि उसे अगर कुछ चाहिये तो वह सब कुछ उसको दे – खाना कपड़े या और भी कुछ।

माली राजकुमारी का यह अजीब सा हुक्म सुन कर ताज्जुब में पड़ गया। वह तुरन्त ही अपने घर वापस गया और जा कर यह सब अपनी पत्नी और अपने दामाद को बताया।

माली ने अपने दामाद से पूछा — "ऐसा तुमने क्या कर दिया जो मुझे तुम्हारे लिये ऐसा हुक्म मिला। क्या तुमने राजकुमारी को देखा है क्या तुमने उससे बात की है या उसको प्यार की नजरों से देखा है। मुझे इस अजीब से हुक्म की वजह बताओ।"

राजकुमार ने उसे बताया कि जब वह महल से वापस लौट रहा था तो रास्ते में उसे राजकुमारी मिली थी पर उसने उसकी तरफ देखा भी नहीं बात करना तो दूर। यह हुक्म एक भेद ही बना रहा जब तक इसका भेद खुल नहीं गया।

इस बीच राजकुमारी की भूख प्यास जाती रही। वह पीली पड़ गयी और बहुत कमजोर हो गयी। जब उसकी माँ ने यह देखा कि उसकी बेटी बीमार दिखायी देने लगी है तो उसने अपनी बेटी से इस बीमारी की वजह पूछी। उसने कहा कि अगर कहीं कोई तकलीफ हो या कोई और बात हो तो उसका इलाज किया जाये।

या फिर अगर उसको कुछ चाहिये तो वह वह बताये ताकि उसकी इच्छा पूरी की जा सके। इस तरीके से मर जाने से तो अच्छा है कि वह उसको अपने बारे में कुछ बताये कि उसे क्या हुआ है।

राजकुमारी बोली — "माँ न तो मुझे कहीं कोई दर्द है न किसी ने मुझे कोई दुखी किया है पर अल्लाह ने इधर एक आदमी भेजा है जिसे मैं प्यार करती हूँ और उससे मैं शादी करना चाहती हूँ।"

रानी बोली — "तो यह तो बताओ कि वह कौन है और कहाँ रहता है। मैं राजा साहब को बता दूँगी तो वह उसके पास तुम्हारी शादी का सन्देश भेज देंगे।"

राजकुमारी बोली — "यह सुन्दर और अक्लमन्द नौजवान माली के घर में रहता है और पिछले दिन माली की जगह यहाँ गुलदस्ते ले कर आया था।"

बेटी की यह बात सुन कर रानी तो भौंचक रह गयी। उसने अपनी बेटी से इस बारे में फिर से सोचने के लिये कहा कि वह क्या कह रही थी।

उसने कहा — "माली का लड़का? कभी तुमने यह भी सोचा है कि एक राजकुमारी एक माली के लड़के के साथ कैसे रह पायेगी। इसको तो सोचना ही गलत है। मेरी बच्ची तुम शायद पागल हो गयी हो।"

राजकुमारी बोली — "मॉ तुम्हारी बेटी पागल नहीं हुई है। और जैसा कि तुम सोच रही हो यह आदमी किसी नीचे खानदान का नहीं है। यह किसी कुलीन घर का और अच्छे तौर तरीके वाला है जिससे उसके ऊॅचे कुल के खून की और अच्छी शिक्षा की बू आती है। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूॅ कि किसी को भेज कर इस बात की जॉच करा लो कि यह बात ठीक है या नहीं।"

रानी ने ऐसा करने का वायदा किया। जब राजा को अपनी बेटी के इरादे के बारे में पता चला तो वह भी भौंचक रह गया पर यह सोचते हुए कि शायद उसकी बेटी की बात सच हो उसने अपनी बेटी से बात करना तब तक ठीक नहीं समझा जब तक उसको उस लड़के के बारे में न पता चल जाये।

राजा ने यह पता करने के लिये अपना एक दूत माली के घर भेजा तो माली को जो कुछ भी अपने दामाद के बारे मालूम था बताया —

मुझको एक भिखारी मिला था पर अब वह मेरा सुन्दर दामाद है
वह बागीचे के फाटक पर खड़ा था बड़े बुरे वेश में और दया की हालत में
पहले मुझे लगा कि वह बागीचे के अन्दर खड़ा है जो इतनी अच्छी तरह सुरक्षित है
पर देखने से पता चला कि सारे फूल सुरक्षित हैं तो मेरा गुस्सा शान्त हो गया
उसके खुशनुमा चेहरे से आकर्षित हो कर मैंने उससे पूछा कि क्या उसको जगह चाहिये
अगर ऐसा है तो वह मेरे पीछे आये और मेरी सहायता करे

वह राजी हो गया और मेरे पीछे पीछे आ गया
और जैसा कि आपने देखा वह मेरे घर में आ कर ठहर गया
वह इतना होशियार माली है कि उसकी सहायता के बिना मैं तो कुछ भी नहीं
राजा जिन गुलदस्तों को देख कर खुश था वे इसी के चतुर हाथों ने बनाये थे
इसी ने बिना किसी मतलब के मुझे राजा की नजरों में ऊपर उठाया

इस तरह उसकी चतुराई से हमें इज़्ज़त मिली पैसा मिला
फिर हमें डर लगा कि यह हमें कहीं छोड़ न जाये
और हम इसकी कला से अनजान रह जायें
सो हमने अपनी बेटी की शादी इससे कर दी सिक्के खाना कपड़ा दे कर
हमने सोचा कि शायद इस तरह से यह यहीं रहेगा अपनी किस्मत समझ कर

अब मैंने तुम्हें इसके बारे में सब कुछ सच सच बता दिया है
जो भी हमें इस अजनबी के बारे में मालूम है
राजा साहब से जा कर बोलना कि वह हम पर दया करें हमें माफ करें
पर वह कौन है कहॉ से आया है यहॉ तक कि उसका नाम
मैं तुम्हें नहीं बता सकता क्योंकि उसने मुझे अपना कहानी कभी बतायी ही नहीं

दूत से यह अजीब सी कहानी सुन कर राजा के दिल में उस छोटे माली के बारे में कुछ और जानने की इच्छा हुई तो उसने अपने

मालाी को बुलवाया। डर के मारे कॉपते हुए माली राजा के सामने आया।

राजा ने पूछा — "अब बताओ माली कि यह आदमी तुम्हारे पास कहॉ से आया? कब आया? यह यहॉ क्या करता है? तुम्हें यह कैसे मिला? तुम्हारे घर में इसकी क्या जगह है? साथ में मुझे यह भी बताओ कि इसका व्यवहार कैसा है और यह क्या क्या कर सकता है। इसके बारे में तुम्हारी क्या राय है।"

माली ने राजा को उसके बारे में वह जो कुछ भी जानता था वह सब बता दिया कि वह उससे कैसे मिला कैसे उसे उसके ऊपर दया आयी और कैसे इस डर से कि वह उसे कहीं छोड़ कर न चला जाये उसने अपनी बेटी की शादी उससे कर दी। क्योंकि वह जो गुलदस्ते बनाता था वे राजा को बहुत पसन्द आते थे।

वह बातचीत में अपने हर ढंग में अपने काम में कितना होशियार था। साथ में वह बहुत ही अच्छे स्वभाव का और दयालु किस्म का आदमी था। माली ने राजा से अपने दामाद के बारे में जो कुछ भी उसे मालूम था सब बता दिया उससे कुछ भी नहीं छिपाया।

राजा ने माली से कहा कि इस जॉच से वह डरे नहीं उस पर कोई ऑच नहीं आयेगी बल्कि इससे उसका कुछ अच्छा ही होगा और उसको वहॉ से भेज दिया।

माली के वहॉ से जाने के बाद राजा ने अपना एक खास नौकर माली के घर भेजा ताकि वह यह देख सके कि वह किस तरीके का

व्यवहार करता है और फिर आ कर उसको खबर दे। उसने उससे कहा कि इस काम को करने में बहुत सावधानी बरते क्योंकि वह ऐसा चाहता था कि शायद वह अपनी बेटी की शादी उससे कर दे।

नौकर चला गया और उसने उस लड़के के बारे में सारी जानकारी इकट्ठी की। उसने आ कर राजा को बताया कि जो कुछ माली ने उसे बताया था वह सब सच था। पर यह ज़्यादा अच्छा होगा अगर राजा साहब उसको अपने पास बुला कर उसे खुद देख लें। राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने तुरन्त ही छोटे माली को अपने पास बुलवा भेजा।

थोड़ी सी ही बातचीत में राजा ने पता लगा लिया कि वह लड़का किसी साधारण घर से नहीं आता था सो उसने उससे अपनी बेटी की इच्छा बतायी और कहा कि वह भी यही चाहता था। उसने उससे पूछा – "क्या तुम राजा के दामाद बनना पसन्द करोगे?"

राजकुमार बोला – "एक शर्त पर कि जब भी मैं चाहूँ यह देश छोड़ कर जा सकता हूँ।"

राजा राजी हो गया और उसने उसके लिये अपने महल के बराबर में एक घर ठीक कर दिया। उसके लिये बढ़िया खाना कपड़े गहने और जवाहरातों का भी इन्तजाम कर दिया ताकि वह हर तरीके से राजा का दामाद लगे और उसको राजा के महल में कभी भी आने जाने से कोई रोक न सके।

जल्दी ही वहॉ के सारे लोग और वजीर आदि उसको एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी समझने लगे और उसको राजा का दामाद मानने लगे।

समय आने पर उसकी शादी हो गयी। सब जगह बहुत खुशियॉ मनायी गयीं। सब बहुत खुश थे सब अपने अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने घूम रहे थे। राजा रानी दुलहिन और दुलहे की सभी बहुत तारीफ कर रहे थे। सारे शहर में इतनी खुशी पहले कभी नहीं मनायी गयी थी।

इस तरह से फिर कुछ दिन गुजर गये। राजा को अपने इस फैसले का कोई पछतावा नहीं था क्योंकि दिन ब दिन राजकुमार का ज्ञान अक्ल और लोकप्रियता बढ़ती ही जा रही थी। उसे कई भाषाऐं आती थीं वह बहुत मुश्किल से मुश्किल सवाल मिनटों में हल कर देता था और दुखी और बीमार लोगों की देखभाल भी करता था।

बस एक ही बात उसके खिलाफ जाती थी वह यह कि वह राजा के साथ उसके दरबार में नहीं बैठता था। एक दिन उसकी पत्नी राजकुमारी ने उससे पूछा कि वह ऐसा क्यों करता है।

वह बोली — "यह ठीक नहीं है कि तुम राजा के दरबार से हमेशा ही अनुपस्थित रहो। तुम्हें कभी कभी वहॉ जरूर जाना चाहिये और अपने आपको वहॉ हर मौके पर दिखाना चाहिये। जो तुम्हारी

पत्नी के पिता का राज्य है उसके कामों में अपनी रुचि भी दिखानी चाहिये।”

राजकुमार ने जो अब राजकुमारी से शादी होने की वजह से अब पक्का राजकुमार था राजकुमारी को बताया कि वह तो जन्म से ही राजकुमार था और उसके पिता तो वह अब जिस देश में रह रहा था उससे कही बड़े और ताकतवर राज्य के राजा थे। तब उसने उसे बताया कि वह वहॉ कैसे आया था।

उसने उसे सब कुछ बताया जो कुछ भी उसके साथ हुआ था और अब उसकी बहुत इच्छा थी कि वह अपने पिता के पास अपने देश लौट जाये। पर उसने पत्नी की सलाह में अक्ल की झलक देखी तो उसने उससे वायदा किया कि वह अब आगे से दरबार में जरूर जायेगा।

अगले दिन से वह अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर राजा के दरबार में जाने लगा। वह वहॉ बैठा हुआ बहुत ही कुलीन और सुन्दर लग रहा था। राजा भी अपने दामाद को वहॉ आया देख कर बहुत खुश हुआ। उसने उसको उसकी खास गद्दी पर बिठाया और देश की परेशानियों के बार में उससे सलाह भी मॉगी।

यह भी कुछ दिनों तक चलता रहा। अब राजकुमार रोज दरबार जाता था और वहॉ के फैसले इतनी अक्लमन्दी के साथ करता था कि राजा उसको अपने बेटों से भी ज़्यादा चाहने लगा। वह उसको खास कर जब ज़्यादा चाहने लगा जब उसकी बेटी ने

उसे बताया कि वह खुद एक राजकुमार था पर उसको बेरहमी की वजह से ये दिन देखने पड़े और विदेश में आ कर भीख माँगनी पड़ी।

राजा का प्यार और ध्यान उसकी तरफ और ज़्यादा हो गया जब उसने यह पक्का कर लिया कि वह एक कुलीन परिवार का बेटा था। उसने उसको अपनी सारी प्राइवेट बातें बता दीं और राज्य के भेद बता दिये। अब वहउससे सारे मामलों में सलाह लेने लगा था।

एक दिन वह उससे बोला — "तुम तो अब मेरी जरूरत बन गये हो। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि अब तुम मुझको छोड़ कर कहीं जाने की सोचना भी नहीं। तुम्हें जो भी चीज़ चाहिये मुझे बताना वह तुम्हें मिल जायेगी।"

जब राजा के दूसरे दामादों और बेटों ने राजा का रुझान इस दामाद की तरफ ज़्यादा देखा और देखा कि वह तो उसके कहे पर ही चलता था उसकी सलाह लिये बिना हिलता भी नहीं था तो वे सब इससे जलने लगे और यह प्लान करने लगे किस तरीके से राजा की नजरों में उसे गिराया जाये।

उन लोगों को यह पता नहीं था कि वह जन्म से ही राजकुमार है और इसलिये एक होशियार तीर कमान चलाने वाला भी है। पर अगर वह माली का बेटा हुआ तो यकीनन उसको न तो तीर कमान

ही चलाना आता होगा और न उसको जंगली जानवरों के बारे में ही कुछ पता होगा।

तो एक दिन उन्होंने शिकार खेलने का प्रोग्राम बनाया और साथ में राजकुमार को भी उसका न्यौता दिया। राजा ने उसे शिकार पर जाने की इजाज़त दे दी। राजकुमार ने भी कहा कि वह इस शाही खुशी में शामिल हो कर खुश होगा।

पर जब वह राजा के सामने से गया तो जाहिर था कि वह वहाँ से अपने घर गया होगा। यह सोच कर दूसरे राजकुमारों ने उसका मजाक बनाया कि देखो वह माली का बेटा अपने घर जा रहा है। वह शिकार कैसे कर सकता है। आहा यह हमारा कैसा रिश्तेदार है जिसको राजा का इतना प्यार मिला हुआ है।

इस तरह से वे उसकी हँसी उड़ाते हुए राजा के पास गये और उससे बोले — "राजा साहब आपने जिसे हमारे साथ जाने की इजाज़त दी है जिस पर आप इतना भरोसा करते हैं यह तो किसी नीचे घराने का लगता है क्योंकि वह तो इस शिकार पर जाने से बच रहा है। और यह उसके लिये ठीक भी है क्योंकि वह जानता है कि वह इसमें हिस्सा नहीं ले सकता।"

इस तरह से उन्होंने राजा का दिमाग उनके प्यारे दामाद की तरफ से फेरने की कोशिश की। पर इसके अलावा कि उनका बहनोई इसमें ठीक से हिस्सा नहीं ले पायेगा उनको यह भी ख्याल था कि वह घोड़े पर भी सवारी नहीं कर पायेगा।

सो जब वे सब शिकार के लिये जाने लगे तो उन्होंने एक खास पागल सी घोड़ी उसके लिये तय की कि वह उस घोड़ी पर जायेगा। इस घोड़ी पर अभी तक कोई सवारी नहीं कर पाया था और यह एक अलग ही जगह रखी हुई थी।

पर उनका वह बहनोई तो बहुत ही होशियार घुड़सवार था। और ऐसा तो कुछ भी नहीं था जो उसको न आता हो। सो वह अपने घर गया और जा कर राजकुमारी को बताया कि वे शिकार पर जाने वाले हैं।

अपने शिकारी वाले कपड़ पहन कर और शिकार के लिये हथियारों से लैस हो कर वह अस्तबल में पहुँचा और घोड़े की माँग की तो उसको कहा गया कि केवल पागल घोड़ी ही उस समय वहाँ थी। बाकी सारे घोड़े शाही परिवार के दूसरे लोगों के लिये थे।

राजकुमार को इसकी कोई चिन्ता नहीं की कि उसको कौन सा घोड़ा या घोड़ी दी जाती है। उसको तो सबके साथ शिकार पर जाना था और उसको तो कोई भी घोड़ा या घोड़ी चाहिये थी। बस वह मजबूत और तेज़ भागने वाला होना चाहिये।

वह तुरन्त ही उस पागल घोड़ी पर चढ़ा। उसके घोड़ी पर चढ़ते ही वह घोड़ी और ज़्यादा पागल जैसी हो गयी। उस पर अब तक कोई चढ़ा भी नहीं था और न वह अब किसी को चढ़ने देना चाहती थी।

वह कभी इधर कूदी कभी उधर पर राजकुमार ने भी अपनी सारी होशियारी उसको सँभालने में लगा दी। फिर तो वह जंगल की तरफ ऐसी भागी कि उसके पैर जमीन को छूते भी नजर नहीं आ रहे थे।

राजकुमार उसको कस कर पकड़ कर बैठा रहा और जल्दी ही जंगल के उस हिस्से में पहुँच गया जहाँ उनको शिकार खेलना था। जहाँ जंगली जानवर रहते थे। एक होशियार शिकारी होने के नाते उसे तुरन्त ही पता चल गया कि वे किसका शिकार करना चाह रहे थे। उसने एक गीदड़ मारा एक भालू मारा और एक तेंदुआ[6] मारा।

वह इन सब जानवरों को अपने साथ नहीं ले जा सकता था क्योंकि उसके पास उनको ले जाने के लिये कोई आदमी नहीं थे सो उसने गीदड़ की पूँछ काट ली भालू की नाक काट ली और तेंदुए का एक कान काट लिया और वहाँ से चला आया।

और दूसरे राजकुमार यह सोचते हुए कि राजा का प्रिय राजकुमार तो अपने घर चला गया है वहाँ से जल्दी नहीं निकले। इसके अलावा वे किसी दूसरे रास्ते से जंगल गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि तीन जानवर मरे पड़े हैं जो कि उस दूसरे राजकुमार ने मारे थे और उनकी लाश वह वहीं छोड़ आया था।

[6] Translated for the word "Leopard". See its picture above.

वे वहाँ किसी जानवर को नहीं मार सके तो उन्होंने उन्हीं तीनों जानवरों को उठा कर राजा के महल ले जाने का हुक्म दिया यह कहते हुए कि वे उन्होंने ही मारे थे।

जब राजा का प्रिय राजकुमार घर पहुँचा तो राजकुमारी ने उससे पूछा कि वह इतनी जल्दी कैसे लौट आया। उसने सोचा कि शायद उसने शिकार किया ही नहीं होगा।

पर उसने अपनी जेब से गीदड़ की पूँछ भालू की नाक और तेंदुए का कान निकाल कर उसको दिखाये और कहा कि वह उनकी लाशें वहीं जंगल में छोड़ आया है क्योंकि उसके पास कोई आदमी नहीं था जो उनको ले कर आता।

शाम को शिकार पार्टी लौट कर घर आयी। उनके साथ गीदड़ भालू और तेदुए की लाशें थीं।

अगले दिन दरबार की कार्यवाही शुरू होने से पहले राजा ने उनसे पूछा कि उन्होंने किस किस का शिकार किया। दूसरे राजकुमारों ने जल्दी से जवाब दिया कि उन्होंने एक गीदड़ मारा एक भालू मारा और एक तेंदुआ मारा जिनकी लाशें राजा के देखने के लिये बाहर पड़ी हैं। उन्होंने साथ में यह भी कहा कि हमको नहीं लगता कि इससे ज़्यादा जानवर उस जंगल में हैं।

पर राजा ने यह महसूस किया कि उसका प्रिय राजकुमार कुछ नहीं बोला था वह चुपचाप ही बैठा था। क्योंकि पहले दिन दूसरे राजकुमार उसकी हँसी उड़ा रहे थे इस वजह से उसको जानने की

उत्सुकता थी कि वह शिकार खेलने गया भी था या नहीं। और अगर गया भी था तो उसने क्या मारा।

सो राजा ने उससे पूछा कि उसकी क्या खबर है। तभी राजा के दूसरे दामाद ने जवाब दिया — "राजा साहब उससे मत पूछिये। इसको तो शिकार खेलना आता ही नहीं है सो यह घर चला गया। इस बात को सबको सुना कर इसे शर्मिन्दा मत कीजिये।"

अब तो राजा के प्रिय दामाद की शान खतरे में थी सो उसको इस झूठ पर गुस्सा आ गया। फिर भी उसने पहले दूसरों को बोलने का मौका दिया। फिर उसने उन सबकी तरफ गुस्से से देखते हुए कहा — "मैं भी शिकार खेलने गया था राजा साहब पर मैं अकेला ही था। मैंने तीन जानवर मारे गीदड़ भालू और तेंदुआ।"

राजा के दूसरे दामादों ने जब यह सुना तो उनको बड़ा ताज्जुब हुआ खास कर के जब जबकि वे तीन लाशें जो वे राजा के लिये ले कर आये थे यह बताते हुए कि वे उनके शिकार का नतीजा थीं वह उन्हीं तीनों जानवरों की थीं जो इस राजकुमार ने मारे थे।

अब वे क्या करें। वे राजा को अपनी बात की सच्चाई को कैसे साबित करें। यह तो तभी मुमकिन था जब वे और झूठ बोलें।

वे बोले कि उनका प्रिय राजकुमार झूठ बोल रहा था। वह तो शिकार पर गया ही नहीं था क्योंकि दरबार के बाद उन्होंने उसे अपने घर जाते हुए देखा था। और बाद में भी वे ऐसे कई सबूत दे

सकते थे जिनसे यह साबित होता था कि आज सुबह तक तो वह अपने घर से बाहर कहीं गया ही नहीं था।

प्रिय राजकुमार धैर्य से शान्तिपूर्वक बैठा रहा जब तक उन सबने अपनी अपनी बात खत्म की। बाद में उसने राजा से इजाज़त माँगी कि वह किसी नौकर को भेज कर उसके घर से एक पैकेट मँगवा लें। उसमें रखी चीज़ें उसकी सच्चाई को साबित करेंगी।

यह सुन कर तो दरबार में आश्चर्य और बढ़ गया। इस मामले की सच्चाई साबित करने के लिये उसके घर से वह पैकेट लाया गया। राजा को खुद को अपने प्रिय राजकुमार पर शक होने लगा था।

उसने सोचा कि ज़्यादा ज्ञान ने इसका दिमाग खराब कर दिया है। जब तक नौकर राजकुमार के घर से जो दरबार के बिल्कुल पास में ही था वह पैकेट ले कर दरबार में आया लोग तरह तरह की बातें कर रहे थे।

राजा के सामने वह पैकेट खोला गया। उसमें एक गीदड़ की पूँछ थी भालू की एक नाक थी और तेंदुए का एक कान था। और जब राजा ने उस पैकेट को खोल कर राजकुमार को दिखाया तो राजकुमार बोला — “राजा साहब आप देखें और मेरे भाई लोग आप भी देखें। गीदड़ की पूँछ भालू की नाक और तेंदुए का कान। जिन्हें मैंने कल मारा था पर उनकी लाशें मैं वहीं जंगल में ही छोड़

आया था क्योंकि मैं अकेला था और उनको अपने साथ नहीं ला सकता था।

उन्हीं जानवरों की लाशें मेरे भाई लोग शाम को ले कर आये हैं जिन्हें कि लोग यह कह रहे हैं कि उन्हें उन्होंने मारा है। अभी आप देख सकते हैं कि ऐसा नहीं है। यह सब इनके दिल में मेरे लिये बुरी भावनाओं का फल है ताकि मेरा नाम बदनाम हो और राजा मुझे प्यार न करें।

आप जा कर देखें कि बाहर जो जानवरों की लाशें पड़ी हैं वे इन्हीं जानवरों की हैं जिनको मैंने कल मारा था। वह देखेंगे कि मैं सच बोल रहा हूँ और मेरे भाई लोग झूठ बोल रहे हैं।"

यह सुन कर राजा खुद उन जानवरों को देखने के लिये दरबार से बाहर गया तो लो गीदड़ की लाश वहाँ थी पर उसकी पूँछ नहीं थी। भालू की लाश वहाँ थी पर बिना नाक के। तेंदुए की लाश भी वहाँ थी पर उसका एक कान गायब था।

इस तरह राजकुमार की बात की सच्चाई साबित हो गयी। यह देख कर राजा बहुत खुश हुआ कि उसका उस राजकुमार में विश्वास ऐसे ही नहीं था। इस खुशी में वह दूसरे राजकुमार और दरबार के दूसरे लोगों को उनके झूठ पर डाँटना भी भूल गया।

इसके बाद तो राजा का प्यार उस दामाद के लिये और ज़्यादा बढ़ गया और बाद में यह तय हुआ कि राजा का प्रिय दामाद ही

राज्य का वारिस होगा जबकि दूसरे राजकुमारों को नीचे ओहदे दिये जायेंगे।

इस बात के तय होने के कुछ दिन बाद ही राजकुमार की अपने देश जाने की इच्छा बहुत ज़्यादा हो गयी। उसने यह सब राजा को बताया और कहा कि वह अपनी यह इच्छा पूरी कर के तुरन्त ही वापस लौट आयेगा।

राजा को यह सुन कर बहुत दुख हुआ और उसने राजकुमार से अपने देश न जाने के लिये काफी कहा और कहा कि वह अपने दूत वहाँ भेज दे और अपने पिता का उनके राज्य का और जनता का हालचाल पता करवा ले पर राजकुमार की वहाँ जाने की इच्छा बहुत ज़्यादा थी सो राजा को उसको वहाँ जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी।

घर जा कर उसने अपनी पत्नी को अपने जाने के बारे में बताया और कहा कि वह न तो डरे और न दुखी हो क्योंकि वह जल्दी ही लौट आयेगा पर वह उसकी सुनने वाली नहीं थी। उसके माता पिता ने भी उसको यही समझाया पर वह नहीं मानी। वह राजकुमार को बहुत प्यार करती थी।

वह रो कर बोली जहाँ तुम जाओगे मैं भी वहीं जाऊँगी। मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं छोड़ सकती। चाहे तुम मुझे दुखी रखो या खुश रखो मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगी। मैं तो केवल ज़िन्दा ही इसलिये हूँ क्योंकि तुम ज़िन्दा हो। इसलिये तय यह हुआ कि ये दोनों ही वहाँ जायेंगे।

राजकुमार का देश दूर था और वहाँ समुद्र पार कर के ही पहुँचा जा सकता था। पर इस शाही जोड़े को इस बात का कोई डर नहीं था हालाँकि राजकुमार का समुद्री यात्रा का पहला अनुभव कुछ अच्छा नहीं था क्योंकि उसमें तो उसने अपनी पत्नी को भी खो दिया था पर फिर भी।

उस देश जाने के लिये सब कुछ ठीक किया गया फिर वे जहाज़ पर चढ़ कर अपने देश चले। दूसरे जहाज़ के टूटने का किस्सा देना यहाँ जरूरी नहीं है क्योंकि अफसोस वह जहाज़ अभी किनारे से बहुत दूर नहीं गया था कि समुद्र में बहुत ऊँची ऊँची लहरें उठने लगीं और उन्होंने जहाज़ को अपने अन्दर ले लिया। जहाज़ के सभी यात्री पानी में डूब गये।

यह एक बहुत बुरा समय था हालाँकि कुछ दिखायी नहीं दे रहा था कुछ सुनायी नहीं दे रहा था क्योंकि रात अँधेरी थी और लहरों का शोर बहुत था। ऐसा लग रहा था जैसे सब अकेले अकेले ही मर रहे हों और उनको रोने वाला भी कोई न हो।

बाद में यह पता चला कि उन सभी यात्रियों में से केवल ये दो यात्री ही बचे – राजकुमार और राजकुमारी। जैसा कि इस राजकुमार के साथ पहली बार हुआ था वैसे ही अबकी बार भी हुआ। दोनों ने लकड़ी के अलग अलग तख्ते पकड़े और तैरते हुए अलग अलग जगहों पर जा लगे।

राजकुमार की यह पत्नी भी तैरते तैरते उसी जगह जा लगी जहाँ उसकी पहली पत्नी उतरी थी। यह भी एक बिना फलों और बिना फूलों वाले बागीचे में चली गयी और वहाँ पहुँच कर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। और लो जैसे ही वह उस बागीचे में घुसी वहाँ कलियाँ बढ़ने लगीं और ज़्यादा भी होने लगीं। पेड़ों की टहनियाँ चारों तरफ बढ़ने लगीं।

अगली सुबह जब माली उस बागीचे को देखने के लिये आया तो वहाँ बहुत सारी कलियाँ और पेड़ों को फला फूला देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि वे अब बहुत छायादार हो गये थे और उन पर बहुत से फल आ सकते थे।

उसने अपने नीचे काम करने वालों को एक दिन की छुट्टी दे दी और राजा को यह खुशी की खबर दी। राजा तो यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि उसके बागीचे पर अल्लाह की दया हो गयी थी। उसने माली को बहुत सारा इनाम दिया।

माली यह देखने के लिये कि यह उसकी आँखों का धोखा नहीं था वापस बागीचे गया। तो उसने देखा कि वहाँ तो एक दूसरी स्त्री बैठी रो रही है। उसने उससे बात करने की कोशिश भी की पर वह भी कुछ नहीं बोली चुपचाप रोती रही।

माली ने सोचा “यह बड़ी अजीब सी बात है कि जब पहली स्त्री आयी थी तब पेड़ों और झाड़ियों पर कलियाँ खिल गयी थीं और अब इस दूसरी स्त्री के आने पर वे कलियाँ बड़ी और ज़्यादा हो गयीं

और पेड़ों की शाखें भी बड़ी और मोटी हो गयीं। ऐसा लगता है कि ये स्त्रियॉ बड़ी पवित्र स्त्रियॉ[7] हैं और उन्हीं के आशीर्वाद से यह बागीचा इतना हरा भरा हुआ है और इसी लिये वे मुझसे बोली नहीं।

यह सोच कर वह दोबारा राजा के पास गया और जा कर उसे यह बात बतायी। राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और एक पवित्र आदमी को उनसे बात करने के लिये भेजा और अगर मुमकिन हो तो उनके हालात भी पता करने के लिये भी कहा।

पर यह पवित्र आदमी भी उनसे कुछ पता नहीं कर सका। उसने राजा को बताया कि शायद माली सही कह रहा था। सो उसने राजा को सलाह दी कि वह उनको खाना कपड़ा और शरण दे। इस बात को मान कर राजा ने उनको महल से खाना कपड़ा और शरण दे दी और उनको और भी बहुत सारी सुविधायें दीं।

उधर राजकुमार किसी दूसरी जगह किनारे लग गया। वह एक बहुत ही शानदार और बड़ा शहर था। वह जब बाजार में घूम रहा था उसने एक विद्वान पंडित को एक व्यापारी की दूकान में शास्त्र पढ़ते देखा। बहुत सारे लोग उसकी अक्लमन्दी की बातें सुनने के लिये वहॉ जमा थे।

यह देख कर वह खुद भी उसको सुनने के लिये बैठ गया और जब उसका भाषण खत्म हो गया तो सारे लोग चले गये वह वहीं

---

[7] Translated for the words "Holy Women"

व्यापारी की दूकान के पीछे रह गया। जब व्यापारी अपनी दूकान बन्द करने लगा तो उसने वहाँ एक अजनबी को देखा तो उससे पूछा कि वह कौन था और कहाँ से आया था।

तो उसने जवाब दिया —

बेरहम किस्मत ने मुझे घर से बाहर निकाल दिया
दूर विदेश में घूमने के लिये मजबूर किया
मैं वहाँ बहुत अक्लमन्द और बड़ा आदमी बन गया
और राज्य में नम्बर दो का आदमी हो गया

कुछ समय बाद मेरा दिल रोने लगा अपने देश लौटने के लिये
अपना घर दोबारा देखने के लिये उनको अपनी किस्मत बताने के लिये
मैंने अपनी पत्नी को घर पर रहने के लिये कहा
जब तक इन्तजार करने के लिये कहा जब तक हम दोबारा मिलते हैं
फिर कभी न बिछड़ने के लिये जब तक हमें मौत आती है

उसने मेरी बात नहीं सुनी वह बोली मेरी किस्मत तो तुम हो
जहाँ तुम जाओगे वहीं मैं जाऊँगी तुम्हारे साथ जिऊँगी तुम्हारे साथ मरूँगी
हालाँकि राजा हमारे बाद रोया पर हमारा प्यार ऊँचा रहा
हम बहुत दिनों तक खुश रहे एक दूसरे को प्यार करते रहो
जब दुख के दिन बीत गये तो हमको एक बार अपना घर देखना था
हमारे प्यारे लोगों का प्यार पाना था प्यारी मुस्कुराहट देखनी थी

पर अल्लाह के तौर तरीके तो अल्लाह ही जानता है
एक बहुत ही ताकतवर हवा चली जिसमें जहाज़ और सब लोग डूब गये
सिवाय इस आदमी के जो आज तुम्हारे सामने खड़ा है
मैं मेरे दोस्त तुमसे प्रार्थना करता हूँ अपनी इस दर्द भरी ज़िन्दगी में आराम के लिये
मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो फिर देखना कि मैं किस तरह तुम्हारे काम आता हूँ

व्यापारी उसकी इस दर्दभरी कहानी से इतना हिल गया कि वह उसने उसे अपनी दूकान में सोने की जगह दे दी और कहा कि वह अभी घर जा कर उसको अपने घर से खाना भेज देगा।

सो राजकुमार ने उसकी दूकान में अपने सोने की जगह बनायी और व्यापारी अपने घर चला गया। वहाँ जा कर उसने अपने नौकर को कुछ खाना ले कर दूकान ले जा कर उस आदमी को देने के लिये कहा।

अगली सुबह से उस व्यापारी ने राजकुमार को अपने यहाँ नौकरी दे दी। बदले में राजकुमार ने भी उसको बहुत इज़्ज़त दी और उसकी बहुत सहायता की।

धीरे धीरे व्यापारी को लगने लगा कि अब उसका काम राजकुमार के बिना नहीं चलता था और उसने उससे यह बात कही भी। साथ में उसने उससे यह भी कहा कि अगर ऐसा ही चलता रहा तो उसको वहीं रहना चाहिये और उसको उसके परिवार में शादी कर लेनी चाहिये। पर क्या वह व्यापारी की बेटी से शादी करेगा?

व्यापारी को इस बारे में अपनी पत्नी से बात करने में काफी परेशानी हुई क्योंकि बिज़नैस की नजर से देखने वाले को इसमें कुछ न रोके जाने वाले मामलात लगे।

उसने कहा कि उसके यह सब साफ दिखायी देने वाले लक्षणों को देखते हुए भी मुझे लगता है कि उसकी कहानी सच्ची है क्योंकि उसको पास इतना ज्ञान अक्लमन्दी समझ और अच्छा व्यवहार है।

इस पर उसकी पत्नी अपनी बेटी की शादी उससे करने के लिये राजी हो गयी तो राजकुमार को भी इस बारे में बता दिया गया।

पर राजकुमार इस बात के लिये राजी नहीं हुआ।

वह बोला — "यह ठीक नहीं है कि एक इतने बड़े व्यापारी की बेटी की शादी एक नीचे लड़के के साथ हो जो उसके पिता की दया पर जी रहा हो।"

काफी पीछे पड़ने के बाद राजकुमार इस शर्त पर राजी हो गया कि जब भी वह चाहेगा उसको यह देश छोड़ कर जाने दिया जायेगा।

व्यापारी उसकी यह शर्त यह सोचते हुए मान गया कि जब यह लड़का यहाँ ठहर जायेगा शादी कर लेगा तो फिर यह अपने आप ही यहाँ से कहीं नहीं जायेगा। यहाँ तक कि अपने पिता के घर भी नहीं खास करके जब जबकि वहाँ जाने के लिये उसे समुद्री यात्रा करनी पड़े।

इसके बाद उसकी शादी हो गयी और इतनी ज़्यादा शानो शौकत से हुई कि सारा शहर देखता रह गया। शादी में बहुत पैसा खर्च किया गया था।

कुछ ही साल में व्यापारी के दामाद की अक्लमन्दी से व्यापारी का बिज़नैस इतना बढ़ गया और वह इतना अमीर हो गया कि शहर के लोग उसके नाम की दुहाई देने लगे "अरे इतना अमीर जैसे कि वह व्यापारी।"

पर अफसोस व्यापारी का दामाद इस सबसे सन्तुष्ट नहीं था। वह अभी भी अपने देश जा कर अपने पिता से मिलना चाहता था। एक दिन उसने ऐसा व्यापारी से कहा भी।

व्यापारी तो यह सुन कर बहुत दुखी हुआ और रो कर उसने उससे प्रार्थना की कि वह वहाँ से कहीं न जाये वहीं रहे। पर सब बेकार उसका दामाद मान कर ही नहीं दिया।

राजकुमार ने यह बात अपनी पत्नी को बतायी और उससे कहा कि वह वहीं रहे। वह जा कर जल्दी ही वापस आ जायेगा और फिर वे हमेशा खुशी खुशी साथ साथ रहेंगे पर उसकी पत्नी नहीं मानी। उसने कहा कि वह अपने पति से अलग नहीं रह सकती वह भी उसके साथ जायेगी।

सो एक जहाज़ में उन दोनों के लिये जगह बुक की गयी और वे दोनों राजकुमार के देश के लिये रवाना हुए। भगवान की दया कुछ ऐसी हुई कि यह जहाज़ भी रास्ते में टूट गया।

इसमें सवार सारे यात्री और जहाज़ चलाने वाले सभी डूब गये सिवाय राजकुमार और उसकी पत्नी के। और वे भी जहाज़ के टूटे तख्तों पर पानी पार कर के अलग अलग किनारों पर जा कर लग गये।

यह भी एक इत्तफाक की बात थी कि राजकुमार की यह पत्नी भी उसी किनारे पर जा कर लगी जहाँ राजकुमार की पहली दोनों

पत्नियाँ लगी थीं। वे अपनी बुरी किस्मत पर बैठी चुपचाप रोती रहती थीं।

यह तीसरी पत्नी भी उसी बागीचे में पहुँची और उनके पास जा कर बैठ गयी और लो जैसे ही यह बागीचे में घुसी सारी कलियाँ खिल गयीं और पेड़ों की शाखें बढ़ बढ़ कर चारों तरफ फैलने लगीं और उन पर पत्तियाँ आ गयीं जिससे उस बागीचे की तो शक्ल ही बदल गयी।

वह बागीचा अब देखने में बहुत अच्छा लगने लगा। उसमें खुशबू फैल गयी और अब उसमें लोगों का जाने के लिये जी चाहने लगा।

जब माली अगले दिन वह बागीचा देखने आया तो उसको देख कर तो वह भौंचक रह गया। वह अपनी आँखों पर मुश्किल से विश्वास कर सका कि वह बागीचा इतना सुन्दर हो सकता था। अल्लाह ने उसके बागीचे को आशीर्वाद देने के लिये इतना समय लिया।

उसने अपने नीचे काम करने वालों को उस दिन की छुट्टी दी और राजा को इस बात की खबर देने के लिये महल दौड़ा गया। राजा भी यह सुन कर बहुत खुश हुआ और फिर से उसको बहुत सारी भेंटें दीं।

पहले की तरह माली एक बार फिर बागीचा देखने के लिये बागीचे में लौटा तो उसको एक तीसरी स्त्री वहाँ रोती हुई मिली।

उसने उससे भी बात करने की कोशिश की पर वह भी रोती रही कुछ बोली नहीं।

तब उसको लगा कि शायद यही स्त्री इस बागीचे को इतना अच्छा बनाने की वजह रही होगी। यह एक और पवित्र स्त्री यहाँ आ गयी है जिसकी वजह से अल्लाह की मेहरबानी इस बागीचे के ऊपर हुई है। वह फिर राजा को इस बात की खबर करने गया।

इस बार राजा ने उससे कहा कि इस बार वह उससे कोई सवाल कर के उसे परेशान न करे और दूसरी दोनों स्त्रियों की तरह से इसको भी महल की तरफ से खाना कपड़ा और शरण दे।

राजकुमार अबकी बार एक ऐसे अजीब से टापू पर जा कर लगा था जिस पर कोई रहता नहीं था। वह बहुत थक गया था सो वह वहाँ जा कर सो गया। जब वह सो कर उठा तो उसने टापू पर घूम कर उसको देखना शुरू किया।

कुछ देर में ही वह एक बड़े से जंगल में पहुँच गया जहाँ पहुँच कर वह फिर सुस्ताने बैठ गया और अपनी किस्मत को रोने लगा। वह बोला — "मैंने ऐसा क्या किया है जिसकी वजह से अल्लाह मुझे इतनी तकलीफें दे रहा है। उसने मेरी ज़िन्दगी को इतना दुखी क्यों बना रखा है कि मेरा मरने को जी चाहता है। क्या मैंने शादी कर के कोई पाप किया है।"

अब इस जंगल में कोई भी जीव तो रहता नहीं था न तो कोई आदमी और न ही कोई जंगली जानवर। सो कुछ समय बाद ही

उसकी ज़िन्दगी वहाँ दूभर हो गयी। अब राजकुमार अक्सर लेटा रहने लगा और मरने की इच्छा करने लगा।

आखिर एक दिन वह जंगल में घूम रहा था कि वह एक गुफा के पास आ निकला। उस गुफा के पास एक स्त्री बैठी हुई थी। यह उसको एक अजीब सी बात लगी क्योंकि वहाँ तो कोई जीव रहता नहीं था। उसने सोचा कि या तो वह शायद कोई देवी होगी या कोई पवित्र स्त्री होगी।

वह उसके पास तक चला गया तो उस स्त्री ने उसे देखा और रोने लगी। राजकुमार ने उससे पूछा कि वह उसे देख कर क्यों रोयी। उसने कहा मैं तो तुम्हें तसल्ली देने आया हूँ तुम्हें परेशान करने नहीं। मैं तो खुद ही बहुत सारी परेशानियों से गुजरा हूँ तब यहाँ तक पहुँचा हूँ।

यह सुन कर स्त्री ने अपने आँसू पोंछ दिये और मुस्कुरा कर उसे अपने पास बैठने के लिये कहा। उसने राजकुमार को बहुत बढ़िया खाना खाने के लिये और बहुत मीठा कुछ पीने के लिये दिया।

उसके बाद उसने राजकुमार से पूछा कि वह वहाँ कैसे आया क्योंकि यह घर तो एक बहुत बड़े राक्षस का था जो आदमी और स्त्रियों को झट से ऐसे खा जाता था जैसे कि राजकुमार अपना खाना खा रहा था।

इसी लिये वह वहाँ गुफा के पास आने तक कोई भी जीव नहीं देख सका था। बड़े अफसोस की बात है कि इस राक्षस ने सबको खा लिया था।

वह आगे बोली – "जहाँ तक मेरा सवाल है मैं एक राजा की बेटी हूँ। यह राक्षस मुझे उठा कर यहाँ ले आया था। इसने पहले तो मुझे खाना चाहा पर फिर अपना दिल बदल दिया जब इसने यह देखा कि मैं इसकी एक अच्छी साथी साबित होऊँगी। सो इसने मुझे अपनी पत्नी बना लिया। अच्छा होता अगर इसने मुझे मार दिया होता। इस समय यह कहीं बाहर गया हुआ है और अब शाम को ही वापस लौटेगा।"

इतना कह कर वह फिर ज़ोर ज़ोर से रो पड़ी। बड़ी मुश्किल से राजकुमार ने उसको तसल्ली दी और भले दिनों की उम्मीद दिलायी।

वह लड़की फिर बोली – "पर तुम भी तो मुझे अपने बारे में कुछ बताओ। तुम कौन हो कहाँ से आये हो कब आये। और मुझे यह सब जल्दी से बताओ ताकि मैं तुम्हें उस राक्षस से छिपा सकूँ। क्योंकि अगर उसको तुम्हारी झलक भी मिल गयी तो उसकी भूख जाग जायेगी और वह तुम्हें खा जायेगा।

अगर तुम्हारे पास बहुत सारे आदमियों की ताकत होती और तुम चिड़िया की तरह से उड़ कर भाग पाते तो भी उस ताकतवर से तुम बच नहीं सकते थे जो एक साल का रास्ता एक दिन में ही पूरा कर लेता है।"

सो राजकुमार ने उसको जल्दी से अपने बारे में सब कुछ बता दिया —

मेरी बेरहम किस्मत ने मुझे घर छोड़ने पर मजबूर किया
अपने घर से दूर विदेश में घूमता रहा
जहॉ मैं बहुत अक्लमन्द और बड़ा आदमी बन गया
और राज्य में नम्बर दो का आदमी बन गया
कुछ समय बाद मेरा दिल रोने लगा अपने घर वापस लौटने को
अपने घर को देखने के लिये और लोगों को अपने बारे में बताने के लिये

पर अल्लाह की मरजी मेरी मरजी से कुछ दूसरी थी
तीन बार मैं मरे जैसा हो गया तीन बार मैं अलग अलग जमीन पर पहुॅचा
बीमार और अकेला दुखी और रोता हुआ
फिर भी अल्लाह की मेहरबानी है कि वह मुझे तुम्हारे पास ले आया
यहॉ मैं तुम्हारे साथ रहूॅगा और अब यहीं रहूॅगा

वह स्त्री राजी हो गयी और तुरन्त ही उसने उसको गुफा में अपने पीछे पीछे आने के लिये कहा जहॉ वह उसको छिपा देती। उसने उसे एक मजबूत बक्से में बन्द किया जो उस गुफा के एक बहुत अन्दर की तरफ के कोने में रखा हुआ था। फिर उसने अल्लाह की एक प्रार्थना पढ़ कर उसे बन्द कर दिया ताकि अल्लाह उसकी हिफाजत करे।

शाम को राक्षस लौटा और थका होने की वजह से अपना बड़ा शरीर जमीन पर फैला कर आराम से लेट गया। उस स्त्री ने एक बड़ी सी लोहे की सलाई ली और उससे उसके दॉत साफ करने लगी

जिनमें हड्डियाँ और माँस लगा हुआ था। फिर उसने उसकी बाँहें और टाँगें धोयीं।

किस्मत की बात थी कि राक्षस उस दिन कुछ अच्छे मूड में था। स्त्री ने सोचा कि अल्लाह का लाख लाख शुक्र है कि आज की रात राजकुमार बच जायेगा। पर अफसोस कि उसकी इस उम्मीद पर जल्दी ही पानी फिर गया। राक्षस की सूँघने की ताकत ने उसको यह बता दिया कि पास में वहीं कहीं कोई आदमी छिपा है।

उसने कहा "यहाँ कहीं कोई आदमी छिपा है क्या। मुझे जल्दी से बताओ और उसे मुझे दिखाओ।"

स्त्री बोली — "तुम बेकार की बात कर रहे हो। यहाँ कौन आदमी हो सकता है।"

पर राक्षस ने तो तय कर लिया था सो वह बोला — "ओ स्त्री मेरी नाक मुझे कभी धोखा नहीं दे सकती। देर मत करो जल्दी उसे देखो कहाँ है वह।"

पर राजकुमारी डरी नहीं वह बोली — "मेरे पास ऐसी कौन सी ताकत है जिससे मैं कोई आदमी बना सकूँ। अगर तुम्हें मेरा विश्वास न हो तो तुम खुद ढूँढ लो। मैं यहाँ सारा दिन अकेली बैठी रहती हूँ मैंने तो यहाँ कोई जीव नहीं देखा।"

राजकुमारी के ऐसे जवाबों से राक्षस बहुत गुस्सा हो गया उसने बड़े गुस्से में भर कर अपनी आँखें घुमाते हुए उसकी तरफ देखा और बोला — "तुम मेरी बात सुनो यहाँ इस जगह में कोई आदमी है

जब तक मैं उसे देख न लूँ मैं तुम्हारा विश्वास नहीं कर सकता। बस दो मिनट और फिर मैं तुम्हें मार डालूँगा। यह मैं उतने ही यकीन के साथ कह रहा हूँ जितने यकीन के साथ तुम झूठ बोल रही हो।”

उसके इस तरह से बोलने और देखने से राजकुमारी डर गयी पीली पड़ गयी और कॉपने लगी। कॉपते हुए उसने उससे पूछा कि क्या उस दिन उसे ठीक से खाना नहीं मिला जो उसको उस दिन एक आदमी खाने के लिये चाहिये था।

इस पर राक्षस बोला कि वह भूखा नहीं था पर उसको इस बात का यकीन था कि उस दिन गुफा में कोई आदमी था और वह जब तक यह न देख ले कि वह था कि नहीं उसे चैन नहीं मिल सकता था।

तब पीली पड़ी हुई और कॉपती हुई राजकुमारी ने उससे कहा हालॉकि उसके मुँह से बोली नहीं निकल पा रही थी कि शायद कोई आदमी वहॉ हो सकता था। अब क्योंकि राक्षस को अपने ऊपर इतना विश्वास था तो उसको उसे गुफा के हर कोने में देखना पड़ा। आखिर में काफी चीज़ों को इधर उधर करने के बाद भी उसे कोई आदमी नहीं मिला।

राक्षस इस सारे समय बैठा इन्तजार करता रहा। कभी डकार लेता रहा तो कभी खॉसता रहा। उसकी इन आवाजों से सारी गुफा हिलती रही कॉपती रही। कि तभी गुफा के एक कोने में रखे बक्से में से एक आदमी निकल आया।

उसे देखते ही राक्षस बोल पड़ा — “आहा मुझे पता था कि यहाँ कोई न कोई आदमी जरूर है।”

राजकुमार उसके पास आया तो उसको हुक्म मिला कि वह उसे सब बातें खोल कर बताये। राजकुमार ने बिना किसी डर के और बिना किसी हिचक के उसको अपना सारा हाल बता दिया। राक्षस उसकी इस निडरता पर बहुत खुश हुआ।

राक्षस की इस खुशी को देख कर राजकुमारी ने भी उसको सब सच सच बता दिया कि कैसे राजकुमार का जहाज़ टूट गया था और वह बहते बहते यहाँ इस टापू पर आ पहुँचा था। और किस तरह से उसने उस पर दया करके उसे गुफा में रहने के लिये कहा था।

उसके बाद उसने राक्षस से उसकी जान बख्शने और वहाँ रहने की इजाज़त देने की प्रार्थना की। उसने कहा कि जब राक्षस वहाँ से चला जाता था तो वह कितना अकेलापन महसूस करती थी। इसके अलावा यह आदमी बहुत होशियार और चतुर था सो वह राक्षस की वफादारी से सहायता भी करेगा।

राक्षस इस बात पर राजी हो गया। उसने कहा कि दोनों में से किसी को अब डरने की जरूरत नहीं है। वह अब राजकुमार जैसे पतले से ढाँचे को खाने के लिये कभी भी लालायित नहीं होगा।

यह सुन कर राजकुमार राक्षस के थोड़ा और पास खिसक कर बैठ गया और वह भी उस स्त्री के साथ उसके हाथ पैर मलने लगा। यह देख कर राक्षस उससे और ज़्यादा खुश हो गया।

इस तरह राजकुमार वहीं गुफा में रहने लगा। धीरे धीरे वह राजकुमारी को चाहने लगा। दिन खुशी खुशी गुजरने लगे। रोज सुबह राक्षस अपने शिकार के लिये बाहर चला जाता और राजकुमार और राजकुमारी को अकेला छोड़ जाता। हर शाम वह वापस आता तो वे दोनों उसकी सेवा करते।

अक्सर वह उनके लिये कोई फल ले कर आता या फिर कोई रत्न ले कर आता जो भी वे उससे लाने के लिये कहते। फिर भी उनके दिल में एक डर बना रहता कि कहीं राक्षस उनको मार न डाले सो वे हमेशा कोई ऐसा प्लान सोचते रहते जिससे वे उसकी पकड़ से छूट जायें।

उनको यह तो पक्का विश्वास था कि वे उससे ताकत में नहीं जीत सकते इसलिये अगर उनको उसे जीतना है तो उसकी ज़िन्दगी का भेद जानना होगा कि उसकी ज़िन्दगी किसमें रहती है। सो उन्होंने यह निश्चय किया कि अगर हो सका तो वे इस बात का पता लगायेंगे।

एक शाम जब वे राक्षस के दॉत साफ कर रहे थे हाथ पैर धो रहे थे तो राजकुमारी उसके पास बैठ गयी और अचानक रोने लगी।

राक्षस बोला — "मेरी प्यारी तुम क्यों रोती हो। अपना दुख मुझे बताओ। मैं तुम्हारा दुख दूर करने की पूरी कोशिश करूँगा।"

राजकुमारी बोली — "मैं हर बात तुम्हें नहीं बता सकती पर कभी कभी मुझे डर लगता है कि अगर तुम्हें किसी ने मार दिया तो

हम लोग इस अकेली गुफा में बिना किसी दोस्त के अकेले रह जायेंगे। फिर हमको भूखा मरना पड़ेगा। कौन हमें खाना ला कर देगा।

इसके अलावा तुम हमारे साथ इतने अच्छे हो कि तुमने हमारे भंडार हमारी पसन्द की चीज़ों से भर रखे हैं। तुम हमारी हर इच्छा पूरी करते हो। हमारे तुम्हारे दिल एक हैं। अगर तुम मारे गये तो हम कैसे रहेंगे और क्या करेंगे।"

राक्षस यह सुन कर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और काफी देर तक हॅसता रहा। फिर बोला कि वह कभी नहीं मरेगा। दुनियॉ की कोई ताकत उसका मुकाबला नहीं कर सकती। कोई समय उसको बूढ़ा नहीं कर सकता।

वह हमेशा ताकतवर और जवान रहेगा। क्योंकि जिस चीज़ में उसकी ज़िन्दगी है उसको पाना बहुत मुश्किल है चाहे किसी को उसका पता ही क्यों न चल जाये।

यही जवाब तो वह स्त्री चाहती थी। यह सुन कर उसने मुस्कुरा कर अल्लाह का शुक्र अदा किया कि राक्षस हमेशा सुरक्षित रहे। फिर उसने राक्षस को उसे वह सब बताने के लिये भी प्रार्थना की जिस चीज़ में उसकी जिन्दगी थी।

राक्षस को इस बात पर कोई शक नहीं हुआ तो उसने उसे बताया कि देखो गुफा में एक स्टूल है और पास के एक पेड़ पर शहद की मक्खी का छत्ता लगा है। स्टूल के बारे में उसने बताया

कि स्टूल पर अगर कोई बैठे तो वह जहाँ चाहे वहाँ एकदम जा सकता है।

और मधुमक्खी के छत्ते के बारे में उसने बताया कि अगर कोई उस पेड़ पर चढ़ पाये और उसमें से रानी मधुमक्खी को पकड़ कर मार दे तब वह राक्षस जरूर ही मर जायेगा क्योंकि उस राक्षस की ज़िन्दगी उस छत्ते की रानी मधुमक्खी में है।

पर इस छत्ते की मक्खियाँ इतनी भयानक और इतनी सारी हैं कि किसी का भी इस पेड़ पर चढ़ना बहुत मुश्किल है। इसलिये तुम्हारा मेरे बारे में रोना और सोचना बिल्कुल बेकार है। मैं कभी नहीं मर सकता।

यह सुन कर वह स्त्री खुशी से मुस्कुरायी और राक्षस से बोली कि वह उसकी कितनी कृतज्ञ है कि उसने उसे अब वहाँ रहने के लिये निडर कर दिया। अब वह वहाँ खुशी और शान्ति से रह पायेगी – दिन में खुश और रात को और ज़्यादा खुश।

कितना अच्छा किया कि उसने उसे स्टूल और मधुमक्खी के छत्ते के बारे में भी बता दिया। क्योंकि हालाँकि अब राक्षस की सुरक्षा के बारे में उसे कोई शक नहीं रह गया था पर फिर भी अपनी सुरक्षा के लिये वह उनकी पहरेदारी करती रहेगी क्योंकि राक्षस की जान उसमें थी। फिर कुछ और बातें करके वे सब सो गये।

अगली सुबह राक्षस और दिनों की तरह से घर से बाहर चला गया। दोपहर से पहले पहले राजकुमार और राजकुमारी ने राक्षस

को मारने का प्लान बना लिया था। राजकुमार को यह काम करना था। उसने अपने आपको बहुत सारे कपड़ों से बहुत अच्छी तरह से ढक लिया था।

उसके शरीर का हर हिस्सा अच्छी तरह से ढका हुआ था सिवाय ऑख के। ऑख के लिये भी उसने उस कपड़े में केवल दो छोटे छोटे छेद कर रखे थे जो उसके चेहरे के चारों तरफ लिपटा हुआ था।

इस तरह तैयार हो कर वह स्टूल पर बैठा और उस पेड़ की तरफ उड़ चला जिस पर वह मधुमक्खी का छत्ता लगा हुआ था। वहॉ पहुॅच कर जब उसने एक डंडा उस छत्ते में मारा तो उसे बहुत डर लग रहा था।

उसको लग रहा था जैसे हजारों मक्खियॉ उसके ऊपर हमला बोल देंगी। हालॉकि वह सारा का सारा तो सुरक्षित था बस केवल उसको अपनी ऑखों की चिन्ता करनी थी।

उसका उद्देश्य तो केवल रानी मधुमक्खी को पकड़ कर उसे मारना था और इस तरह वह राक्षस को मार देता। वह इस काम में सफल हो गया। जैसे ही रानी मधुमक्खी मर कर नीचे गिरी राक्षस भी मर कर इतने ज़ोर से नीचे गिर गया कि सारा टापू कॉप उठा। उसे मार कर राजकुमार स्टूल पर बैठ कर अपनी गुफा में आ गया जहॉ राजकुमारी ने उसका खूब खुशी से स्वागत किया।

फिर भी दोनों के दिल में अभी भी डर था कि टापू का यह हिलना कहीं भूचाल ही न हो और राक्षस ने उनसे झूठ बोला हो और वह शाम को वापस लौट आये।

पर जब शाम भी हो गयी और रात भी हो गयी और राक्षस नहीं लौटा तब उनकी जान में जान आयी कि अब उन्हें अपने दुश्मन से छुटकारा मिल गया।

उन्होंने गुफा से जितना खजाना उठाया जा सका उठाया और एक साथ स्टूल पर बैठ कर बहुत दूर चल दिये जहाँ राक्षस का मरा हुआ शरीर शान्त पड़ा था और जिसने वहाँ की बहुत सारी जगह घेर रखी थी।

राक्षस के मारे जाने का यकीन कर के राजकुमार ने स्टूल को कहा कि वह उनको वहाँ ले चले जहाँ उसकी तीनों पत्नियाँ रह रही थीं। स्टूल ने उसका कहना माना और तुरन्त ही उनको राजा के बागीचे के पास ला कर उतार दिया।

राजकुमार तुरन्त ही स्टूल पर से उतरा और राजकुमारी से बोला कि वह अभी लौट कर आता है तब तक वह वहीं रहे। वह वहाँ से अभी ज़्यादा दूर नहीं गया था कि एक जहरीला कीड़ा उसके सामने आ गया और उसने उसे काट लिया।

उसके काटते ही उसको कोढ़ का रोग हो गया। अब वह क्या करे। शर्म की वजह से वह स्टूल के पास भी नहीं जा सकता था।

राजकुमारी कुछ देर तक तो इन्तजार करती रही पर जब उसका धीरज खत्म हो गया तो उसने स्टूल से उसको बागीचे में ले जाने के लिये कहा तो वह स्टूल उसे तुरन्त ही बागीचे में ले आया जहाँ राजकुमार की पहली तीनों पत्नियाँ दुखी और चुपचाप बैठी थीं। वह भी वहाँ जा कर कुछ नहीं बोली बल्कि ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

जैसे ही वह बागीचे के अन्दर घुसी तो फूल बड़ी शान से खिल उठे फूल अपनी पूरी महक से महक उठे और पेड़ों पर इतने सारे फल आ गये कि वे तो उन्हें सँभाल ही नहीं पा रहे थे।

जब माली वहाँ अपना बागीचा देखने के लिये आया तो वह तो ऐसा दृश्य देख कर भौंचक्का रह गया। ऐसे दृश्य की तो उसने कभी आशा भी नहीं की थी। आखिर फूल पूरी तरह से फूल गये थे और पेड़ फलों से नीचे झुके जा रहे थे।

वह तुरन्त ही राजा को इस बात की खबर देने गया। जब वह वहाँ से जा रहा था तो उसने एक और स्त्री को वहाँ बैठे हुए और रोते हुए देखा। उसने उससे पूछा कि वह कौन है कहाँ से आयी है पर उसके मुँह से भी एक शब्द भी नहीं निकला। वह भी बस वह रोती ही रही।

उसने राजा से जा कर कहा — "राजा साहब देखिये अब एक चौथी स्त्री आयी है और अब आपका बागीचा पूरा हो गया है। राजा साहब खुद अपनी आँखों से यह दृश्य देखने की कृपा करें।"

राजा तो यह सुन कर बहुत ख़ुश हो गया और तुरन्त ही यह दृश्य देखने के लिये बागीचे में आ गया। वहाँ पहुँच कर उसने भी चार स्त्रियाँ देखीं। उसने उन चारों से सवाल किये पर उनमें से किसी एक ने भी उसके किसी सवाल का जवाब नहीं दिया। राजा अपना बागीचा देख कर अपने महल चला गया।

वहाँ जा कर उसने अपनी रानी को उन अजीब मेहमानों के बारे में बताया और उससे कहा कि अगले दिन वह उनसे मिल कर आये। हो सकता है कि वे स्त्री होने के नाते एक स्त्री से बात कर सकें।

अगले दिन रानी उनके पास गयी और उन चारों से बड़ी कोमलता से बोली पर उनमें से एक ने भी उसकी किसी भी बात का जवाब नहीं दिया। बल्कि उसे ऐसा लगा जैसे उसकी बातों ने उनको और ज़्यादा रुला दिया हो।

यह देख कर रानी बहुत नाउम्मीद हुई और यह सोच ही नहीं पायी कि वह उनके बारे में क्या सोचे। वह बोली — "जरूर ही ये कोई पवित्र स्त्रियाँ हैं नहीं तो ये उसका बागीचा कैसे हरा भरा करतीं।

या तो किसी राक्षस ने इनको धोखा दिया है या फिर इनका कोई प्यारा मर गया है। यह इनके किसी पाप की वजह से नहीं है जो ये इस तरह इतना रो रही हैं।

यह भी हो सकता है कि अगर राजा ने किसी पवित्र आदमी को इनके पास भेजा होता तो उसमें इनको पवित्र आत्मा दिखायी दी होती और ये उससे बात कर पातीं।"

रानी ने राजा को यह बात जा कर बतायी तो राजा राजी हो गया और उसने एक पवित्र आदमी को उनसे बात करने के लिये उनके पास भेज दिया। पर वह भी वापस आ गया। आ कर उसने बताया कि वह भी उनको बुलवाने में नाकामयाब रहा।

तब राजा ने मुनादी पिटवा दी कि जो कोई उन स्त्रियों को बुलवा देगा वह उसको बहुत बड़ा इनाम और इज़्ज़त देगा।

राजकुमार ने भी जिसको कोढ़ हो गया था और जिसकी तरफ देखने में भी खराब लगता था राजा की यह मुनादी सुनी। रास्ता चलते एक आदमी से उसने पूछा — "क्या यह सच है जो राजा ने कहलवाया है? मैं उन चारों स्त्रियों से बातचीत कर सकता हूँ।"

यह बात राजा को जा कर बतायी गयी तो राजा अपने बहुत सारे दरबारियों और नौकरों से घिरा वहाँ आया और उस कोढ़ी की बात पर आश्चर्य प्रगट करने लगा। अब उसको अल्लाह के दिमाग का तो पता नहीं था कि उसके दिमाग में क्या था सो वह उसको ले कर उन चारों स्त्रियों के पास आया।

राजकुमार ने उन चारों स्त्रियों को पहचान लिया। वे चारों उसकी पत्नियाँ थीं।

वह कोढ़ी पहली स्त्री के पास जा कर बैठा और उससे कहा — "एक बार की बात है कि एक बहुत बड़े राजा के चार अक्लमन्द और होशियार बेटे थे। एक दिन राजा ने अपने इन चारों बेटों को अपने पास बुलाया और उन सबसे अलग अलग पूछा कि किसकी किस्मत से राजा इतने बड़े राज्य पर राज करता था और उसका राज्य खुशहाल हुआ था।

उसके तीन बड़े बेटों ने कहा — "आप अपनी किस्मत से इतने बड़े राजा हैं और इतना खुशहाल आपका राज्य है।"

पर उसके सबसे छोटे बेटे ने कहा — "राजा साहब आप मेरी किस्मत से इतने बड़े राजा हैं और इतने खुशहाल राज्य के ऊपर राज करते हैं।" यह सुन कर राजा बहुत गुस्सा हो गया और उसने उसे अपने राज्य से बाहर निकाल दिया।

वह लड़का अपनी पत्नी और कुछ और जरूरी सामान ले कर वहाँ से चला गया। कुछ हफ्ते जंगल में रहने के बाद घूमते घामते वे समुद्र के किनारे आ पहुँचे। वे पानी में रहना चाहते थे सो उन्होंने एक व्यापारी से बात की जिसने उनको दया कर के अपने जहाज़ पर बिना कुछ पैसे लिये चढ़ा लिया।

कुछ समय तक सब ठीक चलता रहा कि एक रात जहाज़ भयानक तूफान में फँस गया। उस तूफान में सब लोग डूब गये सिवाय राजकुमार और उसकी पत्नी के। ये लोग जहाज़ के टूटे हुए तख्तों के सहारे तैर कर बचे थे पर दोनों अलग अलग दिशा में चले

गये – राजकुमार एक देश चला गया और राजकुमारी किसी दूसरे देश।"

कई साल के बाद उस स्त्री ने अपना सिर उठाया और जब कोढ़ी ने उससे पूछा कि वह उसको क्या इनाम देगी अगर वह उसके पति राजकुमार को वहाँ उसके पास ला दे। स्त्री तुरन्त बोली — "तुम जो चाहे माँग लो वह तुमको मिल जायेगा।"

जब राजा और उसके साथियों ने उस स्त्री को बोलते सुना तो वह तो बहुत खुश हो गया साथ में आश्चर्यचकित भी रह गया। उसी समय अल्लाह की मेहरबानी से एक बिल्ली जो कोढ़ी से बच कर जा रही थी वहाँ रुक गयी।

तब राजकुमार दूसरी स्त्री के पास गया और उससे बोला — "फलाँ फलाँ देश में एक माली रहता था। इत्तफाक से उसके घर में किसी दूर देश से एक भिखारी राजकुमार आया। यह राजकुमार उस माली के घर में उसका नौकर बन कर रहने लगा पर वह माली का बहुत अच्छा सहायक साबित हुआ। और क्योंकि वह एक भला और कुलीन आदमी था जल्दी ही वह माली का दामाद बन गया।

एक दिन उस देश के राजा की बेटी ने उसे देख लिया। हालाँकि उसे यह नहीं मालूम था कि वह एक राजकुमार है उसने अपनी माँ से प्रार्थना की कि वह उसकी शादी उस माली के नौकर से करा दें।

राजा ने उस आदमी की पूरी जॉच की और पाया कि वह तो एक कुलीन खानदान से आता था और एक बहुत ही बड़ा और चतुर आदमी था। सो उसने अपनी बेटी की बात मान ली और शादी की ज़ोरदार तैयारियॉ शुरू कर दीं।

शादी हो गयी। बड़ी धूमधाम से शादी हुई। नया राजकुमार जल्दी ही आगे बढ़ने लगा और राजा और जनता में लोकप्रिय हो गया। केवल उसके साले और राजकुमारी की दूसरी बहिनों के पति उससे जलने लगे।

आखिर वह उनकी जलन से तंग आ गया और उसने अपने देश जाने का विचार किया। उसने अपनी पत्नी को साथ लिया और एक जहाज़ में बैठ कर अपने देश चल दिया।

अफसोस कि जहाज़ एक भारी तूफान में फॅस कर टूट गया और उस जहाज़ पर जितने भी लोग थे वे सब मारे गये सिवाय राजकुमार और राजकुमारी के। वे दोनों टूटे हुए जहाज़ के तख्तों के सहारे तैर कर किनारे लग गये – एक एक देश के किनारे पर दूसरा दूसरे देश के किनारे पर।"

कई सालों में पहली बार इस दूसरी स्त्री ने अपना सिर उठाया तो कोढ़ी ने उससे पूछा — "तुम उसे क्या इनाम दोगी जो तुम्हारे सामने तुम्हारे राजकुमार को ला दे।"

वह स्त्री भी तुरन्त बोली — "जो तुम्हारी इच्छा हो मॉग लो मैं तुम्हें वही दे दूॅगी।"

राजा और उसके साथियों ने जब उसका खुश खुश चेहरा देखा और उसके हिलते हुए होंठ देखे तो उन सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसी समय उस कोढ़ी के कोढ़ वाले घाव भरने लगे और ऐसा लगने लगा जैसे कि वे जल्दी ही ठीक हो जायेंगे।

फिर वह कोढ़ी राजकुमार तीसरी स्त्री के पास गया और उससे प्रार्थना की वह उसकी कहानी सुन ले। वह बोला — "एक बहुत दूर देश के एक शहर में एक व्यापारी रहता था। उसने एक यात्री को अपनी दूकान के पास बहुत खराब हालत में खड़ा देखा तो उसे उस पर दया आ गयी। उसने उसको अपने यहाँ नौकर रख लिया।

बाद में उसने देखा कि वह तो बहुत अक्लमन्द और अच्छा है और उससे उसका बिजनैस भी बढ़ रहा था तो उसने उसे अपना दामाद बना लिया। कुछ समय बाद उस दामाद ने अपने देश जाने की इच्छा प्रगट की तो उसने अपनी पत्नी के साथ वह देश छोड़ कर और जल्दी ही वापस आने का वायदा करके जहाज़ में बैठ कर अपने देश के लिये रवाना हो गया।

पर अफसोस एक भारी तूफान आ जाने की वजह से वह जहाज़ उस तूफान में फँस गया और उस पर जा रहे सब यात्री समुद्र में डूब गये सिवाय राजकुमार और उसकी पत्नी के। वे दोनों टूटे हुए जहाज़ के तख्तों के सहारे तैर कर किनारे लग गये – एक एक देश में दूसरा दूसरे देश में।"

जब उस स्त्री ने उसकी यह कहानी सुनी तो उसने भी अपना सिर उठाया और जब उसे बाद में पता चला कि राजकुमार ज़िन्दा है और वहीं पास में है तो उसने उस कोढ़ी से प्रार्थना की कि वह उसे दिखा दे। वह उसको बहुत बड़ा इनाम देगी।

जब राजा और उसके साथियों ने तीसरी स्त्री का खुश खुश चेहरा देखा और देखा कि वह भी बोल पड़ी वे सब बहुत आश्चर्य में पड़ गये। उसी समय उस कोढ़ी के कोढ़ के रहे सहे घाव भी भर गये और ऐसा लगने लगा जैसे कि वे जल्दी ही गायब भी हो जायेंगे।

इसके बाद वह कोढ़ी चौथी स्त्री के पास गया और उसको अपनी कहानी सुनायी — "एक जंगल में एक राक्षस रहता था जिसने एक बहुत सुन्दर राजकुमारी को पकड़ रखा था और उसे उसने अपनी सेवा और आनन्द के लिये रखा हुआ था।

इत्तफाक से एक दिन वहाँ एक आदमी आया और उस गुफा के पास आया जहाँ यह राजकुमारी बैठी हुई थी। वहाँ बैठी बैठी वह अपनी किस्मत को रो रही थी। उसने राजकुमारी से पूछा कि वह क्यों रो रही है तो राजकुमारी ने उसे वह सब बताया जो कुछ उसके साथ हुआ था।

दोनों चतुर थे दोनों सुन्दर थे सो दोनों में जल्दी ही प्यार हो गया। शाम तक जब तक वह राक्षस घर लौट कर आता उस राजकुमारी ने उस आदमी को एक बक्से में छिपा दिया। खैर राक्षस

ने उसे ढूँढ तो लिया पर खाया नहीं क्योंकि वह उसको बहुत पीला सा और कमजोर सा दिखायी दिया। उसने उसे अपना नौकर रख लिया।

धीरे धीरे राजकुमारी ने राक्षस की ज़िन्दगी का भेद जान लिया और राजकुमार ने उसे मार दिया। उसके बाद राजकुमार और राजकुमारी दोनों उस राक्षस के जादुई स्टूल पर बैठ कर वहाँ से भाग लिये और वहाँ उसी के पास आ कर रुक गये जहाँ वे अभी थे।

उसके बाद राजकुमार चला गया और फिर वापस नहीं आया क्योंकि राजकुमार को एक बुरा कोढ़ लग गया था जिसकी वजह से उसकी शक्ल ही बदल गयी। और जब राजकुमारी बाहर आयी तो उसकी शक्ल बदलने की वजह से वह उसको पहचान ही नहीं सकी बल्कि इस बागीचे में आ गयी और रो पड़ी।"

यह कहानी सुन कर तो लो वह स्त्री तो चुप हो गयी और उसने अपना सिर उठा कर देखा तो उसका खोया हुआ पति खड़ा था। अब उसके शरीर पर कोढ़ का कोई निशान बाकी नहीं बचा था और वह उसका पहले वाला सुन्दर कुलीन दिखायी देने वाला राजकुमार खड़ा था।

वह उसके गले लग गयी। फिर वे राजकुमार की तीसरी पत्नी व्यापारी की बेटी के पास गये। उसने भी राजकुमार को पहचान लिया और गले लगा लिया। इसी तरह से वे दूसरी और पहली पत्नी के पास गये वहाँ भी उन्होंने उसको पहचान लिया और अपने गले

लगाया। ओह कितना प्यारा दृश्य था सबके मिलने का जो कि किसी ने सोचा भी नहीं था।

जब राजा और उनके साथियों ने यह सब देखा तो उनका आश्चर्य तो कई गुना बढ़ गया क्योंकि यह आदमी तो न केवल वह आदमी था जिसने उनकी आवाज वापस लायी थी बल्कि उन चारों का पति भी था।

राजा ने अब उसके पास आ कर पूछा तुम कौन हो। तुम मुझे अपनी पूरी कहानी बताओ कि तुम्हारे साथ कैसे कैसे क्या क्या हुआ। तब राजकुमार ने राजा को सारी कहानी बतायी कि कैसे उसने घर छोड़ा कैसे उसने चार लड़कियों से शादी की और कैसे वे चारों वहाँ आ कर इकट्ठी हुईं।

राजा इस कहानी से बहुत प्रभावित हुआ उसने राजकुमार और उसकी चारों पत्नियों को अपने महल में रहने के लिये कहा। जो चीज़ भी उनको चाहिये थी वह उनको दी गयी। राजकुमार को उस राजा का इतना प्यार मिला कि राजा ने उसे हमेशा के लिये वहाँ रख लिया और अपने बाद उसका राज्य सँभालने का वायदा लिया।

राजा को जब बहुत खुशी हुई जब राजकुमार उसके साथ रोज दरबार में आने लगा। नये नये प्लान बने पुरानों में बदल की गयी और वह राज्य कुछ ही समय में बहुत खुशहाल बन गया।

राजा को यह राजकुमार इतना अच्छा लगा कि उसने अपनी एकलौती बेटी की उससे शादी करने की सोची। रानी राजकुमार

और दूसरे सभी लोगों ने राजा की बात मानी और फिर राजकुमार की शादी बहुत धूमधाम से मनायी गयी। इस तरह सब कुछ खुशी खुशी चलता रहा।

पर राजकुमार अभी भी सन्तुष्ट नहीं था। उसको अपने देश के बारे में और अपने पिता के बारे में जानने की बहुत इच्छा थी। सो यह जानने के लिये बहुत सारे दूत इधर उधर भेजे गये। काफी समय बाद उन्होंने लौट कर बताया कि राजकुमार के पिता के देश पर विदेशियों ने कब्जा कर लिया और राजा और सारे शाही परिवार को उन्होंने बन्दी बना लिया।

राजकुमार को जब यह पता चला तो उसका दिल रो पड़ा कि उसने इनके बारे में पहले पता क्यों नहीं लगवाया। उसने इन विदेशियों से लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी। ऐसा करने के लिये उसने अपने सभी शाही ससुरों की सहायता ली। पैसा और सेना उसको जितने चाहिये थे दे दिये गये।

आखिर वह प्रार्थना करने के बाद और अपने शाही ससुरों की शुभकामनाओं के साथ विदेशियों पर हमला करने चल दिया। यात्रा लम्बी और मुश्किल थी पर फिर भी राजकुमार और उसकी सेना वहॉ सुरक्षित पहुॅच गयी और तुरन्त ही वहॉ के राजा पर हमला बोल दिया।

वे लोग कई दिनों तक लड़ते रहे। दोनों की सेना में बहुत खून खराबा हुआ पर आखीर में राजकुमार जीत गया। उसने तुरन्त ही

अपने पिता और भाइयों को आजाद किया पर उन्होंने उसको पहचाना नहीं जब तक कि उसने उनको बताया नहीं कि वह उनका देश निकाला दिया जाने वाला चौथा बेटा था।

वह बोला — "राजा मेरे पिता ने मुझे देश निकाला इसलिये दे दिया था क्योंकि मैंने यह कहा था कि वह मेरी किस्मत से राज कर रहे थे। क्या वह सच नहीं था।

जैसे ही मैंने आपका राज्य छोड़ा मैंने सुना था कि वह आपसे छिन गया और आप सब जेल में डाल दिये गये। और अब जब मैं आपके पास लौट आया हूँ तो देखिये कि आप आजाद हैं और फिर से एक बड़े और ताकतवर राज्य के राजा हैं।"

राजा मरी सी आवाज में बोला — "तुम ठीक कहते हो बेटा। हम गलत थे। वह तुम्हारे दिल का घमंड नहीं था बल्कि हमारे दिलों का घमंड था और अल्लाह ने हमें उसकी ठीक ही सजा दी है।"

फिर वे सब अपनी पिछली बातें और परेशानियाँ भुला कर एक दूसरे से गले मिले।

क्योंकि अब राजा बूढ़ा हो रहा था तो उसने सोचा कि इस छोटे राजकुमार को वह अपना राज्य दे देगा और बाकी बेटों को दूसरे ओहदों पर रख देगा। सब लोग इस राजकुमार के बहुत कृतज्ञ थे सो सबने यह एक राय हो कर स्वीकार कर लिया। राजकुमार ने अपने सब ससुरों को यह सन्देश भेज दिया कि वे अब उसके आने की आशा छोड़ दें और उसकी पत्नियों को उसके पास भेज दें।

उसकी पत्नियाँ उसके पास आ गयीं और उसके राज में उसका राज्य खूब फला फूला और शान्ति रही।

58 गगरवाल और उसका नौकर रतन[8]

इस लोक कथा में गगरवाल कारदार[9] और उसके नौकर रतन के कुछ किस्से दिये जाते हैं।

पहला किस्सा

एक बार एक गॉव में एक कारदार रहता था जिसका नाम था गगरवाल। उसका एक नौकर था जिसका नाम था रतन। एक बार यह कारदार किसानों के पास जा रहा था तो इस बेवकूफ को याद आया कि आज तो तनख्वाह मिलने का दिन है। सो वह तुरन्त ही अपना कलमदान और कागज लेने के लिये दौड़ा और अपने नौकर से बोला कि वह अपनी तनख्वाह का हुक्मनामा लिखे।

खैर उसने उससे यह भी कहा कि जब वह जहॉ जा रहा था वहॉ पहुँच जाये और थोड़ा आराम कर ले तब वह लिखे। वे लोग शाम को काफी देर से गॉव पहुँचे। अब हालॉकि गॉव पहुँचने में काफी देर हो चुकी थी फिर भी गगरवाल ने मुकद्दम पटवारी[10] और बाकी सब लोगों को बुला कर उनसे हिसाब लिया।

---

[8] Gagar Wol and His Servant Ratun (Tale No 58)

[9] Kaardaar is the overseer of the village, a Government Officer, whose duty is to collect Maharaja's share of the grain.

[10] Mukaddam is the chief man of the village. Patavari is an official belonging to a village whose business it is to keep an account of the various crops reared by the villagers.

इस बीच रतन को नींद आने लगी। वह बड़ी मुश्किल से अपनी आँखें खोल पा रहा था। क्योंकि उसका एक काम यह भी था कि वह सोने से पहले अपने मालिक की पगड़ी उतार कर सँभाल कर रखे इसलिये वह सोने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था।

आखिरकार जब वह और नहीं सह सका तो वह गगरवाल के पास गया जहाँ वह सब औफीसरों के बीच में बैठा था उसकी पगड़ी उतारी और उसको एक खूँटी पर टाँग दिया।

बजाय इसके कि गगरवाल उससे गुस्सा होता वह हँसा। उसके साथ उसके साथ बैठे दूसरे लोग भी हँस पड़े। यह सब उसके यानी इतने बड़े आदमी के लिये हँसी की बात थी कि वह इतने औफीसरों के बीच नंगे सिर बैठा था।

जब रतन ने अपने मालिक को हँसते देखा तो अपने मन में सोचा "अब ठीक है। अब वह आराम कर रहा है। मैं जा कर अब उससे अपनी तनख्वाह ले आऊँ।" सो वह कागज कलम ले कर उसके पास पहुँचा और उससे अपनी तनख्वाह की रकम भरने के लिये कहा।

दूसरा किस्सा

एक दिन गगरवाल ऐसे ही बैठा हुआ था कि अपने आप ही ज़ोर से हँस पड़ा जैसे कि वह किसी बात को सोच कर बहुत खुश हुआ हो।

रतन ने उसे हॅसते देखा तो पूछा — "आप क्यों हॅस रहे हैं मालिक।"

गगरवाल बोला — "क्योंकि आज मैंने गॉव वालों के हिसाब के कागज काट कर 100 रुपये कमा लिये हैं।" उसका मतलब था कि उसने गॉव वालों के झूठा हिसाब बना कर यह पैसा बना लिया था।

रतन बोला — "हा हा। कितनी आसानी से आपने यह पैसा बना लिया है। जैसे ही मुझे मौका मिलेगा मैं भी ऐसा ही करूँगा।"

यह बात कर के गगरवाल किसी काम से वहॉ से गया तो रतन तुरन्त उठा कैंची उठायी और गगरवाल की हिसाब की किताब काट कर टुकड़े टुकड़े कर डाली। पर उसको तो कहीं कुछ नहीं मिला। यह देख कर उसे बहुत गुस्सा आया।

कुछ ही देर में गगरवाल आ गया तो वह उसके पास गया और बोला — "मालिक आप झूठे हैं। आपने कहा था कि आपने गॉव वालों के हिसाब की किताबें काट कर सौ रुपये बना लिये। देखिये मैंने भी ऐसा ही किया पर मुझे तो उनमें से एक पैसा भी नहीं मिला।"

ऐसा कह कर उसने हिसाब की किताब के जो टुकड़े किये थे वे सब उसके सामने फेंक दिये और कमरे से बाहर चला गया। जब गगरवाल ने देखा कि उसके नौकर ने उसकी गैरहाजिरी में उसकी हिसाब की किताब का क्या किया है तो वह तो बिल्कुल ही पागल

हो गया। क्योंकि उसका तो हिसाब रसीद सभी कुछ उस किताब में लिखा हुआ था।

तीसरा किस्सा

एक दिन गगरवाल किसी दावत में गया। उसमें उसका नौकर रतन भी उसके साथ गया था। जब वे सब खाना खा रहे थे तो एक मेहमान के नौकर ने ज़ोर से कहा ताकि सब कोई सुन ले — "एक बुलबुल एक फूल की डंडी पर बैठ गयी है।"

इससे उसका मतलब था कि एक चावल का दाना उसके मालिक की दाढ़ी पर गिर गया है। उसके मालिक ने उसका यह इशारा समझ लिया और उसको वहाँ से झाड़ दिया। वहाँ बैठे सारे मेहमानों ने उसके बोलने के ढंग की बहुत बड़ाई की और सोचा कि काश ऐसा एक नौकर उनके पास भी होता।

दावत खत्म हो गयी सब लोग उठ कर बाहर चले गये। गगरवाल भी उठ कर बाहर चला गया उसके पीछे पीछे रतन भी वहाँ से चला गया।

बाहर जा कर गगरवाल ने रतन से कहा — "देखो रतन ध्यान रखना जब कोई चावल का दाना मेरी दाढ़ी पर गिरे तो तुम उस नौकर का कहा याद रखना। तुम भी वैसे ही मुझको बता देना।"

रतन ने कहा "ठीक है।"

कुछ दिन बाद गगरवाल फिर एक और दावत में गया। रतन भी उसके साथ गया। वहाँ उस दिन उसने अपने नौकर की वफादारी जाँचने के लिये जानबूझ कर चावल का एक दाना अपनी दाढ़ी पर गिरा लिया।

रतन तुरन्त बोला — "जनाब। जो कुछ आपने मुझसे फलाँ फलाँ के घर के बाहर कहा था वह आपकी दाढ़ी पर है।"

यह सुन कर वहाँ बैठे सारे मेहमान हँस पड़े।

चौथा किस्सा

एक दिन गगरवाल अपने नौकर रतन से बहुत गुस्सा था क्योंकि उसने चावल बहुत बुरा उबाला था। उसने उससे कहा कि अगली बार जब वह चावल उबाले तो उसका पानी निकालने से पहले उसको दिखा दे कि चावल उबला है कि नहीं ताकि वह उसको ठीक से चावल उबालना बता सके।

अगले दिन जैसे रतन रोज आग जलाता था वैसे ही उसने आग जलायी और उसके ऊपर चावल और दूसरी चीज़ें उबलने के लिये रख दीं। गगरवाल उस समय भंडार देखने के लिये खरमन[11] गया हुआ था।

जब चावल तैयार होने को था तो वह अपने मालिक को बुलाने गया। वह सीधा उसके पास नहीं गया जैसे किसी नौकर को जाना

[11] The Government granary in any place.

चाहिये था बल्कि वह कुछ दूरी पर अपने शरीर के निचले हिस्से को एक पेड़ के सहारे टिका कर खड़ा हो गया और गगरवाल की तरफ देख कर उसको बुलाने के लिये अपना सिर हिलाने लगा। गगरवाल ने देखा नहीं सो इस तरह से वह वहॉ तीन घंटे खड़ा रहा।

आखिर गगरवाल ने अपना काम खत्म किया और घर लौटने लगा तब उसने अपने नौकर को एक पेड़ के सहारे बड़ी दयनीय हालत में बैठे देखा। उसने उससे पूछा — "अरे तुम यहॉ क्यों बैठे हो। क्या तुम मेरा खाना नहीं बना रहे।"

रतन बोला — "मालिक आप ही ने तो कहा था कि जब चावल का पानी निकालने लायक हो जाये तो मैं आपको बुला लूॅ। सो जब ऐसा हो गया मैं यहॉ आया और आपको बुलाने के लिये अपना सिर हिलाता रहा। अब तो यह मेरे धड़ से गिरने वाला भी हो रहा है। अफसोस अब तक तो चावल जल कर कोयला हो गया होगा।"

और ऐसा ही हुआ भी। बेचारा गगरवाल।

पॉचवा किस्सा

एक दिन गगरवाल अपने नौकर रतन के साथ एक गॉव देखने गया। गॉव पहॅुच कर उसने वहॉ के सरदार को बुलाया और उससे उसको अपने खाने के लिये दाल देने के लिये कहा। किसान ने अपने मालिक को खुश करने के लिये एक खरवार[12] दाल दे दी।

[12] One Kharwaar is 192 pounds.

तुम क्या सोचते हो कि रतन ने उस दाल का क्या किया होगा? उसने वह दाल ले जा कर सारी की सारी पका दी। वाह क्या दावत के लिये दाल थी वह। उसने तीस से भी ज़्यादा मिट्टी के बड़े बड़े बर्तन भर कर वह दाल पकायी थी।

पर फिर हुआ क्या उस दाल का?

तुम सोच कर बताओ?

59 नीच रानियाँ[13]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके तीन रानियाँ थीं। उनमें से दो रानियों को वह अपनी तीसरी रानी से ज़्यादा प्यार करता था क्योंकि उसकी दो रानियों ने उसको दो बेटियाँ दी थीं जबकि तीसरी रानी के कोई बच्चा नहीं था।

काफी दिनों बाद उसकी तीसरी पत्नी को बच्चे की आशा हुई तो राजा को तो बहुत ख़ुशी हुई पर उसकी दोनों रानियों को डर लगा कि अगर कहीं उसको बेटा हो गया तो राजा उनको कम प्यार करेगा सो उन्होंने दाई से यह समझौता किया कि अगर उस रानी के बेटा हो तो वह उसको वहाँ से हटा दे और उसकी जगह कोई पत्थर या चिड़िया या किसी और जानवर का बच्चा रख दे।

जब रानी के बच्चा होने वाला था तो दाई को बुलवाया गया और उससे यह पूछा गया कि उसको क्या होने वाला था बेटा या बेटी। दाई ने उनको बताया कि न तो उसको बेटा होगा न बेटी बल्कि एक चिड़िया होगी।

उसने साथ में यह भी कहा कि वह यह तो नहीं बता सकती कि ऐसा कैसे होगा पर उसे पूरा यकीन है कि ऐसा ही होगा। यह सुन

[13] Wicked Queens (Tale No 59)

कर रानी बहुत दुखी हुई। उसने दाई से इस बात को छिपा कर रखने की प्रार्थना की ताकि राजा को इस बात को पता न चले।

दाई ने वायदा किया कि अगर कोई उससे कुछ पूछेगा तो वह यह कहेगी कि बच्चा मरा हुआ पैदा हुआ है। सो जब बच्चे के पैदा होने का समय आया तो रानी ने कहा कि केवल दाई ही उसके पास रहेगी।

जैसी कि आशा थी रानी के बेटा हुआ तो दाई ने उसको छिपा दिया और रानी को एक कौए का बच्चा दिखा कर कहा — "देखो मैंने कहा था न। मेरी कही बात सच निकली। पर तुम चिन्ता न करना मैं इसको कहीं छिपा दूॅगी। और कोई इस बात को जान भी नहीं पायेगा।"

ऐसा कह कर उस नीच स्त्री ने बच्चे और कौए को लिया और दूसरी रानियों को दिखाया। वे यह देख कर बहुत खुश हुईं और उसको बहुत बड़ा इनाम देने का वायदा किया।

इधर इन दो रानियों ने उस बच्चे को एक बक्से में रखा और एक नदी में फेंक दिया। उन्होंने सोचा कि वह बक्सा डूब जायेगा और इस तरह यह मामला यहीं खत्म हो जायेगा।

पर इत्तफाक की बात कि यह बक्सा डूबा नहीं। परमेश्वर की कृपा से वह तैरता रहा। एक बूढ़े माली ने उसे बहते देखा तो उसे नदी में से निकाल लिया और खोला तो उसमें एक बच्चे को पाया। उसने उसे निकाल लिया।

बच्चे को देख कर वह बहुत खुश हुआ। उसके अपने कोई बच्चा नहीं था सो वह उसको अपने बच्चे की तरह से पालने लगा। उसने उसके लिये एक धाय रख ली जो उस बच्चे की देखभाल करती थी।

एक साल बीत गया तो राजा की तीसरी पत्नी को फिर से बच्चे की आशा हो गयी। उसकी दोनों सौतों को फिर से यह चिन्ता हुई कि अगर अबकी बार भी उसके बेटा हो गया तो उनका क्या होगा। पहले की तरह से इस बार भी उन्होंने दाई से कह कर माँ को धोखा देने और उसका बच्चा चुराने का इन्तजाम कर लिया।

अब ऐसा हुआ कि इस बार भी रानी को बेटा हुआ पर दाई ने यह बताया कि इस बार भी उसको कौए का बच्चा हुआ है और यह कर वह बच्चे को छिपाने के लिये तुरन्त ही कमरे से बाहर निकल गयी ताकि राजा और शाही परिवार के दूसरे लोगों को उसके बारे में कुछ पता न चले।

वह उस बच्चे को ले कर फिर उन दोनों नीच रानियों के पास गयी और उसे उनको दे दिया। उन दोनों रानियों ने उस बच्चे के साथ भी वही किया जो उन्होंने उसके पहले बच्चे के साथ किया था। पर परमेश्वर की कृपा से वह बक्सा भी नदी में तैर गया और उसी जगह उसी माली को मिल गया जिसको पहला वाला बच्चा मिला था। उसने इस बच्चे को भी अपना बच्चा समझ कर पाल लिया।

एक साल बाद तीसरी रानी को फिर से बच्चे की आशा हुई पर इस बार भी उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। क्योंकि पहले दो बार दोनों रानियाँ अपने बुरे काम में सफल हो चुकी थीं इस बार भी उन्होंने दाई को बहुत पैसा दे कर तीसरी रानी का बच्चा बदलने के लिये कहा।

पर इस बार रानी के जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए थे सो दाई ने उसे बताया कि उसके दो पिल्ले[14] हुए हैं और जल्दी ही उन बच्चों को ले कर कमरे से बाहर चली गयी। इन बच्चों के साथ भी वही किया गया जो पहले दो बच्चों के साथ किया गया था पर परमेश्वर की कृपा से वे दोनों भी उसी माली को मिल गये जिसको पहले दो बच्चे मिले थे।

रानी के दुख की कोई हद नहीं थी। वह तीनों बार नाउम्मीद हुई थी। उसने किसी से मिलना छोड़ दिया। वह खाती पीती भी नहीं थी बस अपने मरने की दुआ माँगती रहती थी।

इस घटना के कुछ दिन बाद एक दिन जब दोनों रानियाँ राजा से बात कर रही थीं तो उन्होंने राजा को बताया कि किस तरह उसकी तीसरी रानी ने अजीब बच्चों को जन्म दिया था। राजा यह सुन कर बहुत दुखी हुआ और उसको बहुत अजीब भी लगा।

उसने तुरन्त ही दाई को बुला भेजा और उससे पूछा कि क्या यह बात ठीक थी। दाई बोली "हाँ हुजूर यह सच है।"

---

[14] Translated for the word "Puppies"

इस पर राजा ने अपनी तीसरी रानी को जितनी जल्दी से जल्दी हो सकता था देश निकाले का हुक्म दे दिया।

ख़ैर वह देश से नहीं निकाली गयी। नौकरों को लगा कि इसमें दूसरी दो रानियों की कुछ चाल है जिनको कि वे समझते थे कि वे उनकी प्यारी रानी से जलती थीं।

इसलिये उन्होंने राजा के दिल में अपनी साख बनाने के लिये राजा से प्रार्थना की कि वह रानी को देश निकाला न दें बल्कि वहाँ से कुछ दूरी पर एक बागीचे में उसके लिये एक घर बनवा दें और उसको वहाँ रख दें। उसको खाने पीने और रहने सहने के लिये काफी पैसा दे दें। राजा उनकी यह बात मान गया और ऐसा ही किया गया।

उधर बच्चे माली की देखरेख में बढ़ते रहे। जब वे बड़े हो गये तब वे स्कूल भी जाने लगे। लड़कों को माली का काम भी सिखाया गया।

एक दिन एक अक्लमन्द बुढ़िया जो बहुत इधर उधर की बातें करती थी एक जगह बात सुनती थी और दूसरी जगह जा कर उसे पैसे ले कर बता देती थी राजा की दोनों रानियों के पास आयी। यह देख कर कि वह एक अक्लमन्द स्त्री है उन्होंने उससे पूछा कि उनके कोई बेटा क्यों नहीं हुआ और उससे प्रार्थना की कि वह किसी पवित्र

आदमी[15] को बुला कर ला दे जो उनकी इच्छा को पूरा होने में सहायता कर दे।

स्त्री बोली कि भगवान की मर्जी को बदला नहीं जा सकता था। जिसको वह चाहता नहीं देता और जिसको वह नहीं चाहता तो नहीं देता।

इसी संदर्भ में उसने उनको एक माली के बारे में बताया जिसको तीन साल में तीन लड़के और एक लड़की नदी में तैरते हुए मिल गये थे। जब दोनों रानियों ने यह सुना तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ।

उन दोनों ने उससे यह जानने की कोशिश की कि उसने उन बच्चों के साथ क्या किया। उसने उनको पढ़ने भेजा या नहीं। वे उसी के घर में रह रहे थे क्या आदि आदि।

बुढ़िया ने उनको सब बता दिया कि वे कितने सुन्दर थे कितने होशियार थे कैसे वे तीनों लड़के उस माली के साथ बागीचे में काम करते थे और कैसे वे तीनों अपनी छोटी बहिन को प्यार करते थे।

दोनों रानियों ने ऐसा दिखाया कि उनको शक था कि तीनों भाई अपनी बहिन को इतना प्यार करते थे कि वे उसके लिये कुछ भी कर सकते थे।

उन्होंने उससे कहा कि वह उनका अपनी बहिन के लिये प्रेम का इम्तिहान ले। वह अपने भाइयों से एक खास चिड़िया लाने के लिये कहे। रानियों ने उससे यह भी कहा कि वह बहुत अच्छी चिड़िया है

[15] Translated for the words “Holy Man”

जो आदमियों की तरह बोलती है और इतना अच्छा गाती है जितना धरती पर कोई नहीं गा सकता। हमें यकीन है कि वह बच्ची उस चिड़िया को बहुत पसन्द करेगी।

फिर उन्होंने उससे कहा कि अगर उसने उनका यह काम कर दिया तो वे उसको बहुत सारा इनाम देंगी। बुढ़िया ने कहा कि वह उनका यह काम जरूर कर देगी और वहाँ से चली गयी।

वहाँ से जा कर उसने लड़की से दोस्ती की। वह बहुत जल्दी ही उसकी दोस्त बन गयी। उसने उसको चिड़िया के बारे में बताया तो वह तो उसके बारे में यह सुन कर कि वह क्या क्या कर सकती है उसको लेने के लिये बहुत उत्सुक हो गयी। अब उसको बिना उसके दिन रात चैन नहीं था।

उसके तीनों भाइयों ने अपनी बहिन को दुखी देखा तो उससे पूछा कि वह क्यों दुखी थी। बच्ची ने उनको उस चिड़िया के बारे में बता दिया। अब क्योंकि सारे लड़के तो अपने बागीचे के काम से एक साथ अनुपस्थित नहीं रह सकते थे सो सबसे पहले सबसे बड़ा भाई उस चिड़िया को लाने के लिये चला।

उसका रास्ता एक जंगल से हो कर जाता था सो जब वह जंगल से गुजर रहा था तो उसको जंगल में एक शिकारी मिला। उसने उस शिकारी से पूछा कि क्या वह उस चिड़िया को जानता था।

शिकारी बोला हॉ वह जानता तो है पर उसके लाने में बहुत खतरा है। उसने उसे यह भी बताया कि बहुत सारे आदमियों ने उसको लाने की कोशिश की है पर वे रास्ते में ही मर गये हैं।

पर लड़के को डराया नहीं जा सकता था। उसने चिड़िया लाने का पक्का इरादा कर रखा था सो उसने उससे उसको लाने के लिये रास्ता पूछा। शिकारी ने उसको रास्ता बता दिया और वह लड़का उस चिड़िया को लाने चल दिया।

वहॉ से वह एक बड़े मैदान में पहुॅचा जहॉ कोई नहीं रहता था सिवाय एक जोगी के। उसने उस जोगी से जा कर अपने दिल की बात कही तो जोगी ने भी उसे उस यात्रा पर जाने से मना किया पर लड़का तो मानने वाला नहीं था तब जोगी ने भी उसको आगे का रास्ता बताया और उसे जाने दिया।

फिर जोगी ने उसे एक छोटा सा पत्थर और एक छोटा सा मिट्टी का घड़ा दिया और कहा — “इस पत्थर को तुम अपने आगे फेंक देना तो वह तुम्हें वहॉ जाने का रास्ता दिखायेगा तुम उसके पीछे पीछे चला जाना।

वह पत्थर तुमको एक पहाड़ की तलहटी में ले जायेगा जहॉ तुमको तेज़ हवा और बिजली की कड़क जैसी बहुत तेज़ आवाज सुनायी देगी। हो सकता है कि उस आवाज में तुमको अपना नाम भी सुनायी दे।

पर तुम डरना नहीं और किसी भी हालत में वापस नहीं आना नहीं तो तुम एक पत्थर के खम्भे में बदल जाओगे। तुम उस पहाड़ पर चढ़ जाना। जब तुम उस पहाड़ की चोटी पर पहुँच जाओगे तो तुमको वहाँ सुनहरे पानी की एक झील दिखायी देगी।

उस झील के किनारे एक पेड़ खड़ा होगा जिसकी एक शाख पर एक पिंजरा लटका होगा जिसमें वह चिड़िया बन्द है। जब तुम उस पेड़ के पास पहुँचो तो सबसे पहले उसकी वह शाख पकड़ना जिस पर पिंजरा लटका है। फिर पलट कर उस रास्ते को देखना जिधर से तुम आये थे।

यह बहुत जरूरी है क्योंकि अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो तुम जिस रास्ते से आये हो उस रास्ते को भूल जाओगे।

वह चिड़िया तुमसे पूछेगी कि तुम वहाँ क्यों आये हो तो तुम उससे कहना कि तुम उसे लेने आये हो। उसके बाद सब कुछ ठीक है। अगर तुमने मेरी ये सारी बातें मानी तो तुमको कोई खास मुश्किल नहीं पड़ेगी और तुम सुरक्षित रूप से चिड़िया को ले कर आ जाओगे।"

लड़का उस पत्थर और घड़े को ले कर चल दिया। उसने पत्थर अपने आगे फेंक दिया और उसके पीछे पीछे चलता रहा। कुछ दूर तक तो सब ठीक रहा पर जब वह पहाड़ की तलहटी में पहुँचा और उसने वहाँ तेज़ हवा और बिजली की कड़क की बहुत तेज़ तेज़

आवाजें सुनीं तो वह डर गया और उसने पीछे मुड़ कर देखा। तुरन्त ही वह पत्थर का हो गया।

कुछ दिन बाद तक भी जब बड़ा भाई चिड़िया ले कर वापस नहीं आया तो दूसरे भाई ने सोचा कि अब वह जा कर देखेगा कि उसका भाई कहाँ रह गया। वह उसी जंगल में पहुँचा जिससे हो कर उसका भाई गया था।

उसको भी वहाँ एक शिकारी मिला और शिकारी के कहने पर आगे चला तो वह भी मैदान में पहुँच गया और वहाँ वह उसी जोगी से मिला जिससे उसका बड़ा भाई मिला था।

हालाँकि दोनों ने उसको इस यात्रा पर जाने से मना किया था और उससे यह भी कहा था कि तुम्हारा भाई तो पहले ही मर चुका है और इसका सुबूत यह था कि पत्थर और मिट्टी का घड़ा जोगी के पास वापस आ चुके थे।

जब लड़के ने यह सुना तो उससे पूछा — "क्या मेरे भाई को वापस लाने का कोई तरीका है।"

जोगी बोला — "है। पर उसे वही वापस ला सकेगा जो उस चिड़िया को ले कर आयेगा।"

लड़का बोला — "तब आप मुझे वह पत्थर और मिट्टी का घड़ा दें मैं उसे लाने जाता हूँ।"

जोगी ने उसे पत्थर और मिट्टी का घड़ा दे दिया और वह लड़का उनको ले कर वहाँ से चल दिया। वह भी अपने भाई की तरह कुछ

दूर तक तो ठीक चला पर उसने भी जैसे ही तेज़ हवा और बिजली की कड़क की आवाजें सुनी वह पीछे मुड़ गया और तुरन्त ही पत्थर का हो गया।

छोटे भाई ने उसका भी कुछ दिन इन्तजार किया फिर वह भी उन दोनों को देखने के लिये निकल पड़ा। दुखी पर बहादुर लड़के ने अपने पिता और बहिन को विदा कहा अपने रास्ते पर चल पड़ा।

वह उसी जंगल में पहुँचा जिससे हो कर उसका भाई गया था। उसको भी वहाँ एक शिकारी मिला और शिकारी के कहने पर आगे चला तो वह भी मैदान में पहुँच गया और उसी जोगी से मिला जिससे उसका बड़ा भाई मिला था।

हालाँकि दोनों ने उसको इस यात्रा पर जाने से मना किया और उससे यह भी कहा कि तुम्हारे दो भाई तो पहले ही मर चुके हैं और इसका सुबूत यह था कि पत्थर और मिट्टी का घड़ा जोगी के पास वापस आ चुके थे।

उसने कहा — "बिना मेरे भाइयों के मेरी भी क्या ज़िन्दगी है। आप मुझे वह पत्थर और मिट्टी का घड़ा दें मैं उस चिड़िया का लाने की पूरी कोशिश करूँगा ताकि मेरे भाई वापस आ सकें और मेरी बहिन की इच्छा भी पूरी हो जाये।"

यह सुन कर जोगी ने उसको पत्थर और मिट्टी का घड़ा दे दिया और वह वहाँ से चल दिया। इस बार पत्थर और मिट्टी का घड़ा जोगी के पास वापस नहीं आये क्योंकि यह लड़का डरा नहीं और

इसने पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा जब तक यह पहाड़ की चोटी पर नहीं पहुँच गया।

वहाँ उसने सुनहरे पानी की एक झील देखी और देखा उसके किनारे खड़ा एक पेड़ और पेड़ की एक शाख पर लटका हुआ एक पिंजरा। पिंजरे में चिड़िया बहुत ही मीठी आवाज में गा रही थी।

वहाँ जा कर उसने उस पेड़ की शाख पकड़ ली। उसके शाख पकड़ते ही सारा शोर बन्द हो गया। कहीं से कोई आवाज नहीं आ रही थी सिवाय चिड़िया की आवाज के।

वह पूछ रही थी — "तुम यहाँ क्या करने आये हो और तुम्हें क्या चाहिये।"

लड़के ने कहा कि उसको केवल चिड़िया पेड़ की उस शाख का एक टुकड़ा जिस पर चिड़िया का पिंजरा लटक रहा था और थोड़ा सा सुनहरा पानी चाहिये और कुछ नहीं ताकि वह अपने भाइयों को जिला सके।

चिड़िया ने उससे शाख काटने के लिये कहा और उसका मिट्टी का घड़ा सुनहरे पानी से भरने के लिये कहा। उसने उससे एक घड़ा भर कर पानी और लेने के लिये कहा। और कहा कि दूसरा घड़ा उसको पास में ही पड़ा मिल जायेगा।

लड़के ने ऐसा ही किया। पिंजरे और दूसरी चीज़ों को साथ ले कर लड़का नीचे उतरने लगा। जब वह नीचे जा रहा था तब

चिड़िया ने उससे कहा कि वह एक घड़ा भर कर पानी उन पत्थरों पर छिड़क दे जो टुकड़े हो कर चारों तरफ गिर जायेंगे।

लड़के ने वैसा ही किया तो वे पत्थर के टुकड़े पहले तो टूट कर बिखर गये फिर सारे टुकड़े आदमियों में बदल गये। इस तरह बहुत सारे राजा राजकुमार और पवित्र लोग[16] ज़िन्दा हो गये जो कभी उस चिड़िया को वहाँ से लाने गये थे।

उन्होंने उस लड़के को धन्यवाद दिया और कहा कि वे तो उसके नौकर जैसे थे। उसके दोनों भाई भी ज़िन्दा हो गये थे।

एक दो दिन में यह लम्बा जुलूस जोगी के पास पहुँचा। तीनों भाई उस जुलूस के आगे आगे चल रहे थे। जब जोगी ने जुलूस आते देखा तो वह समझ गया कि यह लड़का अपने काम में सफल हो गया है। उसने उसको आशीर्वाद दिया। जब वे लोग कुछ और आगे चले तो उनको शिकारी मिला।

तीनों भाई अपने घर सुरक्षित आ पहुँचे। बूढ़े माली और उनकी बहिन ने उनका ऐसे स्वागत किया जैसे किसी के मर कर ज़िन्दा हो जाने पर करते हैं। सारे लोग जिनको लड़के ने ज़िन्दा किया था वे भी अभी तक उसके साथ थे और उसको छोड़ना नहीं चाहते थे।

माली बोला — "अरे मैं इतने सारे लोगों को कैसे खिलाऊँगा पिलाऊँगा?"

---

[16] Translated for the words "Holy Men"

चिड़िया बोली — "तुम चिन्ता न करो तुम्हें सब कुछ मिल जायेगा।" उसकी बात सच ही हुई। रोज उन सबके लिये अच्छा अच्छा और नया नया खाना आने लगा। सारे मेहमानों ने खूब पेट भर कर खाया।

जल्दी से जल्दी माली और उसके तीनों बेटों ने अपने मेहमानों के लिये रहने के लिये घर भी बना दिये। वहीं उनके पास एक तालाब बनाने की भी जगह थी सो उन्होंने एक गड्ढा खोद कर उसमें बर्तन वाला सुनहरा पानी डाल दिया जिससे वह तालाब सुनहरे पानी से भर गया। उसी तालाब के किनारे उन्होंने वह पेड़ की शाख भी लगा दी जो वे पहाड़ से लाये थे। वह शाख बढ़ कर एक बहुत सुन्दर पेड़ बन गयी।

वह बूढ़ा माली और उसका परिवार तो बहुत अमीर और खुशहाल हो गया। उसके पास तो अब इतना पैसा हो गया जितना उसने कभी सोचा भी नहीं था। उनका नाम सारी दुनियाँ में फैल गया। राजा खुद उससे मिलने आया और उसके साथ उसने बराबरी का व्यवहार किया।

एक दिन राजा ने उससे पूछा कि उसके पास यह सुन्दर और होशियार चिड़िया कहाँ से आयी तो सबसे छोटे भाई ने उसे सब कुछ बताया। उसने उससे यह भी पूछा कि इतने शानदार और इतने सारे नौकर और इतना सारा पैसा उनके पास कहाँ से आये।

इसका जवाब दिया चिड़िया ने — "सुनिये राजा साहब मैं आपको बताती हूँ। ये तीन लड़के और यह सुन्दर लड़की जिनको आप यहाँ अपने सामने देख रहे हैं ये माली के बच्चे नहीं हैं जैसा कि सारे लोग समझते हैं। ये आपके बच्चे हैं।"

यह सुन कर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ — "यह कैसे हो सकता है? यह चिड़िया तो बहुत बात बनाती है।"

चिड़िया फिर बोली — "राजा साहब आप मानें या न मानें पर ऐसा ही है। आप नाराज नहीं होना मैं आपको सब बात बताती हूँ। मैं कोई बेवकूफी भरी बात नहीं कर रही हूँ। ये चारों बच्चे आपकी सबसे छोटी रानी के बच्चे हैं जिसको आपने अपने महल से बाहर निकाल दिया था।

उसने बेचारी ने किसी कौए के बच्चों या पिल्लों को जन्म नहीं दिया था जैसा कि आपकी दोनों नीच बड़ी रानियों ने आपको बताया। उन्होंने आपसे झूठ बोला ताकि आप कहीं अपनी छोटी रानी को उनसे ज़्यादा प्यार न करने लगें और उन्हें छोड़ दें इसी डर से उन्होंने ऐसा किया।

उन्होंने अपने हाथों से इन बच्चों को बक्से में बन्द करके इन्हें नदी में बहा दिया। परमेश्वर की कृपा से ये बच्चे इस बूढ़े माली के हाथ लग गये और इसने उन्हें बचा लिया।

कुछ साल बाद उन नीच रानियों को पता चला कि ये बच्चे ज़िन्दा हैं तो उन्होंने एक अक्लमन्द बुढ़िया से इस नन्हीं सी बच्ची को

इस बात के लिये मजबूर करवाया कि यह अपने भाइयों से मुझे लाने के लिये कहे। वे यह जानती थीं कि मुझे लाना बहुत मुश्किल है और इसमें कई लोगों की जानें जा चुकी हैं।

उनको यह भी मालूम था कि तीनों भाई अपनी बहिन की इच्छा पूरी करने की कोशिश जरूर करेंगे और इसी कोशिश में वे तीनों मारे जायेंगे। दो बड़े भाई तो पत्थर के बन ही गये थे और शायद वे उसी हालत में रहते अगर सबसे छोटा भाई अपने उद्देश्य में सफल नहीं होता। राजा साहब आपने सुना जो कुछ आपको मैंने बताया।"

इसके बाद चिड़िया चुप हो गयी और उस जगह बिल्कुल चुप्पी छा गयी। कई मिनटों तक कोई नहीं बोला। फिर राजा बोला — "उफ़ मैंने यह क्या किया। मैंने अपनी भोलीभाली प्यारी पत्नी को महल से निकाल दिया। मैंने अपनी उन दोनों बड़ी रानियों की बातों को सुना ही क्यों और उनके झूठ बोलने पर उसे बाहर निकाल दिया।"

कह कर राजा फूट फूट कर रो पड़ा। उसके साथ साथ वहाँ जितने लोग बैठे थे सभी रो पड़े। जैसे ही राजा अपने महल लौटा उसने अपनी दोनों बड़ी रानियों को बाहर निकाल दिया और छोटी रानी को वापस बुला लिया।

राजा और उसकी प्रिय पत्नी छोटी रानी की ख़ुशी की तो कोई हद ही नहीं थी जब उन्होंने एक दूसरे को समझा और जाना कि वे चार सुन्दर बच्चों के माता पिता हैं – तीन लड़के और एक लड़की।

वे लोग बहुत दिनों तक ख़ुशी ख़ुशी रहे और राजा के बाद उसके राज्य पर उसके तीनों बेटों ने राज किया।

इसी कहानी का दूसरा रूप

मैं आपको दो राजकुमारों की एक कहानी सुनाता हूँ। एक समय की बात है एक राजा था जिसके तीन रानियाँ थीं। हालाँकि उसके तीन रानियाँ थीं पर उसके बेटा कोई नहीं था। इस वजह से बहुत परेशान रहता था क्योंकि वह चाहता था कि उसका ख़ून ही उसके बाद उसका राज्य सँभाले। इसके अलावा उसकी नजर में कोई और ऐसा आदमी नहीं था जो उसके काम कर सके।

कुछ समय बाद उसकी यह मुश्किल हल होती नजर आयी। उसकी तीसरी पत्नी को बच्चे की आशा हो गयी। यह सुन कर राजा बहुत ख़ुश हुआ। वह हमेशा रानी का हाल पूछता रहता और उसकी देखभाल से सम्बन्धित बराबर अपने हुक्म दोहराता रहता।

अब जैसा कि सोचा जा सकता है उस रानी की इतनी देखभाल होते देख कर दोनों बड़ी रानियाँ उससे जलने लगीं। उनको यह बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी कि राजा उसकी इतनी देखभाल करे और उनके पास बिल्कुल न आये। उनको यह भी डर लगा कि ये

हालात तो चलते ही रहेंगे अगर कहीं उसके लड़का हो जाये तो। सो इस सबको रोकने के लिये उन्होंने एक चाल खेली।

जैसे ही उन्होंने मौका पाया तो उन्होंने दाई को बुलाया और उससे कहा कि जब छोटी रानी के बच्चा हो तो वह बच्चे की जगह एक पिल्ला रख दे। इसके लिये उन्होंने उसको बहुत पैसे दिये।

दाई ने अपना वायदा निभाया और जैसे ही रानी के बच्चा हुआ तो दाई ने उसकी जगह एक पिल्ला रख दिया और कह दिया कि रानी ने तो एक पिल्ले को जन्म दिया है।

बच्चा जो लड़का था रानियों ने एक बढ़ई की दूकान में डलवा दिया। जब राजा ने यह सुना तो उसे बहुत दुख हुआ उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे।

कुछ समय बाद छोटी रानी को फिर से बच्चे की आशा हुई तो राजा को सुन कर बहुत खुशी हुई। उसने सोचा कि भगवान अबकी बार उसकी इच्छा जरूर पूरी कर देंगे। पहले की तरह से उसने छोटी रानी की देखभाल के लिये बड़े सख्त हुक्म निकाल दिये।

उसकी दोनों बड़ी रानियों की जलन अभी खत्म नहीं हुई थी सो उन्होंने इस बार भी दाई को बहुत सारे पैसे दे कर अपनी नीचता में बच्चे को उसी बढ़ई की दूकान में फिंकवा दिया जिसमें उसके भाई को फिंकवाया था और उसकी जगह एक पिल्ले को रखवा दिया। यह बच्चा भी एक बहुत सुन्दर लड़का था।

राजा ने जब यह सुना तो वह बहुत नाउम्मीद हो गया और उसका सारा धीरज जाता रहा। उसने अपनी छोटी रानी को महल से निकलवा दिया। बेचारी रानी बिना एक पैसा लिये वहाँ से चल दी और अपना पेट भरने के लिये घर घर जा कर भीख माँगने लगी। वह खुद भी बहुत दुखी थी।

राजा के दोनों लड़के बढ़ई के घर में बढ़ई की देखभाल में बड़े होने लगे जो हमेशा भगवान को इस खजाने को उसे देने के लिये धन्यवाद देता रहता।

कुछ साल गुजर गये कि एक दिन वे दोनों लड़के महल के पास की सड़क पर एक लकड़ी के घोड़े से खेल रहे थे जो उनके बढ़ई पिता ने उनको बना कर दिया था। राजा ने उनको देखा तो उसके मुँह से निकला — "क्या ही अच्छा होता अगर ये दोनों मेरे बेटे होते तो।"

उसने उन दोनों को अपने पास बुलाया अऔर उनसे पूछा — "क्या तुम मेरे साथ महल में रहोगे और मेरा काम करोगे?"

दोनों ने बेहिचक जवाब दिया — "नहीं। हम लोग तो एक गरीब बढ़ई के बच्चे हैं। हम इतनी ऊँची जगह पर काम कैसे कर सकते हैं।" ऐसा कह कर वे वहाँ से कुछ दूर भाग गये और फिर अपने घोड़े से खेलने लगे। राजा उन्हें फिर भी देखता ही रहा।

उसने देखा कि एक लड़के ने एक चम्मच चावल लिया और उसे लकड़ी के घोड़े के मुँह में देता हुआ बोला — "खा ओ लकड़ी के घोड़े खा चाहे तेरी खाने की इच्छा है या नहीं है।"

उसके बाद उसने दूसरे लड़के को देखा कि वह एक प्याले में पानी ले कर उस घोड़े की पूँछ की तरफ आया और उससे बोला — "पी ओ लकड़ी के घोड़े पानी पी चाहे तेरी पीने की इच्छा है या नहीं।"

राजा ने यह सब देखा और सब सुना फिर उनकी बेवकूफी पर आश्चर्य करने लगा। उसने उनको फिर बुलाया — "बच्चों तुम लोग यहाँ फिर से आओ और मुझे बताओ कि यह तुम लोग क्या कर रहे हो। क्या तम्हें पता नहीं कि एक लकड़ी का घोड़ा कैसे कुछ खा पी सकता है।"

लड़के बोले — "हाँ यह बात तो हमें मालूम है।"

फिर उन्होंने कुछ याद करते हुए कहा — "पर जब एक स्त्री पिल्लों को जन्म दे सकती है तो लकड़ी का घोड़ा क्यों नहीं खा पी सकता।"

यह सुन कर राजा को भी इस बेवकूफी की बात का अब अन्दाज हुआ उसने सोचा कि तब उसके दिमाग को क्या हुआ था। ऐसी बेवकूफी की बात पर उसने पहले ही कैसे विश्वास कर लिया। उसने बच्चों को वहाँ से भगा दिया और खुद महल के अन्दर चला गया।

अगली सुबह उसने अपने खास खास वज़ीरों को बुलाया और उनसे इस मामले में सलाह माँगी। सबने यही कहा कि उन्होंने जब यह सुना था तब उनमें से भी किसी को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ था।

राजा ने उनसे फिर पूछा कि वे इस मामले के बारे में क्या सोचते हैं कि क्या हुआ होगा। तो सबने उनसे एक आवाज में कहा कि यकीनन इसमें दोनों बड़ी रानियों का हाथ है उन्होंने छोटी रानी से जल कर यह जाल रचा है।

जब उन्होंने देखा कि छोटी रानी की इतनी देखभाल हो रही है तो वे जल उठीं और उन्होंने यह सब जाल रचा। फिर उन्होंने राजा को सलाह दी कि वह दाई को बुलायें और उसको मौत की सजा का डर दिखा कर उससे पूछें कि सच क्या है और उसके बच्चों का क्या हुआ।

राजा ने ऐसा ही किया। दाई ने उन्हें सब बता दिया। बढ़ई के दोनों बच्चों को राजा के पास लाया गया जो अब उसके बच्चे साबित हो चुके थे। तीसरी रानी को भी तुरन्त ही बुला लिया गया और दोनों बड़ी रानियों को देश निकाला दे दिया गया।

इसके बाद सब लोग खुश खुश रहे। राजा और छोटी रानी जो अब राजा की बड़ी रानी हो चुकी थी बहुत दिनों तक जिये। बच्चे भी बड़े हो कर बहुत अच्छे बहादुर और लायक आदमी बने जिन्हें राजा और उसकी जनता बहुत प्यार करती थी।

इस कहानी का तीसरा रूप

एक बार की बात है कि एक बहुत ही बड़ा और शानदार राजा था जिसके चार सौ पत्नियाँ थीं पर कोई बेटा नहीं था। राजा के पास एक तोता था जिसको वह बहुत प्यार करता था।

वह रोज दरबार से जभी भी घर लौटता तभी उसको बुला भेजता था और अगर वह उसके पास नहीं होता था तो दुखी हो जाता था।

एक दिन राजा का एक वजीर तोते के पिंजरे के पास खड़ा हुआ था तो उसने देखा कि उसका पिंजरा कुछ गन्दा है सो उसने एक नौकर को बुलाया और उसको वह पिंजरा साफ करने के लिये दे दिया।

इस बीच उसने सोचा कि तोते की उड़ने की ताकत परखी जाये। उसने एक लम्बा सा धागा तोते के पंजे में बाँधा और उसको उड़ने के लिये छोड़ दिया।

तोता सारा धागा ले कर तुरन्त ही उड़ गया और जब उसने देखा कि अब वह धागे से बँधा होने की वजह से उड़ नहीं पा रहा है तो उसने वह धागा अपनी चोंच से काट दिया और उड़ गया।

वह दूर उड़ता चला गया और वजीर उसके पीछे पीछे भागता रहा। बेचारे वजीर ने उसका आखीर तक पीछा करने का और अगर मुमकिन हो सका तो उसको पकड़ने का फैसला किया। अगर

वह उसे अपने देश में न पकड़ सका तो दूसरे देश तक जाने का भी इरादा किया क्योंकि उसकी राजा के पास बिना तोते के जाने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी।

तोता बहुत सारे मैदान पार करके उड़ता चला गया। फिर उसने एक चौड़ी सी नदी पार की और एक झाड़ी पर जा कर बैठ गया जो नदी के पास ही उग रही थी। वहॉ उसको एक स्त्री ने पकड़ लिया और उसको अपने घर ले गयी। खुशकिस्मती ने वजीर ने यह देख लिया तो वह भी उसके पीछे पीछे चला गया और जा कर तोते को उससे ले लिया।

तोते को उससे ले कर वह बहुत खुश हुआ। अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिये उसने उस स्त्री से कहा कि वह उसकी शादी राजा से करा देगा और उसकी शादी का खर्चा वह खुद करेगा। स्त्री राजी हो गयी।

सो वजीर ने उसको अपना घर ठीक करने के लिये और कुछ कपड़े खरीदने के लिये **30** हजार रुपये दिये और उससे कहा कि वह कुछ महीनों में तैयार हो जाये तब वह उसके पास आयेगा।

वजीर जब महल पहॅुचा तो उसने यह सब राजा को बताया। उसने स्त्री की सुन्दरता और होशियारी का इस तरह बखान किया कि राजा का मन उससे शादी करने के लिये करने लगा। जल्दी ही शादी का इन्तजाम हो गया और शादी भी हो गयी।

राजा अपनी नयी पत्नी को बहुत प्यार करता था। उसका प्यार उससे और ज़्यादा बढ़ गया जब उसको पता चला कि उसको बच्चे की आशा हो गयी थी। उसने भगवान से प्रार्थना करनी शुरू कर दी कि भगवान करे उसके बेटा ही हो।

उसने उसकी देखभाल के लिये खास हिदायतें दे रखी थीं और दूसरे तरीकों से भी उसने उसको बहुत इज़्ज़त दी। अब जैसा कि सोचा जा सकता है कि राजा की उसके लिये इतनी देखभाल और इज़्ज़त देख कर दूसरी रानियाँ उससे जलने लगीं। इस जलन की वजह से उन्होंने सोचा कि राजा को नाउम्मीद किया जाये।

बच्चे के जन्म के कुछ दिन पहले ही उन्होंने दाई को बुलवाया और उसको जवाहरात और पैसे दे कर उससे छोटी रानी के जैसे ही बच्चा हो वैसे ही उसका बच्चा बदलने के लिये कहा। उन्होंने कहा कि वह उसको किसी पत्थर से बदल दे।

जब रानी के बच्चा हुआ जो एक बहुत ही सुन्दर लड़का था तो तुरन्त ही दाई ने उसको एक पत्थर के टुकड़े से बदल दिया। बच्चे को उसने एक बक्से में रखा और नदी में बहा दिया और कह दिया कि रानी ने एक पत्थर के टुकड़े को जन्म दिया है।

राजा ने जब इस अजीब से जन्म की कहानी सुनी तो उसका उस रानी के लिये प्यार बुरी तरह से नफरत में बदल गया। उसने उसे शाही अस्तबल में रहने के लिये भेज दिया और उसको जानवरों की तरह जौ खाने के लिये दे दिये।

अगली सुबह एक पवित्र आदमी नदी के किनारे अपनी पूजा कर रहा था कि उसने नदी में एक बक्सा तैरता जाता देखा। उसको यह देखने की उत्सुकता हुई कि उस बक्से में क्या है सो वह वहीं से चिल्लाया – "ओ बक्से अगर तू मेरे किसी काम का है तो मेरे पास आजा नहीं तो तू यहाँ से कहीं दूर चला जा।"

उसके ऐसे बुलाने पर बक्सा उसके पास आ गया। उसने उसे उठाया और घर ले गया। घर जा कर उसे खोला तो उसमें तो एक बहुत प्यारा सा बच्चा था जो पिछले दिन ही पैदा हुआ था। उसने वह बच्चा अपनी पत्नी को दे दिया। वे सब उसको धीरे धीरे बड़ा होते देख कर बहुत खुश होते रहे।

समय बीतता गया। अब वह लड़का नौ साल का हो गया था। एक दिन वह दूसरे बच्चों के साथ महल के ऑगन में खेल रहा था तो राजा की रानियों ने उसे देखा। उन्होंने देखा कि उसकी शक्ल तो राजा से काफी मिलती जुलती थी। यह देख कर उनको आश्चर्य हुआ। उनको लगा कि कहीं यह राजा का बेटा तो नहीं है जिसको उन्होंने नदी में फिंकवा दिया था।

उन्होंने दाई को बुलवाया और उसे दिखाया तो उसने उसका सिर देख कर कहा कि हॉ यह तो वही है। उसने उसे उसके सिर पर पड़े एक खास गड्ढे से पहचान लिया था।

राजा की रानियॉ यह सुन कर बहुत परेशान हुईं। उनको लगा कि अगर राजा को इस बात का पता चल गया तो वह उनकी इस

नीचता के लिये बहुत कड़ी सजा देंगे। सो उन्होंने दाई से हाथ जोड़ कर विनती की कि वह इस परेशानी का जल्दी से जल्दी कोई हल निकाले। इसके लिये उन्होंने उसे बहुत सारा इनाम देने का वायदा किया।

दाई ने पहले तो यह पता किया कि वह लड़का रहता कहाँ है फिर वह उसके घर गयी और उसकी पत्नी को बताया कि वह उसकी दूर के रिश्ते की ननद थी। इस तरह अब उस स्त्री को आदमी की पत्नी से अपने लिये कोई काम निकालना बहुत मुश्किल नहीं रहा।

इस तरह से वह कई बार उनके घर में जाती रही और एक दिन उस आदमी की पत्नी ने उसको अपने घर रहने के लिये बुला लिया कि वह कुछ दिन उसके पास आ कर रहे। जब वह वहाँ रह रही थी तो वह अक्सर उस लड़के के बारे में बात करती और उसके अच्छे गुणों के बारे में बात करती रहती।

एक दिन उसने उस लड़के की माँ से कहा — "वह सब तो ठीक है पर मुझे यकीन है कि एक चीज़ है जो वह नहीं करेगा। वह फलाँ फलाँ देश नहीं जायेगा जहाँ एक बहुत सुन्दर बागीचा है और उस बागीचे में उसकी दीवार के सहारे सोने की शाखों वाला और मोतियों के फूलों वाला एक चन्दन का पेड़ खड़ा है।

अगर वह वहाँ जाये और उस पेड़ को ले आये तो उसके चरित्र का भी पता चल जायेगा और उसकी किस्मत भी चमक जायेगी।"

जब शाम को लड़का खेल कर वापस आया तो उसकी माँ ने उसे वह सब बताया जो उसने दाई से सुना था और उत्सुकतावश उससे वहाँ जा कर वह पेड़ लाने के लिये कहा।

लड़का राजी हो गया और अगले दिन सुबह ही वह अपनी इस खतरनाक यात्रा पर कुछ रोटियाँ अपने कमरबन्द में बाँध कर निकल पड़ा। वह बहुत दूर चलता गया जब तक वह एक नदी के पास नहीं आ पहुँचा। वहाँ वह सुस्ताने के लिये बैठ गया।

कुछ ही देर में एक स्त्री उस नदी में से बाहर निकली और उससे बात करने लगी। बातों बातों में उसने उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा था। लड़के ने उसे सब बता दिया तो उसने उससे प्रार्थना की कि वह वहाँ न जाये क्योंकि उस बागीचे में बहुत सारे देव और जंगली जानवर रहते थे।

पर लड़का तो मानने वाला नहीं था। वह तो वहाँ जाने के पीछे लगा था तो उस स्त्री ने सोचा कि उसको वह अपनी ताकत दे दे जिससे उसकी सहायता हो जायेगी।

वह बोली — "सुनो जब तुमने वहाँ जाने के लिये अपना मन बना ही लिया है तो तुम्हारे लिये यह जानना जरूरी हो जाता है कि तुम वहाँ के बारे में कुछ जान लो।

जब तुम वहाँ पहुँचोगे तो तुम देखोगे कि बागीचे के फाटक के दोनों तरफ दो चीते खड़े हैं जिनकी भूख को तुम्हें भेड़ की एक टाँग

से शान्त करना पड़ेगा नहीं तो वे तुम्हारे ऊपर कूद पड़ेंगे और तुम्हें खा जायेंगे।

तुम उनसे डरना नहीं बस भेड़ की एक टॉग उनकी तरफ फेंक देना और उनसे सहायता मॉगना। वे तुमको बागीचे के अन्दर जाने देंगे।

जब तुम बागीचे के अन्दर पहुॅच जाओगे तो वहॉ तुम्हें बहुत सारे देव मिलेंगे पर तुम उनसे भी डरना नहीं। तुम उनको चाचा कह कर पुकारना और उनसे कहना कि तुम उनसे मिल कर बहुत खुश हो। तुम उनसे भी सहायता मॉगना।

वे तुम्हें कुॅए के पास ले जायेंगे जिसके चारों तरफ तुम्हें बहुत किस्म के बहुत सारे सॉप दिखायी देंगे। तुम उनसे भी नहीं डरना। तुम उनकी तरफ जमीन पर कुछ रोटियॉ और पनीर[17] फेंक देना तो वे तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगे।

चन्दन का पेड़ वहीं कुॅए के पास ही उग रहा है। तुमको उसे वहॉ से लाने में कोई मुश्किल नहीं होगी। जाओ भगवान तुम्हें खुशहाल करे।"

लड़के को लगा कि अब उसका रास्ता बहुत आसान हो गया है। वह खुशी खुशी उस तरफ चल दिया। जैसे ही उसको लगा कि वह अब बागीचे के पास पहुॅच रहा है उसने एक भेड़ की एक टॉग

[17] Translated for the words “Curdled Milk”

काट ली। कुछ रोटियाँ और पनीर भी साथ में ले लिया। जैसा कि नदी से निकली स्त्री ने उससे कहा था वह सब सच निकला।

वह बागीचे के पास पहुँचा तो उसको दो चीते मिले जिनको उसने भेड़ की टाँग खिला कर सन्तुष्ट किया। अन्दर गया तो उसको कई देव मिले जिनको उसने चाचा कह कर सलाम किया।

वहाँ से वह कुँए के पास पहुँचा तो उसे बहुत किस्म के बहुत सारे साँप मिले। उनको उसने रोटी और पनीर खिला कर शान्त किया। फिर उसने चन्दन का पेड़ उखाड़ लिया और वापस घर चल दिया।

जब वह बागीचे से बाहर निकला तो एक चीते ने उससे जिद की कि वह उसके ऊपर चढ़ कर अपने घर जाये। वह एक बड़ा अच्छा दृश्य था कि एक लड़का अपने कन्धे पर चन्दन का पेड़ लिये चीते पर सवार हो कर घर आ रहा था।

यह बात सारे शहर में फैल गयी। सो यह बात राजा और रानियों के कानों तक भी पहुँची। सब लोगों ने उसकी बहुत तारीफ की पर राजा की रानियों ने तारीफ के अलावा कुछ और भी किया। वे डर के मारे रोयीं। उनको पूरा यकीन था कि राजा को सच का बहुत जल्दी पता चल जायेगा और तब वे सजा से नहीं बच पायेंगीं।

इस दुख में उन्होंने दाई को फिर से बुला भेजा और उससे उन्हें सहायता करने के लिये कहा। इस प्लान के अनुसार दाई फिर से

लड़के के घर गयी और लड़के की यात्रा के बारे में पूछा। माँ ने बड़े गर्व के साथ कहा — "देखो यह है वह चन्दन का पेड़। क्या मेरा बेटा बहादुर नहीं है?"

दाई बोली — "हाँ वह तो है पर अफसोस वह वहाँ से पेड़ को ढकने वाल ढकना तो लाया ही नहीं जो वहीं एक पन्ने[18] के बक्से में कुँए के पास ही रखा है। वह तुम्हारे पास जरूर होना चाहिये। उसके बिना तो यह पेड़ जाड़ों में मर जायेगा। उसको दोबारा वहाँ भेजो और उससे उसे और मँगवा लो।"

दाई को खुश करने के लिये और अपने आपको भी उसकी माँ कहलाने के गर्व के लिये उसने शाम को बच्चे को वहाँ दोबारा जाने और पेड़ के ऊपर ढकने का ढकना लाने के लिये कहा। निडर बच्चा फिर से वहाँ जाने के लिये तैयार हो गया।

वह अपने चीते पर चढ़ा जो तब तक वहीं था वापस नहीं गया था और जल्दी ही उसी नदी के पास पहुँच गया जहाँ वह पहली बार आराम करने के लिये लेटा था। तुरन्त ही नदी में से वह स्त्री फिर निकल कर आयी और उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा था।

उसने उसे बताया कि वह कहाँ जा रहा था तो उसने फिर उसे वहाँ जाने से मना किया कि इस बार यह मामला पहले से बहुत मुश्किल था। यह बक्सा कुँए की दीवार पर रखा था और यहाँ दो

[18] Translated for the word "Emerald" – one of the nine precious stones.

शाहमार[19] रहते थे जो बहुत बड़े और भयानक थे। पर लड़का तो मानने वाला था नहीं।

जब स्त्री ने देखा कि लड़का अपने इरादे पर अटल है तो इसने लड़के से कहा कि वह खुद कुँए के पास न जाये बल्कि किसी देव को उस बक्से को उसके लिये लाने के लिये कहे। और अगर वह बक्सा लेने में सफल हो जाये तो वह इसी नदी के रास्ते से वापस जाये और उसे बताता जाये जो कुछ भी उसके साथ वहाँ हुआ था।

इसके बाद उसने उसे आशीर्वाद दिया और कहा कि जब वह लौट कर घर जायेगा तो वह भी उसके साथ उसके घर तक जायेगी।

सब लोग कितने खुश थे जब यह लड़का दोबारा मौत के मुँह से बच कर अपने काम में सफल हो कर लौटा। राजा ने उसे बुला कर उसको अपने वजीरों का सरदार बना दिया और उसे दूसरी तरीकों से भी इज़्ज़त दी।

राजा की रानियों ने सोचा कि अब हम क्या करें। अब तो हम यकीनन पता कर लिये जायेंगे और फिर हमारी सजा भी पक्की है। पर वे कर भी क्या सकती थी सिवाय इस भेद के खुलने तक इन्तजार करने का। लड़के को पकड़ने के सारे रास्ते अब उनके लिये बन्द हो गये थे।

[19] Shahmaar is a special kind of snake which becomes Shahmaar when it is not looked up on by any human being for 100 years. And if it is not seen by anyother by any man for another 100 years, it becomes a python. And it is not seen by any other man for another 100 years (total of 300 years) he becomes Veehaa. It possesses some special powers, especially of taking the shape of a woman.

पर उनको ज़्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ा। एक दिन नदी की स्त्री की सलाह पर वजीर ने एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया जिसमें उसने राजा को भी बुलाया। राजा ने उसका बुलावा स्वीकार कर लिया और उसके घर आया।

जब वे सब खाना खा रहे थे तो नदी वाली स्त्री ने चिल्ला कर सबको शान्त रहने के लिये कहा। सबकी ऑखें उधर उठ गयीं। उसने बोलना शुरू किया — "राजा साहब आप अपने बेटे को देखें। यह उस स्त्री का बेटा है जिसको आपने महल से निकाल कर अपने अस्तबल में रख दिया था और जिसको आप जानवरों की तरह से जौ खाने के लिये देते हैं।

पत्थर पैदा करने वाली कहानी आपकी दूसरी पत्नियों ने गढ़ कर आपको बतायी जो आपकी उस पत्नी से जलती थीं क्योंकि आप उसकी बहुत ज़्यादा देखभाल करते थे।"

राजा के मुॅह से निकला — क्या ऐसा है? क्या यह सच है? हॉ मेरा दिल कहता है कि यह सच है। इन सब नीच रानियों को राज्य से बाहर निकाल दो और मेरी रानी को और मेरे बच्चे को मेरे पास वापस ला दो।

इसके बाद मैं किसी और की तरफ देखॅूगा भी नहीं। देखो एक सच्ची पत्नी और एक सुन्दर बेटा मेरे लिये आज एक ही दिन में पैदा हो गये हैं। मैं आज बहुत खुश हॅू।"

राजा ने फिर नदी वाली स्त्री को यह सब उसे बताने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया। अपनी पत्नी को अस्तबल से बुला भेजा बेटे को भी बढ़ई के घर से बुलवा लिया। सभी लोग फिर खुशी खुशी रहने लगे।

60 चार राजकुमार[20]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा था जो बहुत होशियार था बहुत ही संत स्वभाव का और बहुत ही अक्लमन्द था। इस तरह वह एक आदर्श राजा था। उसका दिमाग हमेशा अपने देश का और अपनी जनता का भला चाहने में लगा रहता था।

उसका दरबार हर एक के लिये हर समय खुला रहता था। वह नीचे से नीचे आदमी की भी हर बात सुनने के लिये हमेशा तैयार रहता था। उसने हर तरीके के व्यापार को बढ़ावा दिया था। उसने बीमारों के लिये अस्पताल बनवाये। यात्रियों के लिये सराय बनवायीं और पढ़ने वालों के लिये बड़े बड़े स्कूल खोले। ये और ऐसे ही कई और काम उसने अपने लोगों के लिये किये।

ऐसे अक्लमन्द होशियार न्यायप्रिय और भला चाहने वाले राजा की देखरेख में लोग बहुत खुश थे और फल फूल रहे थे। गरीब अज्ञानी और नीच आदमियों का मिलना वहाँ मुश्किल था।

पर इस इतने बड़े और अच्छे राजा के कोई बेटा नहीं था। इस बात से वह बहुत दुखी रहता था। यही ऐसा एक काला बादल था जो उसकी खुश और शानदार ज़िन्दगी पर छाया रहता था। वह

[20] The Four Princes (Tale No 60)

रोज शिव जी[21] की प्रार्थना करता कि वह उसको एक बेटा दे दें जो उसके बाद उसकी राजगद्दी पर बैठे।

वह बहुत दिनों तक अपनी प्रार्थना के जवाब का इन्तजार करता रहा कि एक दिन शिव जी एक जोगी के वेश में उसके पास आये और उसके अच्छे व्यवहार से इतने खुश हुए कि वह उससे बोले — "बच्चा माँग तेरी क्या इच्छा है मैं तुझे वही दूँगा।"

राजा बोला — "महाराज मुझे किसी चीज़ की इच्छा नहीं है। भगवान ने मुझे पैसा इज़्ज़त ताकत शान शान्ति सन्तोष सब कुछ दे रखा है केवल एक चीज़ के। और वह मुझे कौन देगा।"

जोगी ने पूछा — "क्या तू उस चीज़ को मुझसे माँगने में डरता है? ओ राजा क्या तू जानता है कि तू क्या कह रहा है?"

राजा बोला — "आप सच कह रहे हैं। मैं एक ऐसे आदमी की तरह से बात कर रहा हूँ जो धार्मिक तरीके से पागल होता है। ओ महात्मा आप मुझे माफ करें पर अगर आपकी किसी देवता के ऊपर ताकत है तो मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप उनसे मेरी तरफ से कहें।"

जोगी बोला — "तू खुश रह बच्चा। तेरे कई बेटे होंगे। ले ये चार फल ले और इन्हें अपनी पत्नी को खाने के लिये दे देना और

---

[21] One of the three main Gods of Hindus – Brahmaa, Vishnu and Shiv. Shiv is the great representative of Jogi or Tapaswi (ascetic), the ideal of what can be attained by keeping of the body in subjection and by exclusive contemplation of divine things, hence he Mahajogi. And in this character he is depicted with ash-covered body, matted locks and in a most emaciated condition

उससे कहना कि वह इनको रविवार की सुबह सूरज निकलने से पहले खाये। इससे उसके चार बेटे होंगे जो बहुत होशियार और बहुत अच्छे होंगे।"[22]

राजा ने जोगी से वे चारों फल ले लिये और उन्हें बहुत धन्यवाद दिया। जोगी राजा को चारों फल दे कर वहॉ से चले गये।

जोगी के जाने के बाद वे फल ले कर राजा अपने महल में गया और अपनी पत्नी को जोगी के आने की और उनके फल देने की बात बतायी। यह अच्छी खबर सुन कर रानी तो बहुत ही खुश हो गयी। वे दोनों अब आने वाले रविवार का बड़ी उत्सुकतापूर्वक इन्तजार करने लगे। अगले रविवार को रानी ने सूरज निकलने से पहले वे चारों फल खा लिये।

जैसा जोगी ने कहा था वैसा ही हुआ। फल खाने के बाद रानी को बच्चे की आशा हो गयी और समय आने पर उसने चार बेटों को जन्म दिया। बच्चों के होने के समय का कष्ट उसके लिये कुछ ज़्यादा ही हो गया सो जैसे ही उसने चौथे बेटे को जन्म दिया उसने एक चीख मारी और मर गयी। बेचारी रानी, जब उसकी इच्छा पूरी हुई तो वह खुद चल बसी।

[22] Among other extraordinary powers of Jogi or Fakir seem to be able to grant sons to the barren. Some special fruit eating is the general remedy for this. Not only In Indian folktales but also in Indian mythological stories also mangoes, Lychi, apple, a drug to be swallowed with the juice of pomegranate flowers, barley corn can be cited.

बेचारे राजा की भी यह इच्छा तो पूरी हुई कि उसको उसका वारिस मिल गया पर किस कीमत पर – अपनी प्रिय पत्नी को खोने के बाद। महल पर दुख के बादल एक बार फिर बहुत दिनों तक छाये रहे। राजा इतना ज़्यादा दुखी था कि उसको तसल्ली देना मुश्किल हो गया।

चारों बच्चों को चार धायों की देखभाल में रख दिया गया। बड़े हो कर वे बहुत मजबूत तन्दुरुस्त चतुर और सुन्दर लड़के बन गये। राजा उन सबको बहुत प्यार करता था।

उसने उनको पढ़ना लिखना सिखाने के लिये अच्छे से अच्छे गुरू रख दिये गये। वह उनको मँहगी से मँहगी और अद्भुत से अद्भुत चीज़ें ला कर देता था। वह अपने चारों सुन्दर और होशियार बेटों के लिये कोई भी मुश्किल उठाने के लिये हमेशा तैयार रहता था।

इस बीच राजा ने दूसरी शादी कर ली। पर वह दिन बहुत बुरा दिन था जब उसने दूसरी शादी की।

जब उसकी दूसरी पत्नी ने राजा की पहली पत्नी के बच्चों को इतना सुन्दर और होशियार होते देखा तो वह उन चारों बच्चों से बहुत जलने लगी क्योंकि उसको लगा कि राजा उन्हीं को चाहेंगे और राजा के बाद वे ही राजा की गद्दी के मालिक होंगे उसके अपने बच्चे नहीं।

सो उसने अपने पति की नजरों में उनकी ज़िन्दगी खराब करने का निश्चय किया। उसने उनको कुछ ऐसा काम देने का तय किया

जिसे या तो वे न कर सकें या फिर उसको करने में उनकी मौत हो जाये।

यह तो हम पहले ही कह चुके हैं कि राजा अपने लोगों और देश की उन्नति में लगा रहता था। पर इस काम को करने में अब उसको अपनी पोजीशन बाधा डाल रही थी क्योंकि उसके पास बहुत काम थे।

हालाँकि राजा इस काम के लिये अपने मन्त्रियों और अपने नीचे काम करने वालों पर निर्भर करता था क्योंकि वह यह समझता था कि अधिकतर वे सब न्यायपूर्ण और ईमानदार थे फिर भी उसने यह निश्चय किया कि वह खुद इन सब कामों को जा कर देखेगा और जानने की कोशिश करेगा कि लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं और देखेगा कि उसके बारे में सबका सोचना ठीक है या नहीं।

इसलिये वह अक्सर वेश बदल कर गाँव गाँव शहर शहर दिन और रात में जा कर यह देखा करता था कि लोगों को उसका राज कैसा लग रहा है। इस तरीके से वह अपने लोगों की जरूरतों को भाँपता था और उनको पूरी करने की कोशिश करता था और लोग इस बात पर आश्चर्य करते थे कि राजा इतना होशियार कैसे है।

यह सब कुछ समय तक चलता रहा कि एक दिन सुबह को जल्दी ही जब राजा एक पड़ोस के गाँव का चक्कर काट कर घर लौट रहा था बहुत ज़ोर की बारिश शुरू हो गयी। राजा को इतनी

भारी बारिश का उस समय आशा ही नहीं था सो वह उसके लिये तैयार नहीं था।

अब क्योंकि वह लम्बी सवारी कर के आ रहा था तो कीचड़ की वजह से उसका हुलिया बहुत खराब हो गया था। जब वह अपने महल में घुसा तो वह राजा की बजाय एक मजदूर जैसा लग रहा था। दरवाजे पर जो सन्तरी आदि खड़े रहते हैं उन्होंने भी उसको नहीं पहचाना सो उन्होंने उसको वह शाही सैल्यूट भी नहीं मारा जो राजा को दिया जाता है।

रानी ने जब राजा की हालत के बारे में सुना तो जब राजा ने अपने गीले और कीचड़ भरे कपड़े बदल लिये और वह उसके कमरे में गया तो वह उससे बहुत गुस्से में मिली।

राजा ने पूछा — "प्रिये तुम इतना गुस्सा किसलिये हो।"

वह बोली — "माई लौर्ड और राजा, मैं यह बिल्कुल नहीं चाहती कि आप यह सब काम करें। ये काम अब आपके इस उम्र और ओहदे के लायक करने के नहीं हैं। अब आप अपने बेटों को यह काम क्यों नहीं सौंप देते।

वे अब बड़े हो गये हैं। वे काफी अक्लमन्द भी हैं और अच्छे भी हैं। मैं आपसे विनती करती हूॅ कि अब ऐसे काम आप बच्चों को दे दीजिये। इससे मेरी आपके लिये चिन्ता भी कम हो जायेगी और राज्य के काम का भी नुकसान नहीं होगा। इसके अलावा वे लोग भी राज्य का काम करना सीखेंगे।"

राजा बोला — "यह तुमने ठीक ही कहा है प्रिये। यही ज़्यादा ठीक रहेगा कि मैं ये सब काम अब उन जवान हाथों को दे दूँ जो मुझसे भी ज़्यादा अक्लमन्द और मेहनती हैं। वे भी किसी दिन राजा और राज करने वाले बनेंगे। उनको भी यह सब काम सीखना चाहिये।

जब तक मैं ज़िन्दा हूँ तब तक कम से कम मैं उनको बताता रहूँगा और उनकी सहायता करता रहूँगा कि जब वे राज करें तब उनको क्या करना चाहिये। मैं अभी उन्हें बुलाता हूँ और अपनी इच्छा बताता हूँ।"

सो राजा ने अपने चारों बेटों को तुरन्त बुलाया और जब वे आ गये तो उसने रानी से हुई अपनी बातचीत उनको बतायी कि उसने अपना यह रात को घूमने वाला काम अब उनको देने का फैसला किया है।

चारों राजकुमारों को यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई कि राजा को उन पर पूरा विश्वास है और वे भी अब राजकाज में राजा का हाथ बॅटाने के काबिल हो गये हैं। उन्होंने राजा को विश्वास दिलाया कि राजा उनके काम में कभी भी कोई ढील या कमी नहीं पायेगा जिससे उसके विश्वास को ठेस पहुॅचे।

उसी दिन से रात को उन्होंने अपना काम शुरू कर दिया यानी उसी रात से अब वे वेश बदल कर गॉव गॉव शहर शहर यह देखने

के लिये चक्कर काटने लगे कि उनके राज्य में कोई दुखी तो नहीं था या किसी को किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं थी।

उनमें से हर एक को इस तरह चक्कर काटना था और अगर कोई खास बात देखे तो वह बात आ कर राजा को बतानी थी। अब इस तरह की सख्त निगरानी में राज्य का खुशहाल और शान्तिपूर्ण रहना तो जरूरी था।

पर इन राजकुमारों के खिलाफ धोखाधड़ी के बीज तो राजमहल में बोये जा रहे थे। रानी की जलन राजकुमारों के लिये रोज ब रोज बढ़ती ही जा रही थी। उससे जितना भी हो सकता था वह उतने तरीके से उनके खिलाफ जालसाजी करती रहती थी।

पहले तो राजा ने उसके झूठे इलजाम और बेरहम इच्छाऐं सुनी नहीं पर बाद में उसकी चतुरायी और सुन्दरता का जादू उस पर चल गया क्योंकि रानी बहुत सुन्दर भी थी और चतुर भी।

राजकुमारों ने देखा कि राजा अब उनकी तरफ से काफी बदल गया था। राजा ने अपने चारों बेटों से कठोरतापूर्वक बोलना शुरू कर दिया था। अक्सर वह उन पर शक भी करने लगा था।

इस विश्वास की कमी ने राजा का उनके लिये प्यार भी कम कर दिया और इसी वजह से राजकुमारों की मेहनत भी कम होने लगी। वे अब अपना काम ठीक से नहीं कर पाते थे।

यह सब काफी समय तक चलता रहा। आखिर वे दिन के झगड़ों से और रात के पहरे से तंग आ गये तो एक दिन वे चारों

आपस में मिले कि इस बारे में उन्हें क्या करना चाहिये। उन्होंने अपनी यह मीटिंग आधी रात को की और जंगल के ऐसे हिस्से में की जहाँ कोई आता जाता नहीं था।

हर राजकुमार ने अपनी दुखभरी कहानी सुनायी और सिवाय सबसे बड़े भाई के सब भाइयों ने यह नतीजा निकाला कि "मेरी सलाह यह है भाइयो कि हम देश के इस हिस्से से कहीं और चले जायें जहाँ भी परमेश्वर हमें ले जाये और फिर जो होगा सो देखा जायेगा भुगतेंगे।"

सबसे बड़े राजकुमार ने कहा — "ऐसा नहीं करो मेरे भाइयो ऐसा नहीं करो। तुम सब यहीं रुको। यह क्या बेवकूफी तुम लोगों ने अपने दिल में पाल रखी है। ऐसा नहीं करो। मैं तुम्हें बताता हूँ कि हमें क्या करना चाहिये।

तुम लोग जानते ही नहीं कि तुम लोग क्या कह रहे हो। अगर तुम समझदारी से काम लो तो तुम लोगों को ऐसी बात कभी करनी ही नहीं चाहिये। सो नहीं पाने की वजह से तुम्हारी अक्ल भी चली गयी है। समझदारी की हालत में तुमको ऐसी बातें नहीं करनी चाहिये।

क्या एक बहुत बड़े और अच्छे राजा के जो राजगद्दी पर बैठा हो उसके बच्चों को इस तरह उसका हुक्म न मान कर नीच लोगों की तरह से भाग जाना चाहिये। नहीं कभी नहीं। मैं तुमसे फिर कहता

हूँ कि इस देश को छोड़ कर कहीं नहीं जाना। कभी ऐसा विचार अपने मन में भी नहीं लाना।

जाओ अब तुम सब अपने घर जाओ और जा कर सो जाओ। इस रात मैं पहरा दूँगा। कल को कोई दूसरा पहरा देगा परसों को तीसरा और फिर चौथा। इस तरह हम लोगों को काफी आराम मिल पायेगा और इस पहरे का काम भी हमेशा ठीक से होता रहेगा।"

कह कर सबसे बड़े राजकुमार ने सबको विदा कहा और अपने पहरे पर चला गया बाकी सब राजकुमार भी अपने अपने घर चले गये। वे अपने बड़े भाई की सलाह से बहुत प्रभावित थे सो उनका भी दुख जाता रहा और वे भी जा कर तुरन्त ही सो गये।

अगली रात दूसरा राजकुमार पहरे पर गया और पहले राजकुमार ने आराम किया। तीसरी रात तीसरा राजकुमार पहरे पर गया और चौथी रात को सबसे छोटा राजकुमार पहरे पर गया जबकि दूसरे राजकुमार सोते रहे।

यह सब भी कई महीनों तक चला और सफलतापूर्वक चला। राजकुमार अपने पिता की बेरहमी को बहादुरी से सहते रहे और वैसे ही करते रहे जैसा कि राजा चाहता था।

उनकी पवित्रता अच्छाई और लोगों की परेशानियों की तरफ ध्यान की सब लोग बड़ाई करते थे सिवाय राजा और रानी के जो उनकी बुराई करते थे।

यह तो नहीं पता कि यह कितना सच है कि "जिनमें सच्चे गुण होते हैं देवता हमेशा उनको इनाम देते हैं।" पर —

एक रात सबसे बड़ा राजकुमार अपने पहरे पर था तो वह एक मकान के पास पहुँचा जिसमें एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। राजकुमार ने उनको उनकी खुली हुई खिड़की से देखा। जब वह उनको देख रहा था तभी ब्राह्मण ने उठ कर दरवाजा खोला और बाहर आया।

उसने रोज की तरह से आसमान की तरफ देखा और जैसे ही उसने ऐसा किया कि वह घर के अन्दर "त्राहि त्राहि"[23] कहता हुआ भाग गया। उसकी पत्नी ने परेशान हो कर पूछा "क्या हुआ।"

ब्राह्मण बोला — "मैंने अपने राजा का तारा किसी और तारे से लड़ता हुआ देखा।"

पत्नी ने पूछा — "तो इसका क्या मतलब हुआ।"

ब्राह्मण बोला — "इसका मतलब यह है कि आज से सातवें दिन हमारा राजा मर जायेगा।"

यह सुन कर ब्राह्मणी की ऑखों में ऑसू आ गये। वह रोती हुई बोली — "क्या? राजा मर जायेगा? राजा कैसे मर जायेगा बीमारी से या किसी दुश्मन के मारने से?"

ब्राह्मण बोला — "आज से सातवें दिन रात के पहले प्रहर के बाद एक जहरीला काला सॉप आसमान से उतरेगा और राजा के

[23] Means "Have mercy, Please protect me"

सोने के कमरे के पूर्व की तरफ के ऑगन में खुलने वाले दरवाजे से कमरे में घुसेगा। यह सॉप राजा के कमरे में घुस कर राजा के पैर के अँगूठे में काट लेगा और राजा मर जायेगा।"

ब्राह्मणी बोली — "पर यकीनन ऐसा नहीं होना चाहिये। क्या राजा को इस तरह की मौत से बचाया जा सकता है। अगर इसका कोई तरीका हो तो मुझे बताओ। सच पूछो तो ऐसे न्यायपूर्ण और चतुर राजा को इस तरह से नहीं मरना चाहिये।"

ब्राह्मण बोला — "देवता ही ऐसे भयानक नुकसान को बचा सकते हैं। मुझे कुछ ग्यव[24] और कुछ लकड़ी दो ताकि मैं उसके लिये देवताओं को कोई भेंट दे सकूँ।

क्योंकि शास्त्रों में लिखा है कि अगर किसी आदमी को राजा की बदकिस्मती का पता चल जाये और अगर वह उस समय देवताओं को भेंट दे तो उस राजा को उसकी बदकिस्मती से बचाया जा सकता है नहीं तो राजा नहीं बचेगा। कौन जाने कि हमारा राजा हमको वापस मिल जाये।"

ऐसा कह कर ब्राह्मण ने कुछ लकड़ियॉ लीं उनमें आग जलायी और उसमें ग्यव डाला। उसने बहुत सारी प्रार्थनाऐं कीं और बहुत सारी आहुतियॉ दीं फिर उठ कर अपनी पत्नी से बोला — "राजा की जान बच जायेगी अगर उसका कोई सम्बन्धी इन बातों का पालन करेगा तो।

---

[24] Gyav – clarified butter (Ghee).

वह आदमी जो भी इस काम को करना चाहे महल के पूर्व की तरफ वाले आँगन में कुछ गड्ढे खोदे। उनमें से कुछ वह पानी से भर दे और बाकी बचे गड्ढे दूध से भर दे। फिर वह इन सब गड्ढों में और उस रास्ते पर जो राजा के सोने के कमरे तक जाता है बीच बीच में फूल डाल दे।

इसके बाद जब साँप के आने का समय हो तो वह तलवार ले कर दरवाजे पर खड़ा हो कर वहाँ उसका इन्तजार करे।

साँप वहाँ जरूर आयेगा। वह पानी और दूध के गड्ढों में तैरता हुआ रास्ते पर आयेगा जहाँ वह फूलों के ऊपर से हो कर दरवाजे तक पहुँचेगा। तब तक वह किसी को नुकसान पहुँचाने के लायक नहीं रहेगा।

जब साँप दरवाजे पर आये तो वह आदमी जिसने इस काम को करने का जिम्मा ले रखा है और जो तलवार लिये दरवाजे पर खड़ा है तुरन्त ही उसे तलवार से मार दे। साँप को मारने के बाद वह उसका थोड़ा सा गर्म खून ले और राजा के कमरे में जा कर उसे राजा के पैर की उँगलियों पर मल दे।

इस तरीके से राजा इस बदकिस्मती से बच जायेगा। पर अफसोस यह काम करेगा कौन?"

राजकुमार जिसकी उत्सुकता पल पल बढ़ती जा रही थी वहीं खिड़की के पास खड़ा हुआ यह सब सुन रहा था। उसे यह सब सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ।

सुबह को जब वह घर आया तो उसने रात की बात अपने तीनों भाइयों को बतायी पर उन्होंने इस बात की भनक भी राजा के कानों तक नहीं पहुँचने दी। अगली छह रात राजकुमार बारी बारी से पहरे पर जाते रहे।

पर सातवीं रात सबसे बड़े राजकुमार ने फिर से पहरे पर जाने की इच्छा प्रगट की हालाँकि उस दिन उसकी बारी नहीं थी। वह केवल अपने पिता को बचाना चाहता था।

सो वह पहरे के लिये गया और राजा के सोने के कमरे के पूर्व की तरफ के ऑगन में उसने कुछ गड्ढे खोदे। कुछ को उसने पानी से भरा और कुछ को दूध से। फिर उसने उस रास्ते पर जो राजा के कमरे तक जाता था फूल बिखेर दिये।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो वह नंगी तलवार ले कर राजा के कमरे के पूर्वी दरवाजे पर खड़ा हो कर सॉप का इन्तजार करने लगा। यह सब उसने तब किया जब राजा और रानी सोने चले गये।

रात का पहला प्रहर मुश्किल से ही गुजरा होगा जब राजकुमार ने जो दरवाजे पर चौकन्ना खड़ा था एक आवाज सुनी जैसे ऊपर से कुछ गिरा हो। फिर उसने किसी जानवर के पानी और दूध भरे गड्ढों में से चलने की बहुत धीमी सी आवाज सुनी। और उसके बाद किसी के उन फूलों में से दौड़ने की आवाज जो उसने राजा के कमरे तक आने वाले रास्ते पर बिछाये थे।

और तब उसने देखा कि एक सॉप उसकी तरफ लहराता हुआ चला आ रहा था। उसको देखते ही राजकुमार की पकड़ तलवार पर मजबूत हो गयी और पल भर में ही उसने उससे सॉप के दो टुकड़े कर दिये।

फिर उसने तुरन्त ही उसका गर्म खून लिया और अपनी ऑखों पर पट्टी बॉध कर बिना किसी आवाज के राजा के सोने के कमरे का दरवाजा खोला और उसमें घुसा। उसने अपनी ऑखों पर पट्टी इसलिये बॉध रखी थी ताकि वह अपने पिता के प्राइवेट कमरे को न देख सके।

सावधानी से उसने राजा के पैर की उॅगलियों को महसूस किया और जब उसने उन्हें पकड़ लिया जैसा कि उसने सोचा कि वे राजा के पैर की उॅगलियॉ थीं उसने उनमें से कुछ पर वह खून मल दिया। पर वह यह देख नहीं सका कि वह क्या कर रहा था। उनमें से कुछ उॅगलियॉ रानी की थीं।

जैसे ही उसने रानी की उॅगलियों को छुआ तो रानी की ऑख खुल गयी। रानी की नींद बहुत हल्की थी वह बहुत जल्दी जाग जाती थी। जब उसने देखा कि एक आदमी उनके सोने के कमरे से बाहर निकल रहा था तो वह चीख पड़ी। इससे राजा की ऑख खुल गयी।

फिर रानी ने देखा कि कुछ खून उसके पैरों की उॅगलियों पर लगा है तो उसको लगा कि शायद कोई राक्षस उसके कमरे में आया

था। वह डर के मारे पागल सी हो गयी। राजा की भी ऑख ठीक उसी समय खुली जब उसका बड़ा बेटा कमरे से बाहर जा रहा था सो उसने भी किसी को बाहर जाते देखा।

राजा चिल्लाया — "हॉ जैसा तुमने कहा यह ठीक है। मुझे अब अपने बेटों की धोखाधड़ी और नीचता पर विश्वास हो गया है। कल ही मैं उन चारों को मरवाने का हुक्म देता हूॅ। ऐसे नीच लोगों को ज़िन्दा रहने का कोई अधिकार नहीं है।"

रानी ने भी मौका देख कर राजा की हॉ में हॉ मिलायी। जब वह इस धक्के से ठीक से बाहर आ गयी तो उसने राजा को वह सब बताया जो उसने सुना था और साथ में उसने उसमें कुछ और भी मिर्च मसाला मिला दिया। उसने राजा को खून लगे अपने पैर भी दिखाये।

यह सब सुन कर और राजा ने खुद भी जो कुछ देखा था उसे मिला कर उसने निश्चय किया कि वह इन चारों को जल्दी से जल्दी सजा देगा।

उसने कहा — "बेशक जब मेरे लड़कों ने देखा कि वे अपनी ज़िन्दगी में खुद मुझे कोई नुकसान नहीं पहुॅचा पा रहे हैं तो उन्होंने राक्षसों की सहायता ली। अच्छा हुआ भगवान ने हमें बचा लिया।"

यह सुन कर रानी की खुशी की कोई हद नहीं थी। उसने सोचा आखिर उसकी इच्छा पूरी हो ही गयी। उसकी ऑखों में चमकीले सपने तैरने लगे। उसने देखा कि उसके अपने बेटे बड़े चतुर और

अक्लमन्द हो कर उस देश पर राज कर रहे हैं। देश के सारे लोग उनकी बड़ाई कर रहे हैं और दूसरे देश उनकी इज़्ज़त कर रहे हैं। वह बड़े उतावलेपन से उस दिन का इन्तजार करने लगी जब उसकी इस इच्छा को पूरी होने में जो जो कठिनाइयाँ हैं वे दूर हो जायेंगी।

अगली सुबह ही राजा अपने काउन्सिल वाले कमरे में गया अपने दोस्तों रिश्तेदारों और सलाहकारों को बुलवाया और अपने चारों बेटों को जो अब बन्दी थे अपने सामने लाने के लिये कहा।

उनके शाही कपड़े उतरवा लिये गये थे। उनके हाथ जेल की सीली और गन्दी दीवारों को छूने से गन्दे हो गये थे जहाँ वे करीब करीब सारी रात बन्द थे। वे बहुत दयनीय हालत में लग रहे थे पर फिर भी वे दुखी नहीं थे। उनके चेहरों पर आशा की मुस्कुराहट खेल रही थी।

जब चारों राजकुमार उस कमरे में घुसे तो उस कमरे में चुप्पी छायी हुई थी। वे उस जगह की तरफ बढ़े जहाँ उनको खड़े हो कर अपना फैसला सुनना था। कुछ मिनटों बाद ही राजा ने गुस्से में भर कर काँपते हुए कहा कि जो कुछ भी उन्होंने किया उसकी सजा मौत है इसलिये उनको माफ नहीं किया जा सकता और उसने उनको मारने की सजा सुना दी।

सजा सुनने के बाद सजा देने वाले राजकुमारों की तरफ बढ़े और उन्होंने उन्हें पकड़ा तो वहाँ बैठे कुछ मन्त्रियों और लोगों ने पूछा कि राजकुमारों का जुर्म क्या था।

पर राजा ने उनकी कोई बात नहीं सुनी। उसने कहा — “अभी तो इनको मार दो इनका जुर्म मैं बाद में बताऊँगा।”

इसी पल एक राजकुमार ने अपना हाथ उठा कर इशारा किया और सिंहासन के सामने लेट गया जैसे वह कुछ कहना चाहता हो। राजा बोला — “इसको बोलने दो। शायद यह अपने दिल के बुरे भेदों को खोल देना चाहता है। बोलने दो इसको बोलने दो।”

राजकुमार बोला — “ओ बड़े और दयालु राजा मेरे पिता। इससे पहले कि मैं मरूँ और आप मेरी मौत पर पछतायें आप मेरी यह कहानी सुनें।

बहुत पुरानी बात है कि एक व्यापारी था जिसके एक अकेला बेटा था। वह बहुत ही अच्छा था हर काम में बहुत होशियार था। एक दिन उसके पिता ने सोचा कि उसको दुनियाँ का अनुभव कराया जाये सो उसने उसको एक लम्बी विदेश यात्रा के लिये तैयार किया। वह उसको कुछ माल ले कर विदेश भेजना चाहता था।

एक हफ्ते के अन्दर अन्दर वह लड़का अपनी यात्रा के लिये तैयार हो गया और यात्रा पर चल दिया। अपनी यात्रा में वह बहुत सारे अजीब अजीब लोगों से मिला और उसने बहुत सारी अजीब अजीब चीज़ें देखीं।

मैं राजा और यहाँ पर मौजूद लोगों का बहुत सारा समय उस यात्रा का हाल बताने में लगा सकता हूँ पर इस समय यहाँ मैं केवल एक घटना को ही बताने की इजाज़त चाहूँगा।

अपनी यात्रा के बीच वह नौजवान व्यापारी चार आदमियों से मिला जो एक कुत्ते के ऊपर आपस में बहुत ज़ोर से लड़ रहे थे। वे उस कुत्ते को बहुत ही बेरहमी से अपनी अपनी तरफ खींच रहे थे।

उसने पूछा — "आप लोग एक कुत्ते पर इस तरह से क्यों लड़ रहे हैं।"

उनमें से एक ने कहा — "हम चारों भाई हैं। हमारे पिता अभी कुछ दिन हुए मर गये हैं। हम लोग उनके छोड़े हुए सामान को आराम से बॉटने के इन्तजाम में लगे हुए हैं। बाकी सब सामान तो ठीक से बॅट गया बस अब यह कुत्ता रह गया बॉटने के लिये।

हम लोगों ने एक एक गाय ले ली बराबर चावल ले लिया दूसरे अनाज भी बॉट लिये भेड़ बकरियॉ भी बराबर बराबर बॉट लीं पर इस कुत्ते को हम नहीं बॉट सकते ताकि यह हमें बराबर बराबर मिल जाये।

इसलिये सबसे बड़ा भाई कहता है कि इसे मैं लूॅगा और उसको पकड़ने की कोशिश करता है। मैं चाहता हॅू कि इसे मैं लॅू सो मैं इसे अपनी तरफ खींचता हॅू। मेरे दूसरे दोनों भाई भी इसको लेना चाहते हैं सो वे भी इसको लेने के लिये इसको अपनी तरफ खींचते हैं।

तुम सोच रहे होगे कि ये चारों इस छोटी सी बात पर क्यों लड़ रहे हैं पर बात यह है कि यह कोई मामूली कुत्ता नहीं है। हम लोगों में से कोई भी अपना हक इस कुत्ते पर से छोड़ देता अगर उसको यह पता न होता कि यह कोई मामूली कुत्ता नहीं है।

हमारे पिता ने जब वह मरे थे तो हमसे कहा था कि हम इसे बीस हजार रुपये का बेचें पर कोई भी हमें इस कुत्ते का इतना पैसा देने को तैयार नहीं है।

हम इसको बाजार ले कर गये और इसकी कीमत बतायी तो लोग हम पर हॅसने लगे। कुछ ने सोचा कि हम पागल हैं। कुछ ने कहा कि क्या हम मजाक कर रहे हैं। और कुछ ने हमारी इस बेवकूफी के लिये हमें मारा भी।"

नौजवान व्यापारी बोला — "बड़ी अजीब सी कहानी है। क्या तुम लोग इसे कुछ कम दाम में नहीं बेच सकते?"

चारों भाइयों ने एक आवाज में कहा — "नहीं। हम अपने मरे हुए पिता की आज्ञा को नहीं टाल सकते जिन्होंने हमें इस बारे में खास हिदायत दी थी।"

नौजवान व्यापारी ने उन पर विश्वास किया और यह सोचते हुए कि यह कुत्ता किसी न किसी तरीके से मामूली कुत्ता नहीं होगा वह बोला — "ठीक है मैं इसको खरीद लेता हॅू।"

इसके अलावा उसके पिता ने उसको चेतावनी भी दी थी कि वह अपने पहले सौदे के मौके को खोये नहीं चाहे वह उसके फायदे का हो या उसमें उसको कोई नुकसान हो। उसने तुरन्त ही उनको पैसे दिये और वह कुत्ता उनसे ले लिया। आगे के पूरे रास्ते वह अपने व्यापार में फलता फूलता रहा।

कुछ साल बाद वह अपने पिता के पास एक बहुत ही अमीर और अनुभवी व्यापारी बन कर लौटा। अपनी यात्रा से लौटे हुए उसे अभी कुछ ही समय हुआ था कि उसके पिता चल बसे।

बिज़नैस के हिसाब किताब में कुछ घपला होने की वजह से वह कुछ ही दिनों में बहुत गरीब हो गया। पहने हुए कपड़ों के अलावा अब उसके पास और कुछ भी नहीं बचा था सिवाय कुत्ते के जो उसने इतना मॅहगा खरीदा था।

इस दुख की घड़ी में वह एक और व्यापारी के पास गया जो उसके परिवार का बड़ा अच्छा दोस्त था। उससे उसने उस कुत्ते के ऊपर पन्द्रह हजार रुपये उधार मॉगे। इस व्यापारी ने उसको तुरन्त ही रुपये दे दिये। यह पैसा ले कर नौजवान व्यापारी ने कुछ व्यापार किया और कुछ ही दिनों में थोड़ा पैसा कमा लिया।

इस बीच दूसरा व्यापारी उस कुत्ते को बहुत प्यार करने लगा। वह उसको दिन भर अपने साथ रखता और रात को उसे अपने ऑगन में गड़ी एक खूॅटी से बॉध देता। कुत्ता भी अपने नये मालिक से बहुत प्यार करता था और जब वह उसके साथ नहीं होता था तो खुश नहीं रहता था।

एक रात उस जानवर की वफादारी का इम्तिहान हो गया। जब हर आदमी सोया हुआ था और चारों तरफ घनघोर ॲधेरा छाया हुआ था कुछ डाकू उस व्यापारी के घर में आ गये। हालॉकि वे

बड़ी चुपचाप उसके घर में आये थे लेकिन कुत्ते के कानों ने उनके आने की आवाज सुन ली।

उसने बड़ी ज़ोर ज़ोर से भौंक कर घर के लोगों को जगाने की कोशिश की पर कोई नहीं जागा। वह भौंकता रहा ज़ोर ज़ोर से भौंकता रहा जब उसने देखा कि डाकू घर में घुस गये तो वह बहुत ज़ोर से अपनी जंजीर को अपनी पूरी ताकत से तोड़ने के मतलब से उनकी तरफ दौड़ा।

आखिर जब डाकू उस व्यापारी का सामान ले कर वहॉ से बाहर जा रहे थे कुत्ते की जंजीर टूट गयी। कुत्ता भागा भागा गया और वह उन पर कूद पड़ता कि उनके हाथों में हथियार देख कर रुक गया।

उसको लगा कि इस तरह तो वह मारा भी जा सकता है। पर उसके मारे जाने से तो उसका उद्देश्य पूरा नहीं होता था। उसने सोचा कि इससे अच्छा तो यह है कि वह उनका पीछा करे और यह देखे कि उन्होंने उसके मालिक की चीज़ें कहॉ छिपायी हैं।

डाकू लोग जल्दी जल्दी चल कर बहुत दूर एक जंगल में चले गये और वहॉ जा कर एक बड़ा सा गड्ढा खोद कर उस व्यापारी का सामान उन्होंने उसमें गाड़ दिया। उन्होंने सोचा जब डाके की खबर कुछ शान्त पड़ जायेगी तब वे फिर कभी वहॉ आयेंगे और उन चीज़ों को निकाल लेंगे।

सामान गाड़ कर डाकू तो चले गये पीछे से कुत्ता वहॉ आया और अपने पंजों से वहॉ की जमीन खरोंची ताकि वह उस जगह को फिर पहचान सके और वहॉ से चला गया।

अगली सुबह जब व्यापारी उठा तो उसने देखा कि उसका सामने का दरवाजा तो चौपट खुला पड़ा है। उसके बक्से और आलमारियॉ भी खुले पड़े हैं। उनमें रखी चीज़ें इधर उधर बिखरी पड़ी हैं।

अपने घर को इस हालत में देख कर वह रो पड़ा और बोला कि लगता है कि रात को डाकू आये थे और उसका सारा सामान ले गये। उसके चिल्लाने की आवाज सुन कर उसके पड़ोसी भी आ गये वे भी उसके साथ साथ रोने लगे।

उनमें से एक आदमी बोला — "अफसोस हमने कुत्ते के भौंकने पर ध्यान दिया होता।"

दूसरा बोला — "यकीनन उसने तुम्हें जगाया भी होगा।"

बेचारा व्यापारी बोला — "नहीं।"

जब कुत्ते का जिक्र आया तो व्यापारी ने कुत्ते को अपने सामने बिठा कर उसे पागलों की तरह प्यार करते हुए उससे कहा — "काश तू बोल सकता और मुझे बता सकता कि कौन मेरा सामान ले गया।"

इस पर कुत्ता व्यापारी के कुरते की दॉयी आस्तीन अपने दॉतों में पकड़ कर खींचते हुए उसे दरवाजे की तरफ ले जाने लगा। यह

देख कर एक पड़ोसी बोला — "शायद यह कुत्ता जानता है कि उन्होंने तुम्हारा सामान कहाँ छिपाया है। मेरी मानो तो तुम इसके पीछे पीछे जाओ।"

व्यापारी मान गया और कुत्ते के पीछे पीछे चल दिया। कुत्ता उसको बहुत दूर जंगल में वहाँ ले गया जहाँ डाकुओं ने उसका सामान गाड़ा था। वहाँ जा कर उसने जमीन खरोंचनी शुरू की और उसकी मिट्टी निकाल कर ज़ोर ज़ोर से बाहर फेंकने लगा।

व्यापारी ने भी अपने दोस्तों के साथ उस जगह को खोदा तो उसको वहाँ अपनी चुरायी हुई चीज़ें मिल गयीं। व्यापारी तो यह देख कर बहुत ही खुश हो गया।

जैसे ही उसको अपनी चीज़ें वापस मिलीं उसने उनको घर में ला कर एक सुरक्षित जगह ला कर रख दिया और उस नौजवान व्यापारी जिसका यह कुत्ता था उसको लिखा — "ओ अक्लमन्दी बहादुरी और अच्छाई के घर और सबके प्यारे आदमी तुमको मेरा सलाम। यह कहने के बाद कि मैं तुमसे मिलने के लिये बहुत उत्सुक हूँ मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं तुम्हारा हमेशा कृतज्ञ रहूँगा।

कुछ समय पहले तुमने मुझे एक कुत्ता दिया था। उस कुत्ते ने आज मुझे बर्बाद होने से बचा लिया। मैं तुमसे एक विनती करता हूँ कि तुम उसे मुझे बेच दो।

तुम उसे मुझे **30** हजार रुपये में दे दो। पन्द्रह हजार तो मैं तुम्हें दे ही चुका हूँ **15** हजार का एक चैक मैं तुम्हें इस चिट्ठी के साथ भेज

रहा हूँ। अगर तुम मेरी यह विनती मान लोगे तो मैं तुम्हारे लिये आशीर्वाद की हमेशा दुआ माँगता रहूँगा।"

यह चिट्ठी लिख कर उसने बन्द की और उस कुत्ते के मुँह में दे कर उसके पुराने मालिक के पास भेज दिया।

जब नौजवान व्यापारी ने अपने कुत्ते को अपने घर की तरफ आता हुआ देखा तो उसने सोचा कि वह कुत्ता उस व्यापारी के घर से भाग आया है। अब उसका मालिक भी उसके पीछे पीछे जल्दी ही आता होगा और अपना पैसा माँगेगा जो उसके लिये अभी देना आसान नहीं होगा सो उसने उसे मारने का फैसला किया।

उसने सोचा कि जब वह व्यापारी उससे पैसे माँगने आयेगा तो वह उससे कहेगा कि पहले मेरा कुत्ता दो तब में तुम्हारा पैसा दूँगा। वह तुरन्त ही अपनी बन्दूक निकाल लाया और उस पर गोली चला दी। कुत्ता वहीं मर गया।

पर अफसोस बहुत अफसोस। जैसे ही उसने कुत्ता मारा और वह उसको गाड़ने के लिये ले जाने वाला था कि उसके मुँह से व्यापारी की दी हुई चिट्ठी गिर पड़ी। उसने उसे उठा कर खोल कर पढ़ा तो वह तो बेहोश हो कर नीचे गिर पड़ा।"

राजकुमार ने यह कहानी इतने भावपूर्ण ढंग से सुनायी कि राजा और वहाँ बैठे सभी लोगों की आँखों में आँसू आ गये। दरबार में चुप्पी छा गयी।

कुछ पल बाद राजकुमार ने फिर कहा — “राजा साहब आपने हमारी सजा सुनाने में कुछ जल्दी की है। हम लोग उस कुत्ते की तरह ही सीधे सादे हैं। आप उस नौजवान व्यापारी की तरह जिसके बारे में मैंने अभी आपसे कहा अपने इस काम पर पछतायें नहीं इसलिये आप अपने फैसले को दोबारा से सोच समझ लें।”

राजा बोला — “मेरा हुक्म अटल है। मुझे किसी से कुछ नहीं सुनना।”

तब दूसरा राजकुमार राजा के सिंहासन के सामने झुका और राजा से विनती की कि उसको भी कुछ कहने की इजाज़त दी जाये।

राजा ने धीरे से अपना हाथ हिलाते हुए कहा — “बोलो इजाज़त है।”

तब दूसरे राजकुमार ने शुरू किया — “राजा साहब बहुत पहले की बात है कि एक शिकारी रहता था जो अपना गुजारा जंगल में केवल जंगली जानवर मार कर ही करता था। एक दिन ऐसा हुआ कि उसको जंगल में कोई शिकार नहीं मिला। इससे वह बहुत दुखी था क्योंकि अब उसके घर में कल के लिये कोई खाना नहीं था।

सो वह तीन दिन तक जंगल में इस आशा में इधर उधर घूमता रहा कि शायद उसको कहीं कुछ मिल जाये। आखिर वह एक मकान के सामने आ गया जहाँ कुछ शिकारी बैठे हुए थे।

उन्होंने उससे पूछा कि वह कौन था और कहाँ से आया था। जब उन्होंने यह सुना कि वह खाने की तलाश में था और उसने तीन

दिनों से कुछ खाया पिया नहीं था तो उन्होंने उसको कुछ मॉस और रोटी खाने के लिये दी और उससे वायदा किया कि वे उसको एक ऐसी जगह ले जायेंगे जहॉ उसको शिकार बहुतायत से मिल जायेंगे।

अच्छा खाना खाने के बाद और खूब सो लेने के बाद जब वह ताजादम हुआ तो एक शिकारी उसको एक तरफ ले कर गया। वहॉ जा कर उसने एक बारहसिंगा मारा और कुछ छोटे छोटे शिकार किये। एक दो चिड़िया भी मारीं जिनको दूसरे शिकारी छूना भी पसन्द नहीं करते।

उन्होंने कहा "नहीं नहीं ये तुम्हारे हैं। तुम इनको अपने घर अपनी पत्नी और बच्चों के पास ले जाओ जो अब तक बेचारे भूख से बिलख रहे होंगे। हम तुम्हें अपने साथ देर तक नहीं रखना चाहते क्योंकि तुम अपने घर जाने के लिये बहुत बेचैन होगे। फिर भी हम आशा करते हैं कि हम तुमसे बहुत जल्दी ही मिलेंगे।"

शिकारी ने उनको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि बेशक मैं तुम लोगों से अक्सर मिलता रहूँगा और तुम जैसे दोस्तों की सहायता करने के लिये हमेशा तैयार रहूँगा। अगर तुम सबने मेरी यह छोटी सी सहायता न की होती तो मेरा परिवार तो आज मर ही गया होता। हम तुम फिर मिलेंगे। कह कर वह वहॉ से चला गया।

जब वह अपने घर पहुॅचा तो भूख से उसने अपने परिवार को करीब करीब मरा हुआ ही पाया। वे उसके लौटने का इन्तजार कर रहे थे। इन्तजार करते करते वे बीमार से हो गये थे सो उसने तुरन्त

ही आग जलायी और कुछ माँस उस पर भूना और उन्हें खाने को दिया।

अगले दिन वे कुछ ठीक हो गये थे तो उन्होंने एक दूसरे को अपना अपना हाल बताया। शिकारी ने बताया कि जंगल में उसको कुछ शिकारी मिल गये थे जिन्होंने उसकी सहायता की।

कुछ दिन बाद शिकारी ने अपनी पत्नी से कहा कि वह अपने उन शिकारी दोस्तों से मिलने जंगल जाना चाहता है जैसा कि उसने उनसे वायदा किया था कि वह उनसे मिलने जरूर आयेगा।

सो उसने उनके लिये कुछ भेंटें लीं और उनसे मिलने चल दिया। वे शिकारी उस शिकारी को देख कर बहुत खुश हुए और उससे बड़ा अच्छा बर्ताव किया। वह उनके पास कई दिन ठहरा वहाँ उसने इस बीच बहुत सारे शिकार भी मारे।

वहाँ यह भी तय हुआ कि उस शिकार पार्टी के सरदार की लड़की की शादी उसके लड़के से कर दी जाये क्योंकि इस तरह से दोनों परिवार दोस्ती के अलावा रिश्तेदारी में भी बँध जायेंगे।

कुछ समय बाद दोनों की शादी हो गयी और दुलहा अपने ससुर के घर सोने गया। वह वहाँ गया और जा कर सो गया। बीच रात में गीदड़ के चिल्लाने की आवाज सुन कर दोनों की आँख खुल गयी।

अब ऐसा हुआ कि दुलहिन जानवरों की बोली समझती थी सो वह जागी हुई उनका बोलना सुनती रही। उसने सुना कि एक गीदड़

दूसरे गीदड़ से कह रहा था कि एक लाश नदी में बही जा रही है। उसकी बाँह पर एक ब्रेसलैट है जिसमें पाँच कीमती रत्न जड़े हुए हैं। ऐसा आदमी कहाँ है जो उस लाश को किनारे पर खींच ले और उसका वह कीमती रत्नों वाला ब्रेसलैट निकाल ले।

इस तरह वह तीन अच्छे काम करेगा। एक तो वह नदी को गन्दा होने से बचायेगा। दूसरे वह उन पाँच कीमती रत्नों को नदी में बेकार बहने से बचायेगा और तीसरे हम जैसे गरीब जानवरों को खाना देगा।

दुलहिन ने जब यह सुना तो वह तुरन्त ही अपने बिस्तर से उठी और नदी की तरफ चल दी। उसके पति को उत्सुकता हुई कि वह कहाँ जा रही थी सो वह भी उठ कर उसके पीछे पीछे छिप कर चल दिया। जब वह नदी किनारे पहुँची तो वह पानी में कूद गयी और लाश की तरफ तैर गयी जो चाँदनी में बहुत ही धुँधली दिखायी दे रही थी।

उसने लाश को पकड़ा और पकड़ कर नदी के किनारे ले आयी। उसने उसका वह सुन्दर ब्रेसलैट निकाल लिया जो उसकी एक बाँह पर बँधा था और घर आ गयी।

उसका पति पहले ही घर आ गया था क्योंकि उसने उसका लाश की बाँह से ब्रेसलैट उतारने तक इन्तजार नहीं किया। दुलहिन भी घर आ कर सो गयी। दुलहे ने सोचा कि यह इतनी रात गये

वहाँ नदी के किनारे क्या करने गयी थी। यह सोचते सोचते वह रात भर सो नहीं सका पर उसकी पत्नी खूब गहरी नींद सोती रही।

जैसा कि रिवाज था पति सुबह उठ कर नदी पर नहाने गया तो उसकी तो डर के मारे जान ही निकल गयी। वह डर और घृणा से देखता रह गया कि वहाँ एक आदमी की आधी खायी हुई लाश उसी जगह पड़ी हुई थी जहाँ कल रात उसकी पत्नी पानी में कूदी थी।

उसके मुँह से निकला कि क्या उसकी पत्नी राक्षसी थी। उसने उसके शरीर का कुछ हिस्सा खा लिया था और यकीनन वह आज रात को इस बचे हुए हिस्से को खाने वापस आयेगी।

यह सोच कर वह उसके पास जाने से डरने लगा और वह उसके घर न जा कर फिर अपने पिता के घर लौट गया। घर पहुँच कर उसने अपने पिता से कहा — “पिता जी आपने मेरी शादी एक राक्षसी से क्यों की। मुझे पूरा यकीन है कि वह एक राक्षसी है क्योंकि कल रात वह एक आदमी को मार कर उसे खा कर आयी थी।

अगर आपको इस बात का यकीन न हो तो आप नदी के किनारे जा कर वहाँ पड़ी हुई एक आदमी की आधी खायी हुई लाश देख सकते हैं। ओह मैं भी कितना बदकिस्मत हूँ।”

जब शिकारी ने यह सुना तो उसे लगा कि या तो उसका बेटा सच नहीं बोल रहा या फिर वह पागल हो गया है सो उसने जल्दी से जल्दी ही इस मामले की छानबीन करनी शुरू की।

वह अपनी बहू के घर गया। जब वह उसके घर से थोड़ी ही दूर पर था तो उसकी बहू का पिता और परिवार के कुछ और लोग उसका स्वागत करने के लिये वहाँ तक आये। उन्होंने उससे उसके बेटे के वहाँ से अचानक चले जाने की वजह भी पूछी।

जब तक कि बहू के बारे में सच न पता चल जाये शिकारी ने बात को टालने के ख्याल से उनको अपने बेटे के बारे में कोई भी चिन्ता करने से मना कर दिया क्योंकि वह तो सुरक्षित रूप से उसके घर पर ही मौजूद था।

उसने कहा कि उसका लड़का बहुत बड़ा नहीं था इसलिये उसने उसे जल्दी ही घर वापस आने के लिये कह दिया था। उसने कहा कि उसको आशा थी कि वह उसके इस अजीब व्यवहार के लिये उसे माफ करेंगे और बहू को उसके साथ भेज देंगे।

दूसरे शिकारी इस बात से सन्तुष्ट हो गये और उन्होंने बहू को उस शिकारी के साथ उसकी ससुराल भेज दिया। थोड़ा सा खाना खाने के बाद लड़के का पिता शिकारी बहू को साथ ले कर घर चल दिया।

उसने बहुत जल्दी ही उसके पीछे पीछे चलना शुरू कर दिया क्योंकि वह उसके बराबर चलने से डर रहा था ताकि कहीं वह सचमुच में ही राक्षसी न हो और उसे न खा जाये।

इस तरीके से वे कुछ दूर चलते रहे कि लड़की चलते चलते थक गयी और पानी के एक छोटे से तालाब के पास एक बड़े से पेड़

की छाया में बैठ गयी। शिकारी ने अपने इस विचार को बढ़ावा दिया कि शायद उसके बेटे ने कोई बुरा सपना देखा होगा सो वह भी उसके पास ही बैठ गया। उसने लड़की के पिता का दिया हुआ कुछ खाने का सामान निकाला और दोनों खाने लगे।

जब वे इस तरह बैठे हुए थे खा रहे थे और आराम कर रहे थे तो कुछ कौए वहाँ आ कर इकट्ठा हो गये और बहुत ज़ोर ज़ोर से शोर मचाने लगे। वे एक शाख से दूसरी शाख पर और एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूद रहे थे पर उनकी आँखें उन दोनों के पास रखे हुए माँस पर लगी थीं जैसे जैसे ही उनको मौका मिलेगा वे उसको ले जायेंगे।

उनमें से एक कौआ जो बूढ़ा था कुछ दोस्ती सी दिखाना चाह रहा था। उसने कहा कि कौन है वह जो हमारी भाषा सुन सकता है और समझ सकता है। इस पेड़ की जड़ के पास एक बर्तन भर कर कीमती पत्थर हैं और इस बर्तन के नीचे हजारों चींटियाँ हैं जो इस पेड़ को खाये जा रही हैं।

ओह वह आदमी कहाँ है जो इस पेड़ की जड़ के पास से खोद कर वह बर्तन निकाल ले। इससे यह पेड़ भी बच जायेगा और हम भी इस पेड़ की शाखों पर अपना घोंसल बना सकेंगे। इसके अलावा वह खुद भी बहुत अमीर बन जायेगा।

लड़की यह सुन कर एक बार रो लेती और एक बार हँस लेती। यह देख कर उसका ससुर डर गया। उसने सोचा कि वह हँस

और रो इसलिये रही थी क्योंकि वह एक राक्षसी थी और इस तरह से उसे खाने के लिये ध्यान कर रही थी। डर के मारे वह काँपती आवाज में उससे बोला — "तुम किस तरह की औरत हो। अगर तुम राक्षसी हो तो मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझे छोड़ दो।"

ससुर के ये शब्द सुन कर लड़की को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बाली — "पिता जी मैं किसी बुरे स्वभाव की नहीं हूँ। आपने मुझमें ऐसा क्या देखा या मेरे बारे में ऐसा क्या सुना जिसकी वजह से आपने मुझसे यह सवाल किया।"

उसने पूछा — "फिर वह आधी खायी हुई लाश नदी के किनारे कहाँ से आयी और अभी तुम रोयी और हँसी क्यों।"

बहू बोली — "अब मैं आपको क्या बताऊँ। क्या आप केवल इन्हीं वजहों से मुझे राक्षसी समझ रहे हैं। क्या इसी वजह से आपका बेटा और मेरे पति मेरे घर से बिना बताये चले गये। क्या इसीलिये आप मेरे पीछे पीछे चल कर यहाँ तक आये साथ में नहीं।

क्या बेवकूफी थी यह भी। अब आप सच्चाई सुनें। जिस दिन आपका बेटा मेरे पिता के घर रात को आया था उस रात गीदड़ बहुत चिल्ला रहे थे और वे इतना चिल्लाये कि हम दोनों की आँख खुल गयी। वे बहुत देर तक बहुत लम्बी बात करते रहे।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी क्योंकि उन्होंने एक लाश नदी में तैरती देखी थी जिसकी एक बाँह पर एक पाँच कीमती रत्न जड़ा ब्रेसलैट था। मैंने उनकी भाषा समझ ली तो मैंने सोचा क्यों न

मैं वहाँ जा कर उस नदी से वह लाश खींच लाऊँ और उसकी बाँह से वह ब्रेसलैट निकाल लूँ। देखिये यह है वह ब्रेसलैट।"

कह कर उसने वह ब्रेसलैट जो एक मैले से कपड़े में लिपटा हुआ था अपने ससुर को दिखाया। उसने आगे कहा — "वह लाश मैं वहीं छोड़ आयी। हो सकता है कि वे गीदड़ वहाँ बाद में आये हों और उन्होंने उसको खा लिया हो। आप यकीन रखें यह काम मेरा नहीं है।

वही आधी खायी हुई लाश शायद आपके बेटे ने अगली सुबह नदी के किनारे देखी होगी जब वह वहाँ नहाने गये होंगे। क्योंकि मुझे लगता है कि उन्होंने रात को नदी पर मेरा जाना भी देख लिया था। सो उन्होंने सोचा कि मैं राक्षसी हूँ और मैंने ही वह लाश खायी है और यही सोच कर वह भाग गये।"

यह कह कर वह बहुत ज़ोर से हँस पड़ी। शिकारी भी उसकी इस बात पर हँसे बिना न रह सका।

वह फिर बोली — "और अब फिर से। अभी अभी एक कौआ यहाँ एक शाख पर बैठा था और कॉव कॉव कर के यह कह रहा था कि इस पेड़ की जड़ के पास एक बहुत बड़ा खजाना छिपा है। चिड़ियों की भाषा समझ पाने की वजह से ही मैं खुशी से हँसी भी और रोयी भी कि मुझे लगा कि मुझे फिर खजाना मिल जायेगा जिससे मैं अपने परिवार में खुशी भी लाऊँगी और खुशहाली भी।

क्या यह बात ठीक नहीं है। मेहरबानी करके आप यह न सोचें कि मैं राक्षसी या वैसी ही कोई और स्त्री हूँ। मैं आपके बेटे की वफादार पत्नी बनना चाहती हूँ और आप सबका भला करना चाहती हूँ।"

शिकारी यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने अपनी बहू की बात पर विश्वास कर लिया। उसके बाद उन दोनों ने मिल कर पेड़ की जड़ के पास खोदा तो उनको वहॉ बहुत सारे कीमती रत्न और दूसरा खजाना मिला।

यह देख कर शिकारी इतना खुश हुआ कि उसने अपनी बहू को गले लगा लिया और उन दोनों को माफ करने के लिये कहा कि उनको उसके बारे में गलतफहमी हो गयी थी।

खजाना निकाल कर दोनों अपने घर की तरफ चले। वे एक बहुत सुन्दर सड़क से हो कर जा रहे थे। सारे रास्ते छायादार पेड़ खड़े थे। सड़क के किनारे फूल भी लगे हुए थे। इधर उधर से झरने निकल कर बह रहे थे।

शिकारी को प्यास लगी थी सो उसने अपनी बहू से उन झरनों में से एक झरने से पानी लाने के लिये कहा। वह तुरन्त ही उसकी बात मान कर पानी लाने चली गयी। वह पानी लेने के लिये झुकी कि तभी एक मेंढक टर्राया — "भगवान के नाम पर क्या कोई सुन रहा है। इस पानी के नीचे एक खजाना दबा है इसलिये इस पानी में इतने कीड़े हैं।

जो कोई मुझे सुन रहा है तो क्या वह यह खजाना निकालेगा जिससे यह पानी पीने लायक हो जायेगा और यात्री लोग इस पानी को पी पायेंगे। मेंढक भी इस पानी में रह कर आनन्द करेंगे और उनका पेट भी खराब नहीं होगा और जो इस खजाने को निकालेगा वह तो अमीर हो ही जायेगा।"

यह सुन कर बहू तुरन्त ही अपने ससुर के पास गयी और जा कर उसको सब बताया तो उन दोनों ने उस पानी में से खजाना निकाल लिया। वह खजाना निकाल कर शिकारी और उसकी बहू ने अपनी कमर में बॉधा[25] और अपनी यात्रा पर चल दिये।

जब वे अपने घर के पास पहुँचे तो शिकारी ने अपनी बहू से कहा कि वह आगे आगे चले वह उसके पीछे आता है। उसने ऐसा ही किया। जब उसके पति ने उसको अकेले आते देखा तो उसके दिमाग में तुरन्त ही एक विचार आया कि लगता है इसने मेरे पिता को खा लिया है और अब यह मुझे खाने आयी है।

सो उसने अपनी तलवार उठायी और जैसे ही वह इस आशा में अन्दर घुसी कि उसका पति उसका स्वागत करेगा और वह उसको खजाना दिखायेगी। सो बजाय स्वागत करने के उसने उसके ऊपर तलवार चला दी और उसे मार दिया।

[25] Kashmiris have various devices for carrying their money or other little valuables. Sometimes they hide it in their turbans, sometimes in their Kamarband, sometimes in their sleeve-cuffs, sometimes in their ears if the thing is small, sometimes tied up in the small knot in the end of their wrap.

एक घंटे बाद उसका पिता घर पहुँचा तो उसको देखते ही बेटा बोला — "अल्लाह की मेहरबानी है कि आप ज़िन्दा हैं। आपको उस राक्षसी ने नहीं मारा। पर अब आप खुश हो जाइये मैंने उसे मार दिया है। देखिये उसके खून के निशान दरवाजे पर पड़े हैं।"

जब शिकारी ने दरवाजे पर खून के निशान देखे तो वह तो बेहोश हो कर गिर पड़ा। बहुत देर बाद वह होश में आया। उसको बहुत दुख था पर इससे भी बड़ा दुख तो उसके पति को हुआ जिसने जल्दी में अपनी पत्नी की हत्या कर दी थी।"

जब राजकुमार यह कहानी सुना रहा था तो दरबार में पूरी चुप्पी छायी हुई थी। इस कहानी से ऐसा लगा जैसे राजा का दिल कुछ नर्म हुआ।

राजकुमार ने बाद में कहा — "इसलिये राजा साहब हम आपसे विनती करते हैं कि हमको मारने में आप जल्दी न करें। कहीं ऐसा न हो कि आपको भी हमको मारने के बाद पछताना पड़े।"

पर राजा ने अपना दिल पक्का कर लिया था और वह कुछ सुनने के लिये तैयार नहीं था।

तब तीसरा राजकुमार उठा और राजा के सिंहासन के सामने झुक कर उससे बोलने की इजाज़त मॉगी। इजाज़त मिलने पर उसने बोलना शुरू किया — "राजा साहब अब मेरी बात सुनिये। बहुत दिन पहले की बात है कि किस देश में एक राजा रहता था। उसका एक ही शौक था बाज़ पालना। एक बार वह एक जंगल में गया तो

ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ वह पहले कभी नहीं गया था। वह जगह उसको इतनी सुन्दर लगी कि उसने वहाँ अपने तम्बू गाड़ने का हुक्म दे दिया।

जब यह सब हो गया तो राजा को प्यास लगी तो उसने अपने नौकरों को पानी लाने के लिये कहा। रीति रिवाज के अनुसार राजा के दाँये हाथ में एक तलवार थी उसके बाँये हाथ पर एक बाज़ बैठा हुआ था और उसके सामने उसका शाही झंडा था।

नौकर पानी ले कर आया तो जैसे ही राजा पानी पीने को हुआ कि बाज़ ने अपने पंख फड़फड़ाये जिससे उसका पानी का गिलास हिल गया और उसका पानी बिखर गया।

नौकर पानी भर कर दूसरा गिलास ले आया पर बाज़ ने फिर से अपने पंख फड़फड़ाये और राजा के गिलास का पानी फिर से बिखेर दिया। इस बार राजा बहुत गुस्सा हो गया और ज़ोर से चिड़िया को डाँटा।

नौकर फिर गया और राजा के लिये एक गिलास पानी का फिर से ले आया। जैसे ही राजा उससे गिलास ले कर उसे अपने मुँह से लगाने को था कि बाज़ ने फिर पंख फड़फड़ाये और पानी फिर से बिखेर दिया।

अबकी बार राजा बहुत गुस्सा हो गया। उसने अपनी तलवार उठायी और बाज़ को मार दिया।

जब ऐसा कई बार हो गया तो एक वजीर जो यह सब ध्यान से देख रहा था बोला — "राजा साहब ऐसा लगता है कि बाज़ की इस लगातार फड़फड़ाहट की जरूर कोई वजह रही होगी। शायद इस गिलास में ही कुछ खराबी हो।"

राजा को इस बात में कुछ सच्चाई लगी तो उसने उस नदी को जहाँ से उसके लिये पानी लाया गया था अच्छी तरह जाँच करने का हुक्म दिया।

कुछ दूर तक तो कुछ नहीं मिला पर फिर वे जब और आगे बढ़े तो वहाँ एक और छोटी नदी उस बड़ी नदी के पानी में मिल रही थी वहाँ उन्होंने देखा कि पानी कुछ हरे से रंग का है। सो वे उस छोटी नदी की तरफ बढ़ते गये जहाँ से वह आ रही थी। कुछ ही दूर जाने पर उन्होंने वहाँ एक अजगर देखा जिसके मुँह से हरे रंग की लार यानी जहर बह बह कर पानी में मिल रहा था।

यह देख कर वे सब डर गये और अपने कैम्प की तरफ जल्दी से भागे। जब राजा ने यह हाल सुना तो वह अपनी छाती पीट पीट कर बहुत रोया — "ओह मैंने अपने रक्षक को मार दिया। मेरा वफादार बाज़ अब नहीं रहा। ओह मुझे अपनी प्यारी चिड़िया के इस अजीब से व्यवहार की पहले ही जाँच कर लेनी थी तभी कुछ करना था। ओह अब मैं क्या करूँ।"

बाद में राजकुमार आगे बोला — "राजा साहब हमारे पिता जी। हम आपसे विनती करते हैं कि हमको मरवाने से पहले आप इस मामले की अच्छी तरह से जॉच कर लें।"

यह सुन कर राजा कुछ नर्म पड़ा। उसको रानी की कहानी पर कुछ शक सा हुआ हालॉकि उसको यह पता नहीं चला कि वह अपने और रानी के पैरों पर लगे खून का और अपने बड़े बेटे के अपने सोने के कमरे में होने का क्या मतलब निकाले।

अब वह अपने सबसे बड़े बेटे की तरफ पलटा जो अभी तक चुपचाप बैठा था और बोला — "जो कुछ भी कल की रात हुआ अगर तुम मुझे उसका ठीक ठीक जवाब दे कर सन्तुष्ट कर दो तो मैं तुमको और तुम्हारे भाइयों को छोड़ दूॅगा।"

तब राजा का सबसे बड़ा बेटा सिंहासन के सामने आया और सिर झुका कर बोला — "राजा साहब और हमारे पिता, आपकी अच्छाइयॉ और मेहरबानियॉ सब लोगों को अच्छी तरह मालूम हैं। हमको आपकी इस बात का जवाब देने में कोई हिचक नहीं है क्योंकि हमारी आत्मा साफ है। और हमें यह भी यकीन है कि हमारी कहानी सुनने के बाद राजा साहब हमें फिर से अपना वफादार समझेंगे।

आपने हमें राज्य के पहरे की जिम्मेदारी सौंपी थी। सो एक दिन जब मैं पहरे पर था तो एक मकान के पास से गुजर रहा था। उस मकान में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। जब मैं वहॉ

था तो उसी समय ब्राह्मण अपने घर से बाहर निकला और ऊपर आसमान की तरफ देख कर "त्राहि त्राहि" कह कर अपने घर के अन्दर घुस गया।

उस समय ब्राह्मण का यह व्यवहार मुझे कुछ अजीब सा लगा तो उससे आकर्षित हो कर मैं उस घर के पास चला गया। वहॉ मैंने सुना कि ब्राह्मण अपनी पत्नी से कह रहा था कि राजा के तारे को कोई दूसरा तारा नष्ट करने वाला था जिसका मतलब था कि राजा उस दिन से सातवें दिन मर जायेगा।

उन दोनों में आगे जो बात हुई उससे मुझे पता चला कि एक सॉप राजा को मारने के लिये आसमान से नीचे उतरेगा और महल के पूर्वी दरवाजे से राजा के महल में घुसेगा।

ब्राह्मण ने आगे कहा कि राजा के बचने की कोई उम्मीद नहीं है जब तक कि उनका कोई रिश्तेदार महल के ऑगन में कुछ गड्ढे न खोदे और उनको पानी और दूध से न भरे। फिर वह उस रास्ते पर फूल न बिखेरे जिस पर से हो कर सॉप राजा के कमरे में घुसेगा।

जब सॉप आयेगा तो वह उन पानी और दूध भरे गड्ढों में से तैरता हुआ आयेगा फिर फूलों से हो कर आयेगा जिससे उसका जहरीलापन खत्म हो जायेगा।

जो आदमी यह काम करे वह कमरे के दरवाजे पर नंगी तलवार लिये खड़ा रहे और जब वह अन्दर आने की कोशिश करे तो वह

तलवार से उसके टुकड़े कर दे। फिर उसका ताजा गर्म खून राजा के पैरों की उँगलियों पर लगा दे। इससे राजा बच जायेगा।

सो हे राजा साहब हमारे पिता। मैंने यह काम खुद करने का बीड़ा उठाया। मैं ही उस समय महल के पूर्वी दरवाजे पर तलवार लिये खड़ा था। जैसा कि ब्राह्मण ने कहा था मैंने गड्ढे खोदे और उनमें पानी और दूध भरा। सड़क पर फूल बिखेरे। और जैसे ही साँप आया मैंने तलवार से उसके दो टुकड़े कर डाले। फिर उसका गर्म खून आपके पैरों की उँगलियों पर लगा दिया।

मैं आपके प्राइवेट कमरे में आँख खोल कर जाना नहीं चाहता था सो मैंने अपनी आँखों पर पट्टी बाँधी और तब उसके अन्दर घुसा। बस यहीं मुझसे गलती हो गयी। देख न पाने की वजह से मैंने रानी माँ के पैरों पर खून लगा दिया। आपके कमरे में कोई राक्षस नहीं घुसा था पिता जी। वहाँ केवल मैं था।

हे राजा साहब हमारे पिता। आप हमारे ऊपर शक क्यों करते हैं। हम तो आपके असली बेटे हैं। आपने रानी माँ की बात तो सुनी जो अपने बच्चों को यह राज्य दिलवाना चाहती हैं और इसीलिये उन्होंने हमारी बुराई भी की तो अब आप हमारी बात भी सुनिये।

हमने कभी आपको धोखा नहीं दिया और न ही कभी आपको कोई नुकसान पहुँचाने की कोशिश की और न ही आगे ऐसा करने की कोई योजना है।"

यह सुन कर राजा का सिर दुख और शर्म से नीचे झुक गया। उसके बाद राजा अपने चारों बेटों को साथ ले कर वे गड्ढे देखने गया जो उसके बड़े बेटे ने खोदे थे और वह जगह भी देखी जहाँ उसने खून से सना कटा साँप फेंका था।

उसके बाद वह उस ब्राह्मण के घर गया जिसने यह सब बताया था। उसने उससे उस रात के बारे में बहुत सारे सवाल पूछे। सब कुछ सच पाया गया।

यह सुन कर कि किस तरह चारों राजकुमार जिन्हें मौत की सजा मिलने वाली थी छोड़ दिये गये हैं उस रात शहर में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। इन राजकुमारों को राज्य करने के लिये दे दिया गया। सबसे बड़ा राजकुमार राजा बना और राजा के दूसरे बेटे वजीर बने। वे सब बड़े प्रेम से रहे और उनके अच्छे राज में देश खूब फला फूला।

गरीब ब्राह्मण को भी खूब पैसा दिया गया। नीच रानी को राजा ने छोड़ दिया और उसको राज्य से बाहर निकाल दिया। राजा सन्यास ले कर जंगल चला गया। वहाँ राजा बहुत बूढ़ा होने तक ज़िन्दा रहा।

61 जोगी की बेटी[26]

यह एक ऐसे समय की बात है जब देश में सब लोग बहुत दुखी थे। इनमें से एक ब्राह्मण भी था। इस ब्राह्मण को सिवाय पूजा कराने के कोई और काम नहीं आता था इसलिये यह कोई और काम करने के लायक ही नहीं था और कोई इसको कुछ दान भी नहीं देता था। इसलिये उसकी हालत बहुत खराब थी।

अगर उसकी पत्नी कुछ थोड़ा बहुत खाना नहीं कमा लेती तब तो उसका और उसके परिवार का ज़िन्दा रहना ही मुश्किल हो जाता। उसकी पत्नी पड़ोस के एक अमीर घर में रोज चावल कूटने जाती थी।

एक दिन जब वह ब्राह्मण अपनी रोज की पूजा करने जा रहा था तो उसकी पत्नी ने उससे कहा — "तुम कुछ ऐसी पूजा करो न जिससे भगवान हमें कपड़ा और खाना दे दें।"

ब्राह्मण बोला — "ठीक है तुम मुझे कुछ मठरी[27] बना दो। मैं अभी पूजा करने जाता हूँ।" उसकी पत्नी ने उसके लिये कुछ मठरी बना दीं और ब्राह्मण उनको ले कर चला गया।

---

[26] Jogi's Daughter (Tale No 61)

[27] Matharis are small size flat circular biscuits/cookies made of normally white flour with salt or sugar and fried. In Punjabi it is called "Matthi".

वसन्त का मौसम था देश में चारों तरफ फूल खिले हुए थे। ब्राह्मण तेज़ चलते चलते बहुत दूर चला गया। वह थक गया था तो एक सेब के पेड़ के नीचे सुस्ताने के लिये बैठ गया जो पास में ही एक छोटी से नदी के किनारे लगा हुआ था। उसने सोचा यह जगह अच्छी है मैं यहीं अपना ध्यान और पूजा करूँगा। वह वहाँ घंटों तक बैठा बैठा पूजा करता रहा।

फिर वह उठा उसने अपनी मूर्तियाँ वापस थैले में रखीं और वापस लौटने लगा। रास्ते में उसे कुछ धुँआ उठता दिखायी दिया जो धीरे धीरे आसमान की तरफ उठता जा रहा था।

वह उसके पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह एक जोगी की जलायी हुई आग से उठ रहा था। जोगी भी उसके पास बैठा था। सिर झुका कर वह भी उसके पास ही बैठ गया।

जोगी ने अपनी आँखों खोलीं और उससे पूछा कि वह वहाँ क्यों आया था। ब्राह्मण ने उसे बताया कि वह कितना दुखी था और इस आशा में कि किस तरह से किसी खास पूजा करने से देवता खुश होंगे वह इधर से उधर घूम रहा था।

उसकी दुख भरी कहानी सुन कर जोगी बोला — “देखो वहाँ मेरी बेटी बैठी है उसके पास जाओ शायद वह तुम्हारी कुछ सहायता कर सके।” ब्राह्मण को यह बात बड़ी अजीब सी लगी फिर भी वह उसकी बेटी के पास गया और जो उसने जोगी से कहा था वही उससे भी जा कर कह दिया।

लड़की उसका दुख भरा हाल सुन कर बहुत दुखी हुई और बहुत ज़ोर से रो पड़ी। ऑसू उसके गालों से बह बह कर नीचे गिरने लगे। और लो जैसे ही उसका ऑसू जमीन को छूता वह एक बहुत ही चमकदार मोती बन जाता। उसने उससे कहा — "ले लो इनको। ये सब तुम्हारे हैं।"

यह कह कर वह हॅस पड़ी तो लो उसके मुॅह से तो सोने के फूल झड़ पड़े। उसने फिर कहा — "इनको भी ले लो। ये सब तुम्हारे हैं।"

उसके बाद वह उठी और कुछ कदम चली तो लो उसके हर कदम का निशान सोने से ढका हुआ था। उसने कहा — "यह सोना भी बटोर लो। यह भी तुम्हारा है। अब तुम जाओ यह सब तुम और तुम्हारे परिवार के लिये काफी दिनों के लिये काफी है।"

यह देख कर ब्राह्मण बहुत खुश हुआ और वह सोना और मोती ले कर वह अपने घर चला आया। उसे देवताओं का आशीर्वाद मिल गया था। आखिर उसकी प्रार्थना देवताओं ने सुन ही ली थी।

घर आ कर उसने अपनी पत्नी से कहा — "देखो भगवान ने हमारे ऊपर बहुत दया की है। मैं कई घंटों तक उनकी पूजा करता रहा और जब मैं घर लौट रहा था तो आग के पास बैठा हुआ मुझे एक जोगी मिला।"

पत्नी बीच में ही बात काट कर बोली — "बस अब मुझे कुछ और मत बताओ। मुझे मालूम है कि तुम सच नहीं बोल रहे हो।

तुमने ये इतनी सारी चीज़ें कहीं से चोरी से ली हैं। मैं तुम्हारा बिल्कुल भी विश्वास नहीं करने वाली जब तक तुम ये सब बातें राजा को नहीं बताने वाले। अगर राजा तुमसे सन्तुष्ट हो जायेंगे तो मैं भी सन्तुष्ट हो जाऊँगी।"

देख कर कि वह अपने कहे पर अड़ी हुई थी ब्राह्मण ने मोती और सोना उठाया और राजा के पास चल दिया और उसको बताया कि किस तरह से उसने इसे पाया था।

राजा यह सुन कर बहुत आश्चर्य में पड़ गया पर फिर भी उसने ब्राह्मण का विश्वास कर लिया और उसको पैसों से भरे कई थैले दिये। जब ब्राह्मण की पत्नी ने राजा की भेंट देखी तो उसको उस सबको न लेने के लिये पीछे पड़ना पड़ा क्योंकि वह ऐसा पैसा लेना नहीं चाहती थी जो उसके पति ने मौके का फायदा उठा कर पाया था।

इस घटना के कुछ समय बाद राजा ने ब्राह्मण को बुला भेजा और जोगी की बेटी के बारे में कुछ और पूछताछ की। ब्राह्मण ने जैसा उसे देखा था वैसा ही राजा को बता दिया।

उसका बताया हाल सुन कर राजा ने उससे विनती की कि वह लड़की के पिता के पास जाये और राजा के लिये उसका हाथ माँगे। उसने सोचा कि ऐसी पत्नी तो मेरे और मेरे राज्य दोनों के लिये बहुत फायदेमन्द रहेगी।

ब्राह्मण बोला — "राजा साहब अगर आप नाराज न हों तो मैं आपसे एक बात कहूँ। अगर जोगी इस बात पर मुझसे नाराज हो गये और उन्होंने मुझे शाप दे दिया तो।"

राजा बोला — "इससे मुझे कोई मतलब नहीं। तुम उसको मेरी पत्नी बनाने की कोई भी तरकीब सोचो। मुझे वह अपनी पत्नी के रूप में चाहिये।"

फिर दोनों में कुछ और बातें हुईं और जब राजा नहीं माना तो ब्राह्मण वहाँ से चल दिया। ब्राह्मण को बड़ी चिन्ता हो रही थी वह बहुत परेशान था। जो पैसे उसके पास जितनी आसानी से आये थे वे उतनी ही आसानी से जाने वाले भी हो रहे थे। और यह केवल पैसे ही जाने वाले की बात नहीं थी बल्कि उसकी तो जान भी खतरे में थी।

अब वह क्या करे। उसको जोगी के पास जाना तो पड़ेगा ही पर वहाँ जा कर वह अपना उद्देश्य कैसे पूरा करेगा यह उसे नहीं पता था।

अगली सुबह वह उठा और जोगी की तरफ चल दिया। जाते समय वह काँप रहा था। जोगी अभी भी उसी जगह बैठा हुआ था जहाँ वह उसको पहले मिला था। वह उसके सामने झुकते हुए बोला — "जोगी जी आप मुझ पर रहम करें। मेरी प्रार्थना सुन लें। राजा आपकी बेटी से शादी करना चाहते हैं। और वह तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक वह आपकी मर्जी न जान लें।"

जोगी बोला — "तुम परेशान बिल्कुल न हो। जाओ और जा कर राजा से कह दो कि हमने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली है। उनसे कह देना कि वह फलॉ फलॉ दिन अपने साथियों को ले कर यहॉ आ जायें। ध्यान रहे कि जो भी उनके साथ आये वह उम्र में सात साल से बड़ा हो। जाओ डरो नहीं। मेरा वायदा है।"

यह सुन कर ब्राह्मण खुशी से फूल गया और इस बात की खबर राजा को देने के लिये महल चल दिया। जा कर उसने राजा को यह खुशी की खबर दी तो राजा भी बहुत खुश हुआ।

तय किया हुआ दिन आ पहुँचा। राजा अपने साथ बहुत सारे आदमियों को ले कर जोगी के पास आ पहुँचा। जोगी ने उन सबका बड़ी शानदार तरीके से स्वागत किया। ठीक समय पर शादी की रस्म पूरी की गयी। सब कुछ ठीक से पूरा हो गया। हर आदमी बहुत खुश था। उसके बाद राजा वहॉ से चला गया।

जब वे लोग वापस महल जा रहे थे तो लड़की को प्यास लगी। उसने पानी मॉगा। पर जिस स्त्री की वह देखभाल में थी उसने उसे पानी देने से मना कर दिया। लड़की बोली — "तुम पानी के लिये मना क्यों करती हो?"

वह स्त्री बोली — "मेरी यह हिम्मत तो हो ही नहीं सकती कि आपका हुक्म टालूँ पर इस नदी में एक सॉप रहता है जो किसी को भी पानी पीने नहीं देता जब तक वह एक घूँट पानी के लिये दो ऑखें नहीं दे देता।"

लड़की बोली — “कोई बात नहीं ऐसा ही होगा। तुम एक चाकू ले आओ और मेरी दोनों ऑखें निकाल लो और उनके बदले में मुझे पानी ला दो।” यह बेरहम काम किया गया पानी लाया गया लड़की ने पानी पिया और अपनी प्यास बुझायी।

अब यह स्त्री जिसकी देखभाल में यह लड़की थी बहुत ही नीच किस्म की स्त्री थी। उसने देखा कि अब यह लड़की तो देख नहीं सकती इसके अलावा आधे रास्ते में ही रात हो गयी थी सो उसने इस समय का भी फायदा उठाया। उसने दुलहिन के कपड़े अपनी बेटी को पहना दिये और अपनी बेटी के कपड़े दुलहिन को पहना दिये।

दोनों लड़कियॉ करीब करीब एक ही उम्र की थीं। फिर उसने जोगी की बेटी को एक बक्से में बन्द कर दिया और उसे नदी में बहा दिया और बाद में अपनी बेटी को डोली में बिठा दिया।

नीच स्त्री की बेटी महल में पहॅुची। अगले दिन सुबह जैसे ही रोशनी हुई बेचैन राजा अपनी रानी के पास पहॅुचा और उससे रोने हॅसने और चलने के लिये कहा ताकि उसे मोती और सोना मिल जाये।

पर यह अजीब सी मॉग सुन कर लड़की तो आश्चर्य में पड़ गयी कुछ बोल ही नहीं पायी क्योंकि उसकी समझ में ही नहीं आया कि राजा उससे ऐसा क्यों कह रहा था।

जब राजा ने यह देखा तो वह भी आश्चर्य में पड़ गया और उसने ब्राह्मण को बुला भेजा और उस पर झूठ बोलने और धोखा देने का इलजाम लगाया।

ब्राह्मण ने राजा से बहुत कहा कि उसने राजा को कोई धोखा नहीं दिया कोई झूठ नहीं बोला पर राजा उसकी कोई बात मानने को तैयार ही नहीं था। तब वह बोला "अच्छा ज़रा ठहरिये। हो सकता है कि लड़की अपनी जगह बदल जाने से शायद कुछ घबरा गयी हो।"

उधर जोगी की बेटी बक्से में बन्द बहती चली गयी और अगले दिन सुबह एक धोबी को मिल गयी। उसने देखा कि लड़की अन्धी है वह उसको अपने घर ले गया। उसको उसने खाना और कपड़ा दिया और हर तरीके से उसे अपनी बच्ची की तरह से रखा।

अगले दिन जब वह धोबी के बागीचे में टहल रही थी तो देखा गया कि उसके पैरों के निशान तो सोने से ढके हुए थे। किसी ने उसको यह बात बतायी तो वह बोली कि वह यह बात जानती है। फिर वह बोली इसे इकट्ठा कर लो और इसे धोबी को दे दो।

अगली सुबह वह किसी वजह से हॅस पड़ी तो उसके मुॅह से सोने के फूल झड़ पड़े। यह बात भी उसको बतायी गयी तो उसने फिर यही कहा कि वह यह बात भी जानती है।

फिर वह बोली इन्हें इकट्ठा कर लो और इन्हें राजा की पत्नी के पास ले जाओ। शायद वह इनको देख कर बहुत खुश हो जाये और

इन्हें खरीदना चाहे। और अगर ऐसा हो तो उससे कहना कि इन फूलों की कीमत आदमी की दो ऑखें हैं।

धोबी ने सोने के वे फूल लिये और महल जा कर उन्हें राजा की रानी को दिखाया। रानी की मॉ जो इस समय उसकी दासी थी उस समय वहॉ मौजूद थी जब धोबी सोने के वे फूल ले कर वहॉ पहुॅचा। जैसी कि उम्मीद की जाती थी रानी उन फूलों को देखते ही उनको खरीदने की इच्छा करने लगी।

उसने धोबी से पूछा कि उनके क्या दाम हैं तो धोबी बोला "आदमी की दो ऑखें।"

रानी बोली — "क्या? आदमी की दो ऑखें? इस तरह से मैं तुम्हें इनकी कीमत कैसे दे सकती हूॅ। तुम मुझसे पैसा मॉग लो कोई खास ओहदा मॉग लो तो वह मैं तुम्हें दे सकती हूॅ पर आदमी की दो ऑखें मैं कहॉ से लाऊॅगी।"

उसकी दासी यानी उसकी मॉ बोली — "मैं आपके लिये आदमी की दो ऑखें ला कर देती हूॅ।" कह कर वह बराबर वाले कमरे में गयी और वहॉ से एक छोटा सा बक्सा ले कर लौटी जिसमें जोगी की बेटी की दोनों ऑखें रखी थीं जो उसने उससे पानी के बदले में मॉग ली थीं।

धोबी ने वे ऑखें ले कर सोने के फूल रानी को दे दिये और अपने घर चला आया। आ कर उसने वे ऑखें जोगी की बेटी को दे दीं। जोगी की बेटी उनको पा कर बहुत खुश हुई और बोली —

“ओह आज मैं कितनी खुश हूँ कि मैं अपने उद्देश्य में सफल हो गयी। ये किसी और की नहीं बल्कि मेरी ही आँखें हैं। इन्हें मेरी आँखों में लगा दो और फिर इनमें काजल लगा दो।” धोबी ने ऐसा ही किया तो उस लड़की की आँखों की रोशनी पहले जैसी ही वापस आ गयी।

उस दिन शाम को जब राजा अपनी रानी से मिलने आया तो उसकी चालाक माँ यानी उसकी दासी ने राजा को सोने के फूल दिखाये और झूठ बोला कि वे रानी ने पैदा किये थे। राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने रानी को और उसकी दासी को बहुत सारी भेंटें दीं। उसने सोचा अब मैं बहुत ज़्यादा अमीर हो जाऊँगा।

इसके बाद हफ्तों गुजर गये रानी ने उसके बाद फिर कुछ और पैदा नहीं किया पर जोगी की बेटी जब भी जैसा भी मौका होता कुछ न कुछ रोज ही पैदा करती रहती। कभी सोना कभी मोती कभी सोने के फूल।

इस तरह धीरे धीरे धोबी फिर बहुत अमीर हो गया। उसके अचानक अमीर होने की कहानियाँ फिर धीरे धीरे शहर भर में फैल गयीं। ये कहानियाँ राजा के पास भी पहुँचीं तो उसने धोबी को बुलाया और उससे पूछा कि इतने कम समय में उसको इतना सारा पैसा कहाँ से मिल गया।

धोबी यह सुन कर डर गया और उसने राजा को सब कुछ सच सच बता दिया। वह बोला — "महाराज, जोगी की बेटी को जो कानूनन आपकी पत्नी है आपकी शादी के दिन जिस दासी की देखभाल में थी उसने उसे बड़ी बेरहमी से धोखा दिया है।

उस दिन उसने थोड़े से पानी के लिये उसकी ऑखें निकाल लीं और जब वह अन्धी हो गयी और उसने यह भी देखा कि अब उसे कुछ पता नहीं चलेगा उसने उसके कपड़े उतार कर अपनी बेटी को पहना दिये और उसे आपकी रानी बना दिया। जोगी की अन्धी बेटी को एक बक्से में बन्द करके उसने नदी में बहा दिया।

डोली उसकी अपनी बेटी को ले कर महल पहुँची और बक्सा जोगी की बेटी को ले कर मेरे घर पहुँचा। जल्दी ही मुझे जोगी की बेटी के गुणों का पता चल गया। जब भी वह रोती या हॅसती या चलती तो मोतियों सोने के फूलों ओर सोने के ढेर लग जाते।

एक बार उसके कहने पर मैं सोने के कुछ फूल रानी जी के पास ले कर आया और जब उन्होंने वे खरीदने चाहे तो मैंने उनकी कीमत आदमी की दो ऑखें मॉगीं।

रानी की मॉ यानी वह नीच स्त्री वहीं खड़ी थी सो उसने मुझे वे ऑखें ला कर दीं। वे ऑखें जोगी की बेटी की थीं। मैं उन्हें ले कर वहॉ से चला आया। घर आ कर मैंने वे ऑखें जोगी की बेटी को दीं तो उसने तुरन्त ही उनको अपनी ऑखों में लगा लिया। फिर काजल लगाने के बाद वह उन ऑखों से ठीक से देखने लगी।"

राजा बोला — "जाओ और तुरन्त ही जोगी की बेटी को ले कर आओ। मुझे धोखा दिया गया है।"

धोबी जोगी की बेटी को ले कर राजा के पास आ गया तो राजा ने उससे सारा हाल बताने के लिये कहा। जब उसने वही हाल उसके मुँह से सुना जो धोबी ने उसे बताया था तो उसे विश्वास हो गया कि वह सब सच था।

तुरन्त ही उसने उस नीच दासी और उसकी बेवकूफ बेटी को मारने का हुक्म दे दिया। धोबी और ब्राह्मण को ऊँचे ओहदे दे दिये गये। उसके बाद से जोगी की बेटी राजा के साथ रहने लगी और राजा दिन पर दिन अमीर होता चला गया। आगे चल कर तो वह इतना अमीर हो गया कि उसने अपना पैसा गिनना ही छोड़ दिया।

62 गुल्लाला शाह[28]

एक बार की बात है कि एक देश में एक बहेलिया[29] रहता था। वह अपने निशाने के लिये दूर दूर तक मशहूर था। वह रोज रोज बहुत सारी चिड़ियें मार देता था। कुछ को वह खुद इस्तेमाल कर लेता था और कुछ को वह बेच देता था। पर जितनी जल्दी वह कमाता था उतनी ही जल्दी वह उसे खर्च भी कर देता था।

यह कुछ दिनों तक तो ठीक से चला बल्कि यों कहो कि कुछ साल तो बहुत खुशी से निकल गये पर धीरे धीरे कुछ ऐसा हुआ कि चिड़ियें कम होने लगीं तो उसके रोज के शिकार में कमी होने लगी।

शिकार में कमी होने लगी तो उसकी आमदनी कम होने लगी। अब वह दुखी और चिन्तित रहने लगा और यही सोचता रहता कि वह पैसा कमाने के लिये क्या करे।

जब उसका यह हाल चल रहा था तो राजा हंस[30] ने चिड़ियों की दुनियॉ की सब चिड़ियों को बुलाया साथ में जो थोड़ी बहुत चिड़ियें उस बहेलिये के जंगल में बची थीं उनको भी बुलाया।

यह एक बहुत बड़ी कौन्फ़्रैन्स थी इसलिये इसका इन्तजाम भी बहुत बढ़िया किया गया था। इसमें काफी काम हुआ हर चिड़िया

---

[28] Gullala Shah (Tale No 62)

[29] Translated for the word "Fowler".

[30] Translated for the word "Swan"

को बोलने का मौका मिला और हर चिड़िया ने जो कुछ देखा और जो कुछ सुना उससे वह बहुत खुश थी।

आखिर कौन्फ़रैन्स खत्म हुई। सब चिड़ियें अपने अपने देश चली गयीं पर वे थोड़ी सी चिड़ियें जो बहेलिये के देश से आयी थीं वहॉ से जाने के लिये तैयार नहीं थीं। यह देख कर राजा हंस ने उनके वहॉ से न जाने की वजह पूछी।

चिड़ियें बोलीं — "ओ राजा हमारे देश में एक बहेलिया रहता है जिसका निशाना बहुत अच्छा है। वह चिड़ियों को बिना चेतावनी दिये ही जाल में फॉस लेता है। हमारे बहुत सारे भाई बहिनों को उसने मार दिया है।

कुछ समय पहले हम लोग बहुत सारे थे पर अब आप देखें कि हम लोग कितने कम रह गये हैं। हम आपसे दया की भीख मॉगते हैं आप हमें इस बेरहम आदमी से छुटकारा दिलायें।"

यह सुन कर राजा हंस को बहुत दुख हुआ। वह तुरन्त ही उनके दुख को दूर करने के बारे में सोचने लग गया। उसके पास दो मुख्य मंत्री थे उल्लू और तोता[31] जिनको वह बहुत चाहता था और उनकी सलाह भी वह हमेशा मानता था।

सो इस समय उसने उन दोनों को बुलाया और पहले उल्लू की तरफ देख कर बोला — "उल्लू भाई मैं

[31] Owl and Parrot. See their pictures above. Owl is above and parrot is below.

सब चिड़ियों का राजा हूँ और तुम मेरे मंत्री हो। मेरी प्रजा का एक हिस्सा एक बहेलिये से बहुत दुखी है। उसका निशाना कभी नहीं चूकता और उसके जाल में चिड़ियें बहुत जल्दी फँस जाती हैं पर वे अपना देश नहीं छोड़ना चाहतीं। मेहरबानी कर के उनके वहाँ ज़िन्दा रहने कोई इन्तजाम करो।"

उल्लू को राजा का यह मुश्किल हुक्म सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ पर तोते के ज़्यादा ज्ञान और अक्लमन्दी की याद करते हुए वह बोला — "ओ राजा आपका यह हुक्म मैं पूरा नहीं कर सकता क्योंकि मैं दिन में नहीं देख सकता। अगर आपकी इजाज़त हो तो आपका यह हुक्म तोता बजा लायेगा।"

यह सुन कर राजा हंस ने तोते की तरफ देखा और उसको अपना हुक्म बजा लाने का हुक्म दिया। तोता तुरन्त ही राजी हो गया उसने राजा को सिर झुकाया और राजा का हुक्म बजाने चल दिया जो उसने अभी अभी उल्लू को दिया था।

वह उन दुखी चिड़ियों के पास पहुँचा जो उस बहेलिये के देश से आयी थीं और उनसे थोड़ा धीरज रखने के लिये कहा और कहा कि वे अपनी मनमानी न करें बल्कि उसकी सलाह मानें। भगवान उनके लिये सब भला करेगा। सब चिड़ियों ने एक आवाज में कहा कि वे उसकी बात मानेंगी।

जब बहेलिये को इस बात का पता चला कि उसके देश में अब एक भी चिड़िया नहीं रह गयी है तो उसके दुख की तो कोई हद ही

नहीं रही। वह बहुत ही नाउम्मीद हो गया। वह नहीं जानता था कि अब वह अपने परिवार को खाना कहाँ से खिलाये।

अपने भूखे बच्चों की तरफ देखना बड़े दुख का काम था खास कर के जब वह शाम को बिना शिकार के घर लौटता था और उसके भूखे बच्चे खाने के लिये उसके चारों तरफ लिपट जाते थे। और फिर जब वे देखते थे कि उनके पिता के पास खाना नहीं है तो वे इधर उधर चले जाते थे।

जब तक चिड़ियाँ कौन्फ़रैन्स में थीं तब तक ऐसे ही चलता रहा कि एक दिन उसके बच्चों ने उससे कहा कि अब चिड़ियें दिखायी देने लगी हैं। यह सुन कर बहेलिये ने फिर से अपना जाल उठाया और तीर कमान उठाया और चिड़ियें पकड़ने चल दिया।

उसने अपना जाल वहाँ बिछा दिया जहाँ चिड़ियों के आने की बहुत उम्मीद थी। वह उस समय गुस्से के मारे इतना भयानक और इतना पक्के इरादे वाला लग रहा था कि इस बार चिड़ियें पहले से भी ज़्यादा डरी हुई थीं।

वे तुरन्त तोते के पास गयीं और बोलीं — "अबकी बार फलाँ फलाँ जगह बहेलिये ने अपना जाल बिछाया है। आप हमें बताइये कि हम उससे कैसे बचें क्योंकि हमें यह अच्छी तरह मालूम है कि अगर हम उसके जाल से न पकड़े गये तो वह हमें तीर मार कर मार देगा।"

तोते ने कहा कि वे अलग अलग जगहों पर जा कर छिप जायें और उसने उनसे वायदा किया कि वह उनकी सुरक्षा का हमेशा के लिये इन्तजाम कर देगा। यह सुन कर वे सब चिड़ियें वहॉ से उड़ गयीं और अलग अलग जगह जा कर छिप गयीं।

तब तोता सीधा बहेलिये के जाल की तरफ गया और जा कर उसके जाल में फॅस गया। पर उस दिन कोई और चिड़िया उसके हाथ नहीं लगी यह देख कर बहेलिया तो जैसे पागल सा हो गया।

जब वह घर पहुॅचा तो रोज की तरह उस दिन भी उसके बच्चे उसके चारों तरफ आ कर घिर गये और उससे पूछा कि आज उसको क्या मिला। वह बोला — "तुम्हारी बदकिस्मती से मुझे आज केवल यह तोता मिला।"

यह कह कर उसने अपने थैले में से एक तोता बाहर निकाल दिया। वह उसको खाने के लिये मारने ही वाला था कि तोते ने उसका इरादा भॉप कर उससे कहा — "ओ बहेलिये तुम मुझे क्यों मारना चाहते हो। क्या तुमको मालूम नहीं कि मेरा मॉस खाने के लिये ठीक नहीं है। और अगर तुमने मुझे खा भी लिया तो इतने छोटे से कौर से तुम्हारी और तुम्हारे परिवार की भूख कैसे शान्त होगी।

मेरे विचार से तो मुझे मारने से अच्छा यह होगा कि तुम मुझे बाजार में किसी तोता बेचने वाले को बेच दो और उस आये पैसे से कई दिनों का राशन खरीद लो।"

बहेलिये की समझ में यह अक्लमन्दी की बात आ गयी सो उसने उसको एक सुरक्षित जगह रख दिया। उसने सोचा कि वह अगली सुबह जल्दी उठेगा और उसको बाजार बेचने के लिये ले जायेगा।

अगले दिन वह सुबह जल्दी उठा और तोते को ले कर बाजार चल दिया। उसने वह तोता बेचने के लिये रख दिया। उसने आवाज लगानी शुरू की "इसे कौन खरीदेगा इसे कौन खरीदेगा। मेरे पास यह तोता है इसे कौन खरीदेगा।" आवाज सुन कर बहुत सारे लोग उसको देखने के लिये रुक गये।

वे सब उससे बड़े खुश दिखायी दे रहे थे। बहुतों ने तो उसको खरीदने की इच्छा भी प्रगट की पर क्योंकि वे सब उसके लिये बहुत कम पैसा दे रहे थे इसलिये तोते ने उनके साथ जाने से मना कर दिया।

तोते का व्यवहार देख कर बहेलिया बहुत नाराज हो गया। वह सारा दिन गर्मी में उस तोते को बेचने के लिये घूमता रहा पर तोता नहीं बिका। यह देख कर वह बहुत ही थक गया और नाउम्मीद हो गया।

जब वह घर पहुँचा और फिर से अपना परिवार और बच्चे भूखे और दुखी देखे तब तो उसका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। उसने सोच लिया कि वह उस तोते को वहीं और उसी समय मार देगा।

बेचारा तोता। उसको लगा कि बस अब उसकी ज़िन्दगी का आखिरी पल आ पहुँचा है। फिर भी उसने बहेलिये से थोड़ा धीरज रखने के लिये कहा।

वह बोला — “थोड़ा धीरज रखो। तुम देखोगे कि इस देर करने में मेरा अपना कोई मतलब नहीं है। जब मैंने इतनी छोटी छोटी कीमतों के लिये बिकने से मना किया तो मेरा मतलब कोई बुरा नहीं था। मेहरबानी कर के यह भी मत सोचो कि अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये मैं तुम्हारा उपकार नहीं मान रहा हूँ।

अगर तुम कल तक इन्तजार करो और मुझे एक सुन्दर से पिंजरे में रख दो। फिर उस पिंजरे को एक सुन्दर से कपड़े से ढक दो और तब मुझे राजा के महल के आसपास ले कर जाओ तो शायद कोई अमीर आदमी पिंजरे को देख कर यह पूछ ले कि इसमें क्या है। और यह भी हो सकता है कि उनमें से किसी की मुझमें रुचि हो जाये और वह मेरी कीमत भी पूछ ले।

अगर ऐसा हो जाये तो पहले की तरह से पैसे का सौदा तुम मुझ पर छोड़ देना। उससे कहना कि मेरी कीमत बहुत है और अपनी कीमत मैं उसको अपने आप खुद बताऊँगा।” बहेलिये ने तोते की सलाह की फिर तारीफ की और फिर राजी हो गया।

अगले दिन उसने तोते को एक सुन्दर से पिंजरे में रखा और उसको एक सुन्दर से कपड़े से ढक कर राजा के महल की तरफ चल

दिया। राजा के कई रानियाँ थीं पर उनमें से किसी के कोई बच्चा नहीं था सिवाय एक रानी के। उसके एक बेटी थी।

उसकी यह बेटी बड़ी हो कर इतनी सुन्दर और अच्छी हो गयी थी कि राजा उसको बहुत प्यार करता था। वह हमेशा उसको अपनी आँखों के सामने ही रखता था और उसकी कोई ऐसी इच्छा नहीं थी जिसको वह अपनी पूरी ताकत लगा कर पूरी न करता हो।

एक बार उसने एक चिड़िया की माँग की थी जो बात कर सके सो उसके लिये वह बड़ी लगन से ऐसी चिड़िया की तलाश कर रहा था सो इस समय उस बहेलिये का वहाँ आना बड़े मौके की बात थी।

जब बहेलिया महल के चारों तरफ घूम रहा था तो राजा का मुख्य मंत्री वहाँ से गुजर रहा था। बहेलिये ने उसको झुक कर सलाम किया तो तोते ने भी पिंजरे के अन्दर से उसे सलाम किया।

जब उसने पिंजरे में से तोते का सलाम सुना तो वह आश्चर्य में पड़ गया। उसके मुँह से निकला — "अरे वाह। कितनी अजीब बात है। ज़रा पिंजरे के ऊपर से कपड़ा तो हटाओ मैं भी तो इस आश्चर्यजनक चिड़िया को देखूँ तो कि यह कैसी है।"

बहेलिये ने तोते के पिंजरे पर से कपड़ा हटाया तो वह तोते की चतुराई की बजाय उसकी सुन्दरता देख कर आश्चर्यचकित रह गया। उसने उसे किसी भी कीमत पर खरीदना चाहा। जैसे कि

पहले ही तय किया जा चुका था तोता बोला — “अठारह हजार रुपये।”

वजीर के मुँह से निकला — “अरे **18** हजार रुपये?”

तोता फिर बोला — “हॉ **18** हजार रुपये।”

वजीर बोला — “तब मैं तुम्हें नहीं खरीद सकता। पर मेरे मालिक राजा साहब तुम्हारी जैसी एक बोलती बात करती चिड़िया खरीदना चाहेंगे इसलिये मैं तुम्हें उनके पास लिये चलता हूँ।”

तोता राजी हो गया। सो वे सब महल की तरफ चल दिये। महल के सामने वाले दरवाजे पर पहुँच कर वजीर ने पिंजरा लिया और उसे ले कर महल के अन्दर चला गया।

राजा साहब को सिर झुका कर उसने पिंजरा राजा के सामने रख दिया और बोला “शायद हुजूर की बहुत दिनों की इच्छा पूरी हो जाये।”

जैसे ही वजीर ने पिंजरा राजा के सामने रखा तो तोते ने बड़ी साफ आवाज में उसको सलाम किया। राजा ने आश्चर्यचकित हो कर वजीर से पूछा कि इतनी चतुर और शानदार चिड़िया उसको कहॉ से मिली। उसने आगे कहा — “मैं तो ऐसी चिड़िया की कबसे तलाश में था। तुम इसको मुझे बेच दो। जो तुम चाहो वह इसके लिये मुझसे ले लो मैं तुम्हें दे दूँगा।”

वजीर बोला — “राजा साहब यह चिड़िया मेरी नहीं है। मुझे एक गरीब बहेलिया मिल गया था जो इसको लिये महल के आसपास

घूम रहा था। और यह मुझे मालूम था कि सरकार को एक ऐसी चिड़िया की जरूरत थी सो पहले तो मैंने इसे खरीदने की कोशिश की पर पाया कि इसकी कीमत तो मैं जितनी दे सकता था उससे कहीं ज़्यादा है सो उस आदमी को मैं यहाँ ले आया। अगर आप इजाज़त दें तो उस आदमी को यहाँ बुला लूँ।"

राजा ने इजाज़त दे दी। बहेलिये को अन्दर बुलाया गया। जब राजा उसे खरीदने के लिये तैयार हो गया तो उसने बहेलिये से उसकी कीमत पूछी कि वह जो चाहे माँग ले वह उसकी वही कीमत दे देगा।

बहेलिये ने काँपते हुए कहा — "मालिक मैं इस चिड़िया की कीमत नहीं बता सकता। मैं केवल इतना जानता हूँ कि इसे काफी पैसे दे कर खरीदा गया था। बाकी राजा साहब की इच्छा। यह चिड़िया अपनी कीमत अपने आप बतायेगी।"

तब राजा तोते की तरफ घूमा और उससे उसकी कीमत पूछी। इस पर तोता बोला — "अठारह हजार रुपये।"

राजा ने आश्चर्य से पूछा — "अठारह हजार रुपये? यह तो बहुत ज़्यादा हैं। मुझे यकीन है कि तुम मुझसे मजाक कर रहे हो।"

राजा ने कुछ कम दाम में उसका सौदा करना चाहा पर तोता उससे कम पैसे को बिकने में तैयार नहीं था उधर राजा भी उसको खरीदने को तैयार बैठा था सो **18** हजार रुपये बहेलिये को दे कर राजा ने वह तोता खरीद लिया।

तोते को उसके सुन्दर पिंजरे के साथ राजा की बेटी के पास ले जाया गया।

अब तो बहेलिया एक अमीर आदमी हो गया था। पैसे उसके पास छप्पर फाड़ कर गिरे थे। अठारह हजार रुपये एक ही दिन में। बहुत खुशी खुशी वह घर लौटा।

उसके परिवार ने जब यह अच्छी खबर सुनी तो वह भी बहुत खुश हुआ। उस दिन उनके यहाँ बहुत दिनों बाद बहुत बढ़िया खाना बना। खाना खा कर वे अपने आगे के समय का प्लान बनाने लगे।

बहेलिया बोला — "हम इन **18** हजार रुपयों का क्या करेंगे। क्या हम यह देश छोड़ दें जहाँ हम रोज दुखी रहते हैं और किसी अच्छी जगह चले जायें। या फिर हम यहीं रहें और इन पैसों से कोई व्यापार शुरू करें।

पैसा और इज़्ज़त बढ़ जाने से अब हमको पुरानी मुसीबतों को भूल जाना चाहिये और नया कुछ सोचना चाहिये। ओह मेरी पत्नी और बच्चों कुछ तो कहो कि हम इनसे क्या करें।"

वे लोग इसी तरह बात कर रहे थे कि अचानक उनको एक बहुत बड़ा शोर सुनायी दिया। उस शोर से भी ऊँची आवाज में कोई बहेलिये का नाम ले कर चीख रहा था। कुछ सिपाही वहाँ आ गये थे जिनको राजा ने बहेलिये को महल बुलाने के लिये भेजा था।

बेचारा बहेलिया तो डर के मारे कॉपने लगा — "अरे क्या राजा ने मुझे बुलाया है। इस समय रात को राजा को मुझसे क्या चाहिये। शायद राजा अपनी खरीद से नाखुश हो और अपने पैसे वापस लेना चाहता हो। या फिर ऐसा भी हो सकता है कि तोते ने मेरी कुछ बुराई कर दी हो। उफ़ अब मैं क्या करूँ।"

मगर उसके सब शक गलत निकले क्योंकि राजा ने उसे उस बात करने के सम्बन्ध में उसे बुलाया था जो उसने अभी अभी तोते से की थी। उस बात में तोते ने राजा को अपना उद्देश्य बताया था।

वह राजा से यह चाहता था कि क्योंकि अब उस बहेलिये के पास काफी पैसा था तो राजा उसको यह हुक्म दे कि वह चिड़ियों को मारने का काम छोड़ दे और कोई व्यापार करना शुरू कर दे।

राजा ने ऐसा ही किया। बहेलिया राजी हो गया और बोला कि उसका भी यही विचार था। उसने राजा को अपना तीर कमान और चिड़िया पकड़ने वाला जाल भी महल भेजने का वायदा किया ताकि राजा को यह विश्वास रहे कि वह अब आगे से कोई चिड़िया नहीं मारेगा। यह कह कर बहेलिया वहॉ से चला गया।

जैसे ही बहेलिया राजा के पास से चला गया तो राजा ने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि आगे से कोई चिड़िया नहीं मारेगा। और जो कोई भी राजा के इस हुक्म को न मानता हुआ पकड़ा गया उसको कड़ी से कड़ी सजा मिलेगी।

इसलिये इसके बाद चिड़ियों के राज्य में अब शान्ति रहने लगी। वे अब बहुत जल्दी जल्दी बढ़ने लगीं और उनके गीत अब सारा दिन हवा में गूँजते रहते।

राजा को कृतज्ञता दिखाने के लिये तोते ने सोचा कि वह राजा के महल में ही रहेगा। उसने शाही परिवार में हर एक से दोस्ती कर ली थी तो सब उसको बहुत प्यार करते थे।

खास कर के राजकुमारी वह तो अब सारा दिन उसी के साथ रहती थी। अब वह राजा के पास भी नहीं जाती थी बल्कि हमेशा तोते के साथ ही खेलती रहती और उससे बात करती रहती।

वह सोचती रहती "अगर यह तोता उड़ गया या मर गया तो मेरा क्या होगा। पौली तुम मुझे प्यार करते हो या नहीं। तुम मेरे पास से कभी जाओगे तो नहीं। ओह तुम मुझसे वायदा करो कि तुम मुझे छोड़ कर कभी नहीं जाओगे।"

जब इस तरह कुछ समय तक चलता रहा तो राजा कुछ गुस्सा हो गया क्योंकि अब उसकी बेटी उसके पास नहीं आती थी। क्योंकि वह अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था तो वह उससे बिल्कुल अलग नहीं रह सकता था इसलिये उसको अपनी बेटी का हर समय तोते के साथ रहना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था।

एक शाम उसने अपने सलाहकारों को यह सलाह माँगने के लिये बुलाया कि इस बारे में कौन सा रास्ता अपनाया जाये। वह क्या करे कि उसकी बेटी फिर से उसके पास वापस आ जाये।

वह न तो यह चाहता था कि वह चिड़िया को मारे और साथ में वह डरता भी था चिड़िया के मर जाने पर उसकी बेटी क्या करेगी जो उसको इतना प्यार करती थी। पर फिर वह क्या करे।

उन्होंने उसको सलाह दी कि उस तोते को दरबार में या बागीचे में लाया जाये जहाँ भी उसकी बेटी जाती हो क्योंकि राजा जानता था कि जहाँ भी तोता जायेगा उसकी बेटी भी वहीं जायेगी। राजा इस सलाह से बहुत खुश हुआ। तुरन्त ही उसने तोते को दरबार में लाने का हुक्म दिया।

अब यह तोता तो बहुत होशियार था। दुनियाँ में कहाँ क्या हो रहा था इसके पास यह सब जानने की ताकत थी और जब भी कोई खास खबर होती तो वह अपनी मालकिन को बता देता। उसने राजा का यह प्लान राजकुमारी को बता दिया कि राजा किस तरह अपनी बेटी को अपने पास वापस लाना चाहता था।

बाद में तोते ने कहा – "अच्छा है कि तुम खुद उसके पास चली जाओ। तुम मुझे यहीं छोड़ दो और तुम चली जाओ।"

यह सुन कर राजकुमारी राजा के पास चली गयी। जब वह दरबार जा रही थी तो आधे रास्ते में ही उसे राजा का दूत मिल गया। उसने उससे पूछा कि वह क्या करने जा रहा था तो उसने उसे बताया कि वह तोते को दरबार में लाने जा रहा था।

राजकुमारी ने उससे कहा कि उसको जाने की जरूरत नहीं है वह सब ठीक कर लेगी। वह बोली तुम मेरे साथ वापस आओ मैं तो खुद ही राजा साहब के पास ही जा रही हूँ।

जैसे ही राजकुमारी उसको वहाँ छोड़ कर राजा के पास गयी तोते को अपने पुराने घर और साथियों की याद आयी। उसने उनसे एक बार फिर मिलने की सोची। उसको लगा कि जब तक राजकुमारी राजा से मिल कर वापस आती है वह भी अपने पुराने लोगों से मिल कर वापस आ जायेगा।

उसने अपने पुराने टूटे हुए पंख तोड़ कर नीचे फर्श पर फेंके जिससे वह और ज़्यादा सुन्दर लगने लगा और वहाँ से उड़ चला। वह अपने घर सुरक्षित पहुँच गया।

सबने उसका वहाँ दिल से स्वागत किया। वे सब उससे मिल कर बहुत खुश थे। उसकी गैरहाजिरी में उनके साथ क्या कुछ हुआ उसको उनको वह सब बताना था।

उन्होंने अपनी बातचीत शुरू ही की थी कि उनको बात करते घंटों बीत गये। जब शाम के साये फैलने लगे तो तोते को याद आयी कि उसके तो जाने का समय हो गया। सबने उससे कुछ देर और ठहर जाने की विनती की पर उस सबको ठुकरा कर तोता वहाँ से चल दिया।

वापस आते समय वह एक बागीचे में रुका जो समुद्र के किनारे था। वहाँ बहुत सारे फूल खिले हुए थे। उसने वहाँ से दो सबसे ज़्यादा सुन्दर फूल तोड़े और वापस राजकुमारी के पास उड़ चला।

राजकुमारी दरबार से बहुत पहले ही वापस आ चुकी थी और यह देख कर कि उसका प्यारा तोता वहाँ नहीं है उसके लिये चिन्ता कर रही थी। उसने फर्श पर पड़े कुछ पंख देखे तो उसको बहुत दुख हुआ। उसको लगा कि जरूर ही कहीं से कोई बिल्ली कमरे में आ गयी थी और उसे खा गयी है।

काफी देर रो लेने के बाद वह राजा के पास गयी और उसे अपनी कहानी बतायी और राजा से प्रार्थना की कि वह राज्य की हर बिल्ली को मरवाने का हुक्म सुना दे।

हालाँकि राजा को तोते की ऐसी कोई बहुत ज़्यादा फिक्र नहीं थी फिर भी वह अपनी बेटी की हर इच्छा पूरी करना चाहता था सो उसने राज्य भर की सारी बिल्लियों को मरवाने का हुक्म दे दिया। रात होने से पहले पहले सैंकड़ों बिल्लियाँ मारी जा चुकी थीं।

पर राजकुमारी को इस बदले से रत्ती भर भी चैन नहीं पड़ा था। वह अपने कमरे में वापस चली गयी और दरवाजा बन्द कर के तब तक रोती रही जब तक वह रोते रोते थक नहीं गयी।

वह बहुत दुखी हो कर अपने तोते को ही पुकारती रही "मेरे प्यारे पौल तुम कहाँ हो। कहाँ हो मेरे प्यारे पौल। मैं भी कितनी बेरहम थी जो मैंने तुमको पहली बार अकेला छोड़ा।"

इस तरह वह अपनी पालतू चिड़िया के लिये रोती रही। उस रात बहुत देर बाद उसको नींद आयी और जब आयी भी तो बहुत थोड़ी देर के लिये।

वह जल्दी ही जाग गयी और फिर अपने दुख में दुखी हो गयी। वह अपने बिस्तर से उठी और अपने आपको लटका कर मार कर इस दुख का अन्त करने की सोचा।

उसने एक रस्सी अपने कमरे की छत के शहतीर[32] में लगे कुंडे में बॉधी। उसमें एक फन्दा लगाया और उसको अपने सिर में डालने वाली ही थी कि तोता खिड़की के रास्ते उड़ कर कमरे में आ गया। अगर उसको एक पल की भी देर हो जाती तो उसको अपनी मालकिन की लाश ही देखने को मिलती।

जब उन दोनों ने एक दूसरे को इस तरह से देखा तो दोनों कितने खुश हुए इस खुशी को कौन बता सकता है। राजकुमारी ने चिड़िया को पकड़ कर अपनी छाती से लगा लिया और रोते हुए उसे बताया कि उसके टूटे हुए पंख देख कर कैसे उसने सोच लिया था कि उसके तोते को कोई बिल्ली खा गयी होगी और इसी वजह से उसने राजा से कह कर राज्य की सैंकड़ों बिल्लियॉ मरवा दीं।

[32] Translated for the word "Beam" – long wooden logs in the ceiling to support it. See its picture above.

और फिर कैसे उसको अकेलापन लगा तो वह आत्महत्या करने जा रही थी क्योंकि वह उसके बिना नहीं रह सकती थी।

राजकुमारी की कहानी सुन कर तोते का दिल भर आया कि वह राजकुमारी से यह कहना ही भूल गया कि वह अब राजा से कह कर अपना पुराना वाला हुक्म वापस ले ले और राज्य की और भोलीभाली बिल्लियों को मरने से रोक ले। इसके बाद कुछ देर तक वे बिल्कुल चुपचाप रहे और एक दूसरे से मिलने की खुशी में डूबे रहे।

कुछ देर बाद तोते ने ही चुप्पी तोड़ी। उसने अपनी मालकिन को बताया कि किस तरह से उसके जाने के बाद उसको अपने लोगों से मिलने की इच्छा हो आयी थी और फिर उनसे उसकी क्या क्या बातचीत हुई और लौटते समय उसने क्या क्या देखा। उसने उसको रास्ते के समुद्र के पास के बागीचे से लाये दोनों फूल भेंट किये।

फूल देख कर राजकुमारी बहुत खुश हुई। उनकी सुन्दरता देख कर और महक सूँघ कर तो वह बेहोश सी ही हो गयी। उसने इतने सुन्दर फूल पहले कभी नहीं देखे थे। जब वह ज़रा होश में आयी तो वह वे फूल राजा को दिखाने ले गयी।

राजा और सारे दरबारियों ने भी जब उन फूलों को देखा तो उन्होंने भी उनकी बहुत तारीफ की। उन लोगों ने भी ऐसे फूल पहले कभी नहीं देखे थे। उनकी खुशबू से सारा दरबार महक रहा था। यहाँ तक कि दूर रह रहे लोग जो महलों में रह रहे थे और जो

नौकरों के घर में रह रहे थे उन्होंने भी इस महक को महसूस किया और आपस में पूछने लगे कि यह महक कहाँ से आ रही है।

राजा ने पूछा — "ये तुम्हें कहाँ से मिले?"

राजकुमारी बोली — "ये मुझे तोते ने दिये पिता जी। उसने मुझे बताया कि ये उसने उन फूलों वाले पेड़ों से तोड़े थे जो समुद्र के किनारे वाले परियों के राजा की बेटी के बागीचे में लगे हुए थे। वहाँ ये **12** हजार थे और उनका हर फूल **12** हजार रुपये का था।"

राजा बोला — "तुम ठीक कहती हो। ऐसे फूल तो किसी स्वर्ग के बागीचे के ही हो सकते हैं।"

राजकुमारी ने राजा से कहा कि वह उसके लिये वहाँ से कुछ फूल और मँगवा दे। अब यह तो राजकुमारी की बहुत मुश्किल माँग थी फिर भी राजा ने उससे वायदा किया कि वह कोशिश करेगा। तुरन्त ही उसने अपने कुछ दूत उन फूलों की खोज में भेज दिये।[33]

कई दिनों तक ढूँढने के बाद दूतों ने आ कर राजा को बताया कि वे उनको कभी नहीं पा सकते। पर राजा भी उन फूलों की खोज को इतनी जल्दी छोड़ने वाला नहीं था। उसने हुक्म दिया कि आसपास के राज्यों को भी यह सूचना भेज दी जाये कि अगर किसी ने ऐसे फूल कहीं देखे हों तो वह हमें बताये।

[33] [My Note : one suspicion arises here that when the king knew that parrot knew the place of those flowers then why didn't he send the parrot himself to bring those flowers?]

और वह कोई भी हो जो भी हमको वे फूल ला कर देगा हम अपनी सुन्दर बेटी की शादी उससे कर देंगे। ऐसा कर दिया गया पर सालों बीत गये इसकी कोई खबर नहीं आयी।

इस राजा के देश में एक व्यापारी रहता था जो बहुत ज़्यादा अमीर था और जिसकी अपने इस अथाह पैसे की वजह से सामान्य लोगों में बहुत इज़्ज़त थी।

लोग इसकी बहुत तारीफ करते थे और चापलूसी करते थे जिसने इसको और बहुत घमंडी बना दिया था। यह इतना घमंडी हो गया था कि किसी की नहीं सुनता था राजा तक की भी नहीं।

एक दिन यह व्यापारी मर गया और इसके मरने के बाद क्योंकि इसके कोई भाई या लड़का नहीं था तो इसकी सारी जायदाद और पैसा राजा के पास आ गया था। वह दिन व्यापारी की पत्नी के लिये बहुत दुख का दिन था जिस दिन उसका पति मरा।

बेचारी स्त्री। वह बहुत कमजोर और बीमार थी। उसको बच्चे की आशा थी। उसको पता नहीं था कि वह क्या करे। खैर अगर वह मरना नहीं चाहती थी तो उसको कोई न कोई काम तो करना ही था सो वह एक किसान के पास काम करने चली गयी।

समय आने पर उसके बच्चा हुआ। उस बच्चे की किस्मत अच्छी थी। वह धीरे धीरे तन्दुरुस्त और अच्छा बढ़ने लगा। जब वह इतना बड़ा हो गया कि वह कुछ काम कर सके तो किसान ने उसको जानवर चराने के लिये मैदानों में भेजना शुरू कर दिया।

कुछ दिनों में उसको इतना समय भी मिलने लगा कि वह किसान के बच्चों के साथ स्कूल जाने लगा क्योंकि वह एक अच्छा बच्चा था और एक बड़ा और अक्लमन्द आदमी बनना चाहता था।

क्योंकि उसकी माँ को यह शक था कि वह बुरे समय में पैदा हुआ था तो अभी तक उसने उसका कोई नाम नहीं रखा था। उसके स्कूल के साथी लोग उसको "खरिया" कह कर बुलाते थे क्योंकि उसके सिर पर खुजली के निशान थे।[34]

स्कूल के मास्टर ने उसके अन्दर के छिपे गुणों को बहुत जल्दी पहचान लिया और यह देख कर कि अपनी पढ़ाई और काम में वह एक मेहनती बच्चा था उसने उसके ऊपर खास ध्यान देना शुरू कर दिया। वह उसे जितना भी सिखा पढ़ा सकता था उसने उसको उतना सब सिखाना पढ़ाना शुरू कर दिया। उसने उसको पढ़ने के लिये किताबें भी दीं।

कुछ ही समय में खरिया एक बहुत ही होशियार विद्वान बन गया। उसके सारे साथी उससे जलने लगे।

एक दिन ऐसा हुआ कि खरिया अपने मालिक किसान के किसी काम से गया हुआ था कि उसको राजा का एक दूत मिला जो राजा के लिये वे सुन्दर फूल ढूँढ रहा था। उसने दूत से पूछा — "तुम कहाँ से आये हो? किसलिये आये हो और तुम्हारा नाम क्या है?"

[34] Translated for the word "Scabs".

दूत ने राजा के सन्देश का कागज उसको दिखा दिया। खरिया ने उसे पढ़ा और बोला — "मुझे रास्ते के खर्च के लिये कुछ पैसे दो मैं इन फूलों को ले आऊँगा।"

दूत लड़के के तैयार और साफ जवाब से बहुत खुश हुआ। उसने उसको रास्ते के लिये जरूरी खर्चा दिया और राजा की एक बन्द चिट्ठी दी और वापस राजा के पास अपनी खोज की सफलता बताने के लिये दौड़ पड़ा।

खरिया सबसे पहले अपनी माँ के पास दौड़ा गया और उसे बताया कि वह इस काम की कोशिश करना चाहता है। उसकी माँ ने उसे बहुत समझाया कि वह ऐसी बेवकूफी न करे पर वह उसकी बात सुनने वाला नहीं था।

फिर वह अपने मालिक किसान और मास्टर जी के पास गया और उनको अपना इरादा बताया। उनसे उसने छुट्टी ली और अपनी यात्रा पर रवाना हो गया।

दो तीन दिन में वह एक जंगल में पहुँचा जहाँ उसको एक बहुत ही सुन्दर और लम्बा आदमी मिला। उसने उस लम्बे आदमी का हाथ पकड़ा और बोला "सलाम।"

उस आदमी ने उसके सलाम का जवाब दिया और उससे पूछा कि वह कहाँ से आया था कब आया था और कहाँ जा रहा था। लड़के ने उसे सब कुछ बता दिया जैसा कि उसने अपनी माँ मालिक और मास्टर जी से कहा था। उसने उससे कुछ भी नहीं छिपाया।

उस लम्बे आदमी ने उसको आशीर्वाद दिया उसके लिये प्रार्थना की और फूलों की खोज में जाने के लिये कह दिया।

पर लड़के ने उसका हाथ नहीं छोड़ा जब तक कि उसने उसको यह नहीं बता दिया कि उसको किस दिशा में जाना चाहिये। यह देख कर कि लड़का वाकई फूल लेने जाना चाहता है और एक लायक बच्चा है उसने उसको बताया कि वह कौन था और कैसे अपनी पवित्रता के सहारे वह अपने लिये वही ला सकता था जो उसे चाहिये।

खरिया बोला — "यही तो मैं आपसे चाहता था। मुझे लगा कि आप कोई पवित्र आदमी[35] हैं और आपके अन्दर बहुत ताकत है। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे यह बतायें कि मुझे ये फूल मिलेंगे या नहीं। मेरी किस्मत में क्या लिखा है और मेरा नाम क्या है।"

उस लम्बे आदमी ने जवाब दिया — "मेरे बच्चे। तुमको ये फूल मिल जायेंगे। तुम्हारी किस्मत अच्छी है और तुम्हारा नाम गुल्लाला शाह है।"

कह कर उसने अपना बॉया हाथ खरिया के सिर पर रखा और एक खोखला कद्दू ले कर उसमें पानी भरा और उसके ऊपर डाल दिया। इससे लड़के की खुजली और जो और कुछ कमियॉ थीं वह सब गायब हो गयीं। अब वह बहुत सुन्दर हो गया था।

---

[35] Translated for the words "Holy Man"

यह करने के बाद आदमी ने उससे जाने के लिये कहा। जब खरिया जा रहा था तो उसने उसको फिर से आशीर्वाद दिया।

कई दिनों की यात्रा के बाद खरिया एक जगह पहुँचा जहाँ उसने एक बूढ़ी विधवा के घर में ठहरने की जगह माँगी। वह उस बुढ़िया से बहुत ही इज़्ज़त और नम्रता से बात करता था। उसको खाना देता था और उसकी दूसरी तरीके से भी सहायता करता था। वह रोज शहर में इधर उधर घूमने जाता और हमेशा ही उस बुढ़िया के लिये कुछ न कुछ ले कर आता था।

एक दिन जब वह उस देश के राजा के महल के पास की नदी के किनारे नहा रहा था तो इत्तफाक से राजकुमारी ने उसको देख लिया और यह देख कर कि वह लम्बा और सुन्दर है अपनी एक दासी को उसे बुलाने भेजा।

खरिया ने कहा कि ठीक है वह उसके साथ जायेगा तो दासी उसको ले कर एक बागीचे में आ गयी जहाँ राजकुमारी ने उसको लाने के लिये कहा था। वे लोग वहाँ कई दिनों तक मिलते रहे और जितना ज़्यादा वे एक दूसरे से मिले वे एक दूसरे को पसन्द करने लगे।

आखिर राजकुमारी ने खरिया से शादी करने का फैसला कर लिया। वह अपने माता पिता के पास उससे शादी करने के लिये उनकी इजाज़त लेने गयी। राजा और रानी ने पहले उस नौजवान को देखने की और उसके बारे में जानने की इच्छा प्रगट की। सो

इस बात को खरिया को बता दिया गया और उससे शाही दरबार में आने के लिये कहा गया।

कुछ दिन बाद ही राजा ने देखा कि लड़का सुन्दर है होशियार है और उसका दामाद बनने के लायक है तो उसने अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर दी। शादी बहुत शानदार हुई उसमें बहुत पैसा खर्च किया गया। हर मौके पर बहुत शानदार खर्च हुआ।

खरिया जो अब गुल्लाला शाह के नाम से जाना जाता था अब रोज दरबार में जाता था। लोग उसकी बातें बड़ी ध्यान और इज़्ज़त से सुनते थे। उसकी कोशिशों से राज्य में कई नियम और कानून ऐसे बनाये गये जिनसे राज्य की बहुत उन्नति हुई। पिछली गलतियॉ भी सुधारी गयीं।

एक दिन गुल्लाला शाह ने राजा से दरबार में न आने की इजाज़त मॉगी क्योंकि वह शिकार खेलने जाना चाहता था। राजा ने तुरन्त ही उसको इजाज़त दे दी और उसके साथ जाने के लिये उसको कई सिपाही और घोड़े दे दिये।

बीच दिन में गुल्लाला शाह का घोड़ा जिस पर वह सवार था एक शिकार के पीछे भाग चला और इतनी तेज़ भागा कि उसके साथी लोग उससे काफी पीछे रह गये। कोई दूसरा घोड़ा उसका मुकाबला नहीं कर सका सो गुल्लाला शाह अकेला पड़ गया।

आखिर वह भागता हुआ घोड़ा अचानक रुक गया क्योंकि उसके पैर किसी अनदेखी जंजीर से बॉध दिये गये थे।

यह देख कर कि घोड़ा इस तरीके से बँध गया था गुल्लाला शाह उस पर से उतर पड़ा और अपना तीर कमान ले कर पहाड़ पर चढ़ गया ताकि वह वहाँ से कुछ देख सके कि यह काम किसने किया और अगर कोई दिखायी दे जाये तो वह उसे मार सके।

जब वह पहाड़ पर चढ़ रहा था तो आधी चढ़ाई पर ही उसको एक तालाब दिखायी दिया जिसके किनारे एक पेड़ खड़ा था और उस पर बहुत सारे फूल खिले हुए थे। उस पेड़ के नीचे वह थोड़ी देर के लिये सुस्ताने के लिये बैठ गया।

जब वह वहाँ बैठा हुआ था तो एक बन्दर उसके पास आया। उसने उसको मारना चाहा सो उसने अपना तीर कमान उठाया और तीर कमान पर साधा कि बन्दर को यह पता चल गया कि वह उसको मारना चाहता था सो वह वहाँ से भाग गया और जा कर तालाब में कूद गया।

इससे गुल्लाला शाह बहुत नाउम्मीद हो गया और जहाँ वह कूदा था वहाँ कुछ देर तक देखता रहा कि वह वहाँ फिर आयेगा। पर लो वहाँ बन्दर की जगह एक बहुत सुन्दर लड़की निकल आयी। उसने पानी से बाहर निकल कर उसे चूम लिया।

गुल्लाला शाह तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया पर क्योंकि वह बहुत अच्छा और पवित्र आदमी था इसलिये उसने अपनी समझ नहीं खोयी थी।

उसने उस लड़की से पूछा कि वह कौन थी। उसने देखा कि वह उसको कोई जवाब देने में हिचकिचा रही थी तो उसने उसको मारने की धमकी दी कि अगर उसने उसे जल्दी से नहीं बताया तो वह उसको मार देगा।

वह लड़की डर गयी और बोली — "मेरा नाम पंज फूल है और मैं इस देश के राजा की बेटी हूॅ। मैं हमेशा अच्छी रही हूॅ और अच्छा करने की कोशिश करती हूॅ। हर आदमी मुझे प्यार करता है। जब में बहुत छोटी थी तो मेरे पिता ने अपने दरबान के बेटे से मेरी शादी तय कर दी थी।

समय निश्चित हो गया तैयारियॉ हो गयीं पर शादी के दिन से कुछ दिन पहले ही दरबान का बेटा रोज की तरह अपने साथियों के साथ खेलने गया। वे लोग वजीर बादशाह खेल रहे थे यानी एक बच्चा बादशाह बना हुआ था दूसरा वजीर बना हुआ था और बाकी बच्चे और औफीसर बने हुए थे। हर बच्चे को अपने अपने हिसाब से अपने अपने डायलौग बोलने थे।

उस दिन दरबान का बेटा राजा बना हुआ था और शाही सिंहासन पर बैठा था। जब वे खेल रहे थे तो असली राजा का बेटा वहॉ से गुजरा। उसने जब वह खेल देखा तो खेल वाले राजा को शाप दिया "तुम परियों के देश से नीचे गिर जाओ और जा कर मामूली लोगों के साथ रहो।"

इस शाप के साथ ही दरबान का बेटा मर गया और उसके बाद वह धरती पर मामूली लोगों में जा कर पैदा हो गया। जब मेरी एक साथिन ने मुझे यह बताया तो मुझे बहुत दुख हुआ क्योंकि मैं उस दरबान के बेटे को बहुत प्यार करती थी और उसके सिवा किसी और से शादी करना नहीं चाहती थी।

राजा और रानी ने मेरा मन बदलने की बहुत कोशिश की पर मैं अपने इरादे की पक्की थी। इसके बाद मेरा सारा समय लोगों की भलाई करने में और पवित्र लोगों[36] के साथ बात करने में गुजरने लगा।

आज मैं इधर पूजा करने आयी थी। एक दिन एक पवित्र आदमी इधर आया था वह मुझे बहुत अच्छा लगा तो आज मैं उससे मिलने की आशा में इधर आयी थी कि शायद आज मेरी मुलाकात उससे यहाँ फिर हो जाये।

वह मुझे मुझसे बहुत खुश लगा क्योंकि मैंने उससे जो कुछ भी माँगा वह उसने मुझे दिया। एक बार मैंने उससे पूछा कि मैं दरबान के बेटे से कैसे मिल सकती हूँ। उसने कहा कि वह उस लड़के को जानता है उसका नाम गुल्लाला शाह है और अगर मैंने उसकी बात ठीक से मानी तो मैं उसको देखने में सफल हो जाऊँगी।

[36] Translated for the words “Holy Man”.

मैंने उससे वायदा किया कि मैं उसकी हर बात मानूँगी। उसने फिर कहा इस बात का खास ध्यान रखना क्योंकि राजा अपने दूसरे जादुओं से तुम्हारे उससे मिलने को रोकने की पूरी कोशिश करेगा।

उसने मुझे अगर मुझे अपना उद्देश्य पूरा करना था तो उसको पूरा करने के लिये मोती की एक ऐसी माला दी जिस पर कोई जादू असर नहीं कर सकता था। वह माला मैं अक्सर पहनती हूँ और उसको खास तरीके से सँभाल कर रखती हूँ।

उसके बाद मैं अपने घर चली गयी। पहला मौका पाते ही मैं अपने पिता के पास गयी और जा कर उन्हें वह सब बताया जो मैंने गुल्लाला शाह के बारे में सुना था और उनसे विनती की कि वह जल्दी से जल्दी मेरी शादी उससे कर दें।

पर उन्होंने जब यह सुना तो वह बहुत परेशान हो गये और मुझसे कहा कि मैं उसे भूल जाऊँ क्योंकि अब वह एक मामूली आदमी था और एक मामूली आदमी से मेरी शादी नहीं हो सकती थी। यह शादी परियों के देश पर एक धब्बा होती।

पर मैंने सोच रखा था कि अगर मैं शादी करूँगी तो गुल्लाला शाह से ही। राजा ने मेरी तरफ गुस्से भरी नजरों से देखा और पलट कर मैंने भी। फिर मैंने महल छोड़ दिया। यही मेरी कहानी है। अब अगर तुम गुल्लाला शाह को ढूँढने में मेरी कुछ सहायता कर सकते हो तो मैं हमेशा तुम्हारी ऋणी रहूँगी।”

इसी समय अचानक एक अजीब सी घटना घटी। गुल्लाला शाह ने भी उसको बता दिया कि वह कौन था और उसको चूम लिया। उस लड़की ने भी उसको फिर पहचान लिया और उसका हाथ अपने हाथ में ले कर बोली — "आखिर मैंने अपना खोया हुआ प्यार पा ही लिया। अल्लाह मुझे हमेशा उसके साथ रहने दे।"

एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए वे तालाब से वहाँ चले गये जहाँ उनका घोड़ा खड़ा हुआ था। दोनों घोड़े पर चढ़े जो अब तक शान्त खड़ा था और वहाँ से चल दिये। राजा ने उनको ढूँढने के लिये कुछ सिपाही भेजे थे वे उनसे जा कर मिल गये और सब गुल्लाला शाह के घर चले गये।

घर पहुँच कर गुल्लाला शाह ने पंज फूल को अपनी पहली पत्नी से मिलवाया। दोनों राजकुमारियाँ एक दूसरे से मिल कर बहुत खुश हुईं और कुछ समय तक वे सब खुश खुश रहे।

फिर एक दिन गुल्लाला शाह की पहली पत्नी ने पंज फूल से उसकी वह मोती की माला माँगी जो वह हर समय पहने रहती थी। पंज फूल ने यह कहते हुए उसको उसे देने से मना कर दिया कि वह उसकी जान की रक्षा करता है इसलिये वह उसको कभी अपने गले से नहीं निकाल सकती।

पहली पत्नी ने बार बार उससे उसका वह माला माँगी और उससे वायदा किया कि वह उसको वैसी ही सुन्दर और कीमती मोती की माला उसके बदले में दे देगी पर पंज फूल ने उसको उसे देने की

या बदले में दूसरी माला लेने की कोई परवाह नहीं की। वह अपने इरादों की पक्की थी और एक पल के लिये भी उस माला को अपने गले से अलग करने के लिये तैयार नहीं थी।

उसके इस व्यवहार से गुल्लाला शाह की पहली पत्नी बहुत नाराज हो गयी और गुल्लाला शाह से अपने झगड़े के बारे में बताया। उसने उससे विनती की कि वह उससे उसको वह माला दिलवा दे। गुल्लाला शाह ने वायदा किया कि वह वैसा करने की अपनी पूरी कोशिश करेगा।

जब गुल्लाला शाह ने पंज फूल से वह माला उसकी पहली पत्नी को देने के लिये कहा तो पंज फूल ने यह कहते हुए उसको भी मना कर दिया कि उसमें उसकी ज़िन्दगी छिपी हुई थी और वह उसके लिये सारे खतरे बीमारियॉ और मुश्किल का समय दूर करने का एक साधन थी। अगर उसने उसे अपने गले से निकाल दिया तो वह बीमार भी पड़ सकती थी उनसे छीनी भी जा सकती थी और फिर वह मर जाती।

पर गुल्लाला शाह ने जब कई बार उससे जिद की तो वह उसको अपने प्यार की वजह से मना नहीं कर सकी। उसने वह माला गुल्लाला शाह को दे दी और गुल्लाला शाह ने उसे अपनी पहली पत्नी को दे दिया।[37] इसके तुरन्त बाद ही पंज फूल गायब हो

[37] [My Note : it seems ridiculous that after knowing that something which contained somebody’s life could be taken like this from him or her. How can somebody be so selfish to play with one’s life?]

गयी। जब गुल्लाला शाह और उसकी पहली पत्नी को इस बात का पता चला तो वे बहुत दुखी हुए और बहुत रोये।

वे कहने लगे — "यह हमने क्या किया कि एक छोटी सी चीज़ के लिये हमने अपनी प्यारी पंज फूल को खो दिया। वह अपने पति का कितना कहना मानती थी। अफसोस हमने ऐसा क्यों किया अब हम ही अपनी प्यारी पंज फूल की मौत के जिम्मेदार हैं।"

जहॉ तक गुल्लाला शाह का सवाल था वह नहीं जानता था कि वह इस दुख में क्या करे। वह तो बस दिन रात रोता ही रहा। आखिर जब वह रोते रोते थक गया तो वह बीमार सा हो गया तो उसने वह जगह छोड़ देने का विचार किया और उन फूलों की खोज में जाने का विचार किया जिसकी वजह से उसने अपनी यात्रा शुरू की थी।

राजा ने जब उसको कमजोर और दुबला होते देखा तो उसको वहॉ से जाने की इजाज़त दे दी। यात्रा के लिये उसने उसको कुछ पैसे भी दे दिये।

सो गुल्लाला शाह वहॉ से चल दिया और अगले दिन परियों के देश में उस पहाड़ पर पहुॅच गया जहॉ वह पंज फूल से पहली बार मिला था। वह उस पहाड़ पर ऊॅचे और ऊॅचे चढ़ता चला गया।

वहॉ आ कर वह एक सड़क पर आ निकला जिस पर दो आदमी उसी की तरफ आ रहे थे। वे परियों के देश के वज़ीर के नौकर थे।

वज़ीर का नाम चलाने के लिये उसका कोई बेटा नहीं था इसलिये उसकी पत्नी ने अपने कई आदमी इधर उधर भेजे हुए थे ताकि वे उसको लिये कोई ऐसा नौजवान ढूँढ कर ला सकें जिसको वह गोद ले सके।

उसके ये आदमी हर जगह घूम रहे थे, दूर भी और पास भी, पर अभी तक उनको कोई ऐसा आदमी नहीं मिल पाया था जिसको वे ले जा कर वजीर की पत्नी को दे देते। इसके लिये वे बहुत बेचैन थे और अब नाउम्मीद होते जा रहे थे। उनको समझ ही नहीं आ रहा था कि वे क्या करें। वे खाली हाथ भी वापस नहीं जा सकते थे।

जब उन्होंने गुल्लाला शाह को देखा तो उन्होंने सोचा कि वे उसको खा जायें पर बाद में उन्होंने देखा कि वह तो बहुत होशियार और सुन्दर है तो उन्होंने उसे वजीर के पास ले जाने की सोची। उन्होंने गुल्लाला शाह को पकड़ लिया और परियों के देश के वजीर के घर ले गये।

दोनों नौकरों ने यह दिखाया कि वह एक परी का बेटा है जो वजीर की पत्नी की बहिन है हालाँकि वह उसे जानती नहीं थी। जिसने भी गुल्लाला शाह को देखा वह उसे देख कर बहुत खुश हुआ। उसके बाद वह उनके घर में ही रहने लगा और वहाँ के सब लोग उसको वजीर का वारिस मानने लगे।

वजीर रोज राजा के दरबार में जाता था और जब वह दिन भर के काम से हारा थका शाम को अपने घर पहुँचता तो वह अपने गोद लिये बेटे को बुलाता और उससे बात करने में अपना समय बिताता। दोनों घंटों तक बात करते रहते। गुल्लाला शाह उससे दरबार की खबरें पूछता और वजीर उसको सब बातें बताता।

एक शाम जब वे ऐसी ही बातें कर रहे थे वजीर ने उसे बताया कि दरबार में उस दिन बड़ी अजीब सी बात हुई। परियों का राजा अपनी बेटी पंज फूल से बहुत नाराज था क्योंकि उसने गुल्लाला शाह नाम के एक मामूली आदमी से अपना रिश्ता जोड़ लिया था और वह किसी दूसरे आदमी से शादी नहीं करना चाहती थी।

वह घर से भाग गयी थी। बहुत दिनों तक उसका कोई पता नहीं चला था। इसमें कोई शक नहीं कि वह उसी मामूली आदमी को ढूँढ रही होगी। पर राजा ने अपने किसी बहुत ही मजबूत जादू से उसको अपने पास बुला लिया था और अब उसको कोई बहुत ही कड़ी सजा मिलने वाली है।

उसका शरीर लकड़ी का बना दिया जायेगा और उसे एक बागीचे में खड़ा कर दिया जायेगा ताकि उससे दूसरी परियों को सीख मिल सके और वे ऐसा काम न कर सकें।

यह सुन कर तो गुल्लाला शाह के होश उड़ गये वह बड़ी मुश्किल से उससे आगे बात कर सका। उसने मन में कहा "तो यहाँ है पंज फूल। उसने सोचा असल में जैसे ही उसने अपना मोतियों की

माला उतारी होगी वैसे ही उसे यहाँ वापस ले आया गया होगा। उसको बेचारी को मेरी बेवकूफी की सजा भुगतनी पड़ रही है। बहुत अफसोस है मुझे इस बात का।"

काफी देर के बाद जब वह कुछ होश में आया तो उसने वजीर से पूछा कि पंज फूल को कड़ी सजा से बचाने का क्या कोई रास्ता है। वजीर ने कहा "हाँ है।"

उसने आगे कहा — "अगर गुल्लाला शाह यहाँ आ जाये और उसकी लकड़ी की मूर्ति को जला कर राख कर दे और उस राख को जिस बागीचे में वह मूर्ति खड़ी है उसमें बीच में बने एक तालाब में फेंक दे तो वह अपनी पुरानी शक्ल में आ जायेगी।"

गुल्लाला शाह तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया। उसने जल्दी ही वजीर से विदा ली और जा कर अपने कमरे में सो गया। पर उसको नींद नहीं आयी। वह बहुत खुश था।

जब उसने यह पक्का कर लिया कि घर के सभी लोग गहरी नींद सो गये तो वह उठा और उठ कर पंज फूल के बागीचे में गया जहाँ उसकी लकड़ी की मूर्ति खड़ी थी। उसने उसको जला कर राख किया और उसकी राख तालाब में फेंक दी।

जैसे ही उसने ऐसा किया तो लो पंज फूल तो उसके सामने आ कर ऐसे खड़ी हो गयी जैसे वह उसके सामने पहले दिन तालाब में से निकल कर खड़ी हुई थी।

गुल्लाला शाह बोला — "प्रिये मैं इतना बेवकूफ कैसे हो गया कि मैंने तुम्हें इतना परेशान किया। मुझे माफ कर दो और मुझसे वायदा करो कि तुम मुझे कभी छोड़ कर नहीं जाओगी। चलो हम लोग बहुत सारी जगह घूमेंगे जहाँ तुम्हारे पिता के बेरहम हाथ तुम तक कभी नहीं पहुँचें।"

पंज फूल बोली — "प्रिय मैंने तुम्हें माफ किया पर तुम्हारे साथ जाना अब मेरे वश में नहीं है। अब मैं अपने पिता की हूँ। जब तक मेरे पास मेरी वह जादू के मोती की माला न हो मैं उनको धोखा नहीं दे सकती। मैं कहीं भी जाऊँ वह मुझे वहीं से बुलवा सकते हैं। और अगर ऐसा हो गया तो मेरा मामला और भी बुरा हो जायेगा।

मैं तुमसे विनती करती हूँ अब तुम यहाँ से चले जाओ कहीं ऐसा न हो कि मेरी वजह से तुम्हें कोई नुकसान पहुँचे। मेरे लिये तुम प्रार्थना करना कि मेरे पिता राजा जब यह सुनें कि मैं फिर से ज़िन्दा कर ली गयी हूँ तो वह मुझ पर दया करें। अब तुम यहाँ से तुरन्त ही चले जाओ जहाँ तुम यहाँ से ज़्यादा सुरक्षित रह सको।"

गुल्लाला शाह ने तब उसको वह सब बताया जो कुछ उसके साथ हुआ था कि वह कैसे उसकी खोज में इधर उधर घूम रहा था और वह अब कैसे राजा के वजीर का गोद लिया बेटा और वारिस बन गया है। जाते समय वह उससे बोला कि वह उससे फिर मिलेगा और अगर फिर भी राजा उसको सजा देना चाहेगा तो वह उस सजा की कोई तरकीब ढूँढेगा और उसे फिर से ज़िन्दा कर लेगा।

अगली सुबह जब शाही चौकीदारों ने देखा कि पंज फूल फिर से ज़िन्दा हो गयी है तो वे राजा के पास गये और उसको जा कर यह बताया। राजा को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ उसने पंज फूल को बुला भेजा।

जैसे ही वह आयी तो उसने उससे पूछा — "यह कैसे हुआ कि तुम हमको परेशान करने के लिये फिर से आ गयी। जाओ तुम अब एक सॉप बन जाओ और दूर किसी जंगल में जा कर रहो।"

कह कर उसने एक तरफ इशारा किया जिस तरफ एक बहुत ही घना जंगल था और जिसमें बहुत सारे जंगली जानवर रहते थे। तुरन्त ही पंज फूल एक सॉप बन गयी और जा कर उस जंगल में रहने लगी।

उस शाम जब वजीर अपने घर लौटा तो उसने उस दिन जो कुछ भी दरबार में हुआ था सब गुल्लाला शाह को बताया। गुल्लाला शाह बोला "बड़ी अजीब सी बात है। एक राजकुमारी के साथ ऐसा कोई कैसे कर सकता है। क्या वह हमेशा सॉप ही बनी रहेगी।"

वजीर बोला — "नहीं इसका एक इलाज है।"

तब गुल्लाला शाह के पूछने पर उसने बताया "अगर गुल्लाला शाह उस जंगल में पहुॅच जाये और एक गुफा खोदे जो तीन फीट गहरी हो और इतनी चौड़ी हो जिसमें हो कर दो आदमी चले जायें।

फिर उस गुफा के मुॅह को ढकने के लिये एक ढकना बनाये जिसमें एक छेद हो। उसके बाद वह जंगल में घूम घूम कर चिल्लाता

रहे "पंज फूल गुल्लाला शाह यहाँ है। पंज फूल गुल्लाला शाह यहाँ है।" और यह कह कर उस गुफा में जा कर छिप जाये।

अगर वह यह काम ऐसे ही करे जैसा मैंने कहा है तो पंज फूल जो इस समय साँप के रूप में है तो वह गुफा के मुँह पर लगे उस ढकने के छेद से हो कर उस गुफा में चली आयेगी।

एक और बात उसके याद रखने की यह भी है कि जितना भी लम्बा साँप उस गुफा के अन्दर आ जाये वह उसका उतना हिस्सा काट ले फिर उसको और बहुत छोटे छोटे हिस्सों में काट ले और एक कपड़े में बाँध ले।

फिर इन टुकड़ों को ले जा कर वह पंज फूल बागीचे के तालाब में डाल दे। अगर यह काम इसी तरह से किया गया तो पंज फूल अपनी सुन्दरता लिये हुए फिर से वापस आ जायेगी।

जब गुल्लाला शाह ने यह सुना तो उसे काफी चैन पड़ा। कुछ देर और बात करने के बाद उसने वजीर से विदा ली और सोने चला गया। वह सो नहीं सका वह तो बस उसी समय का इन्तजार करता रहा जब वह अपनी प्यारी पंज फूल को फिर से ज़िन्दा कर लेगा।

जब उसने यह पक्का कर लिया कि घर के सब लोग सो गये वह उस जंगल में गया जहाँ पंज फूल साँप बन कर रह रही थी। उस रात उसने गुफा के लिये केवल जगह देखी और वापस घर आ गया।

अगली रात वह एक कुल्हाड़ी फावड़ा आदि औजारों के साथ वहॉ गया और जा कर एक गुफा खोदी। उसने गुफा का मुॅह ढकने के लिये एक ढकना बनाया जिसमें एक छेद भी बनाया।

फिर वह जंगल में जा कर चिल्ला चिल्ला कर पुकारने लगा — "पंज फूल गुल्लाला शाह यहॉ है। पंज फूल गुल्लाला शाह यहॉ है।" इस तरह पुकार कर वह गुफा में जा कर छिप गया।

पंज फूल ने जब अपना नाम सुना तो वह सॉप के रूप में आयी और गुफा में घुसने लगी। गुफा के ढकने के छेद में से हो कर जब वह गुफा में घुस रही थी तो उसका काफी शरीर घायल हो गया।

गुल्लाला शाह ने जितना भी वह सॉप गुफा के अन्दर घुस सका उतना काट लिया और फिर उसके छोटे छोटे टुकड़े कर के एक कपड़े में बॉध लिये। उन सबको इकट्ठा कर के वह पंज फूल बागीचे में ले गया और तालाब में फेंक दिये।

जैसा कि वजीर ने कहा था पंज फूल एक बार फिर पानी में से उसी तरह निकल आयी जैसे वह उसके सामने पहली बार निकल कर आयी थी।[38]

गुल्लाला शाह ने उसको गले लगा लिया। फिर वे बहुत देर तक बात करते रहे। जब सुबह की रोशनी होनी शुरू हुई तब वे

---

[38] This is again ridiculous that inspite of knowing the importance of the pearl necklace Gullala Shah did not bring it from his first wife and gave it to Panj Phool to wear so that she is safe for ever.

वहाँ से चले गये। दोनों में से कोई एक दूसरे को छोड़ना नहीं चाहता था पर वे क्या कर सकते थे।

अगर गुल्लाला शाह यह चाहता था कि वजीर को उसकी गैरहाजिरी का पता न चले तो अब उसके घर लौटने का समय हो गया था जबकि पंज फूल वहाँ से नहीं जा सकती थी। उसने वहाँ से जाने की कोशिश भी की पर राजा के जादू के ज़ोर से वह वहाँ से कहीं नहीं जा सकी। सो वे अलग हो गये।

गुल्लाला शाह जल्दी से वजीर के घर आया और बस समय से ही अपने कमरे में घुस सका। एकाध घंटे में ही मजदूर लोग अपने काम पर निकले तो उस जगह से गुजरे जहाँ पंज फूल बैठी हुई थी।

वे उसको वहाँ बैठा देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने जा कर यह राजा को बताया। राजा ने जब यह सुना तो उसने अपने वज़ीर को बुला भेजा और उससे इस बारे में सलाह माँगी।

राजा ने कहा — "क्या तुमको यह नहीं लगता कि गुल्लाला शाह यहीं कहीं है और यह सब कर रहा है?"

वजीर बोला — "यह तो बिल्कुल नामुमकिन है सरकार। पहली बात तो वह यहाँ तक आ ही नहीं सकता। दूसरे एक मामूली आदमी होने के नाते वह यह सब कैसे जान सकता है। यह तो कोई बहुत ही बड़ा आदमी होगा जो यह सब कर रहा होगा। उसको अल्लाह की दुआ होगी तभी यह सब हो सकता है।"

पंज फूल को फिर से बुलाया गया और इस बार उसको एक सोने की कील में बदल दिया गया जिसको तुरन्त ही एक नौकर को दे दिया गया और उससे कहा गया कि वह उसको किसी नाव[39] में ठोक दे जो अभी बन रही हो। नौकर उस कील को ले कर चला गया और जो भी नाव उसको सबसे पहले दिखायी दी उसने उसको उसी में ठोक दिया।

राजा के पास से वजीर अपने घर गया नहाया धोया और फिर गुल्लाला शाह को बुलाया और उसको उस दिन की सारी खबर सुनायी। जब उसने सुना कि राजकुमारी फिर से ज़िन्दा हो गयी है तो उसने बहुत आश्चर्य प्रगट किया।

वह बोला — "यह तो बड़े आश्चर्य की बात है कि राजा ने उसको एक सोने की कील में बदल दिया है। मुझे तो ऐसा लगता है कि अब इससे उसके बदलने का कोई तरीका ही नहीं है।"

वजीर बोला — "हॉ है न। अगर गुल्लाला शाह किसी तरह से यहॉ आ जाये और वह उस नाव में बैठ जाये जिसमें वह कील ठुकी हुई है। फिर वह उस कील को ढूंढ ले और निकाल कर घिस कर उसका पाउडर बना ले और उस पाउडर को पंज फूल के बागीचे के तालाब में डाल दे तो वह उसको फिर से ज़िन्दा कर सकता है।

और अगर वह इस बार ज़िन्दा हो गयी तो इसके बाद राजा का कोई जादू उस पर नहीं चल पायेगा।"

---

[39] Means "in any Kashmiri River Boat" or "Shikara" as they call it.

गुल्लाला शाह के लिये इतना जानना काफी था। आज देर हो गयी थी सो वजीर और गुल्लाला शाह दोनों सोने चले गये। इस इलाज को सुन कर गुल्लाला शाह ने इसमें अपनी कोई रुचि नहीं दिखायी पर वह बहुत ज़्यादा खुश था क्योंकि अगर वह इस बार उसको ज़िन्दा कर सका तो अपने सख्त और नीच पिता के चंगुल से हमेशा के लिये छूट जायेगी। उसने सोचा इस बार मैं उसको जरूर ही ज़िन्दा करूँगा।

गुल्लाला शाह इस काम के लिये तुरन्त ही नहीं गया उसने कुछ इन्तजार किया ताकि इस बात का हल्ला गुल्ला थोड़ा कम हो जाये। इसके लिये उसने कई महीने इन्तजार किया।

एक दिन उसने वजीर की पत्नी से कई ऐसी जगहें देखने की इजाज़त माँगी जिनको वह देखना चाहता था। उसने उससे इस यात्रा के लिये वज़ीर की इजाज़त भी माँगने के लिये कहा।

उसने उससे यह भी कहा कि अब उसकी उम्र ऐसी हो गयी थी कि वह अपनी देखभाल खुद कर सकता था। वह उन जगहों के बारे में भी नहीं सुनना चाहता था जिनके बारे में उसके पिता वज़ीर उसे कई बार बता चुके थे।

उसकी माँ को यह सुन कर बहुत खुशी हुई कि उसका बेटा अब घूमना चाहता है पर वह उसको इस तरह जाने की इजाज़त नहीं दे सकती थी क्योंकि उनमें से कुछ जगहों के रास्ते बहुत खतरनाक थे और उन पर जाना बहुत मुश्किल था। खास कर के ऐसे बच्चे के

लिये जिसको उन्होंने गोद ले कर इतने प्यार और कोमलता से पाला हो।

गुल्लाला शाह ने उसकी इस बात को बड़ी सहजता से मना किया। उसने बच्चों की तरह से अपने आपको पूरा ऊपर खींचा और बोला — "देखो न माँ मैं अब कितना बड़ा हो गया हूँ। और फिर वजीर का बेटा क्या उन सब मुश्किलों से डरेगा। अगर मैं इस तरह का निकलूँ तो लानत है मुझ पर।

इससे तो अच्छा है कि मैं उन लोगों के हाथों मारा जाऊँ बजाय इसके कि मैं जब बाद में एक ऐसे ताकतवर राज्य का वजीर बनूँ जैसे कि मेरे पिता जी हैं। माँ तुम डरो नहीं और मुझे जाने दो। अगर तुम्हारे पास कोई तलिस्मा हो तो मुझे दे दो क्योंकि मैं बेकार में ही कोई परेशानी क्यों सहूँ।"

अपने बेटे का यह अच्छा जवाब सुन कर वजीर की पत्नी उसको जाने की इजाज़त दे दी और उसे अपनी निशानी वाली अँगूठी दे कर कहा — "जब भी कभी तुम किसी मुश्किल में पड़ जाओ तो तुम इस अँगूठी को आग को दिखाना। उसी समय दो जिन्न उस आग में से प्रगट हो जायेंगे और तुम्हारी सहायता करेंगे।"

फिर उसने उसको रास्ते के खर्चे के लिये बहुत सारे पैसे दिये। वजीर ने भी जब अपनी पत्नी से अपने बेटे का यह प्रोग्राम सुना तो वह यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

गुल्लाला शाह जितनी जल्दी हो सका उतनी जल्दी अपनी यात्रा पर चल दिया। कुछ समय की यात्रा के बाद एक दिन उसने पाया कि वह एक ऐसी नाव में बैठा था जिसमें सोने की कील लगी थी। उसकी आँखों ने उसे तुरन्त ही ढूँढ लिया था हालाँकि उस पर ऐसे ही किसी की नजर नहीं पड़ सकती थी क्योंकि वह कील एक लकड़ी के तख्ते से ढकी हुई थी।

गुल्लाला शाह ने अपनी असलियत छिपा कर नाव के मालिक से विनती की कि वह उसको अपनी नावों के लिये एक नौकर रख ले। मालिक मान गया और उसने उसे एक नाविक की नौकरी दे दी जैसे कि वह वैसी ज़िन्दगी जीने का आदी हो।

कुछ समय बाद उसने अपने मालिक से कहा कि उसने एक सपना देखा था। उसके उस सपने में दो आदमी आये थे जिन्होंने भाले से उसकी नाव के तले में छेद कर दिया जिससे उसकी नाव डूब गयी।"

फिर वह आगे बोला — "मैं जानता हूँ कि इस सपने का मतलब क्या है। इसका मतलब है कि आपके किसी दुश्मन ने उसकी नाव में कोई जादू की चीज़ रख दी है और अगर वह जादू की चीज़ उसमें रखी रही तो आपकी वह नाव डूब जायेगी।"

यह सुन कर नावों का मालिक बहुत डर गया। उसने गुल्लाला शाह से उस नाव में रखी वह जादू की चीज़ को ढूँढने की कोशिश करने के लिये विनती की।

गुल्लाला शाह बोला कि यह बहुत ही मुश्किल काम है फिर भी अगर नावों का मालिक यह बात किसी को न बताये तो वह उसको ढूँढने की कोशिश करेगा। मालिक ने वायदा किया कि वह किसी को नहीं बतायेगा।

तब गुल्लाला शाह एक अकेली जगह गया और आग जलायी। जब उसमें से लपटें निकलने लगीं तो उसने माँ की दी हुई अँगूठी निकाली और उसको दिखायी तो आग में से दो जिन्न निकल आये। वे उसके लिये वह सब कुछ करने को तैयार थे जो कुछ भी वह उनसे कहता।

गुल्लाला शाह ने उनसे नाव को जमीन पर लाने के लिये कहा। वे नाव को जमीन पर ले आये। गुल्लाला शाह ने उसमें से सोने की कील निकाल ली और उनसे नाव को फिर से पानी में डाल देने के लिये कहा जो उन्होंने तुरन्त ही कर दिया।

फिर वह नावों के मालिक के पास गया और छिपा कर वह सोने की कील उसको दिखायी। नावों के मालिक ने उसे देख कर आश्चर्य प्रगट किया और उसको इस तरह का जादू निकाल देने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया कि अल्लाह ने उसको इतना अच्छा नौकर दिया।

गुल्लाला शाह ने वह कील अपने पास रख ली और कुछ देर में अपने मालिक को बताया कि अब सब कुछ ठीक था। पर अब उसे कुछ दिन की छुट्टी चाहिये थी। मालिक ने उसे वह तुरन्त ही दे दी।

जादू की ॲगूठी की सहायता से वह अपने पिता वजीर के घर लौट आया।

वजीर की पत्नी घर पर अकेली ही थी क्योंकि यह समय दरबार का था। उसने अपने बेटे का स्वागत बड़े प्यार से किया जैसे मॉऐं करती हैं। कुछ देर बाद वजीर भी घर वापस आ गया तो घर में खूब खुशियॉ मनायी गयीं।

सारा शहर गुल्लाला शाह की यात्रा के बारे में जानने के लिये उत्सुक था। उसकी यात्रा की कहानियॉ और उनमें आये खतरे जो जादुई ॲगूठी से जीते गये थे शहर के हर आदमी की जबान पर थे।

एक दो दिन के बाद गुल्लाला शाह ने वह कील पीस दी और उसका पाउडर पंज फूल के बागीचे में बने तालाब में डाल दिया। जैसे ही उसने यह किया पंज फूल फिर से तालाब के पानी में से वैसी ही सुन्दर निकल आयी जैसी उसने उसे पहली बार देखा था। दोनों एक दूसरे के गले लग गये और खुश थे कि वे फिर मिल गये थे।

दोनों ने जबसे वे बिछुड़े थे तबसे अब तक की सब कहानी एक दूसरे को सुनायी। पंज फूल बोली कि अब वह उसके साथ जहॉ वह चाहे वहीं जा सकती थी पर वह उसका थोड़ा इन्तजार करे जब तक वह अपने कमरे से लौट कर आती है। वह वहॉ से अपने कुछ जवाहरात और कपड़े लाना चाहती थी जो बाद में उसकी सहायता करेंगे।

गुल्लाला शाह राजी हो गया और वह अपने कमरे में चली गयी। वहाँ से वह बहुत सारे जवाहरात और कुछ कपड़े ले कर लौटी जो बहुत कीमती थे। फिर वे परियों के देश से वापस अपने घर चल दिये।

वे बहुत जल्दी जल्दी चले और आराम करने से काफी पहले एक तालाब के पास आये जिसका पानी बिल्कुल साफ था। यहाँ वे कुछ सुस्ताये और खाना खाया। जब वे आपस में बात कर रहे थे तो गुल्लाला शाह ने पंज फूल से कुछ फूल लेने के लिये कहा जो समुद्र के किनारे वाले बागीचे में लगे हुए थे।

उसने उसे बताया कि इस बागीचे में 12 हजार फूलों वाले पेड़ थे जिनमें से हर पेड़ किसी न किसी परी का लगाया हुआ था। इसका हर फूल 12 हजार रुपये का था। यह सुन कर पंज फूल ने कहा कि वह उसकी इच्छा पूरी कर देगी और अगर कोई और भी इच्छा हो तो वह उसको बता दे।

पर ये फूल वह उसके लिये तभी ले सकती है जब परियों के देश में जहाँ ये उगते हैं वहाँ की राजकुमारी ने कभी कोई आदमी न देखा हो इसलिये वह फिर उसको कभी नहीं देख पायेगी।

कुछ दिन घूमने के बाद वे इस बागीचे में आये जो समुद्र के किनारे था। यहाँ उन्होंने एक जहाज़ किराये पर लिया जो उस समय वहीं किनारे पर लंगर डाले खड़ा था।

वे उस जहाज़ पर चढ़ गये तो पंज फूल ने गुल्लाला शाह को एक बहुत सुन्दर मोती का हार दिया और उससे तुरन्त ही जा कर एक अकेले कमरे में लैम्प की रोशनी के सामने लटकाने के लिये कहा। उसने उससे भी उसी कमरे में रहने के लिये कहा। इससे ऐसा होता कि वैसे ही कई हार उसको मिल जाते। गुल्लाला शाह ने वैसा ही किया।

इस बीच पंज फूल ने एक लड़के का वेश बनाया और अपने आपको अपने पति का नौकर बताया। फिर उसने जहाज़ को परियों की राजकुमारी वाले बागीचे की तरफ जाने का हुक्म दिया।

वहॉ पहुॅचने पर राजकुमारी के नौकर चाकर आये तो उसने उनसे जहाज़ को वहॉ से ले जाने के लिये कहा क्योंकि राजकुमारी चाहती थी कि वह शान्ति से और बिना किसी के जाने वहॉ रहे।

वह समुद्र के किनारे के उस हिस्से में अकेले घूमना चाहती थी। पर उस जहाज़ का मालिक गुल्लाला शाह और उसके नकली नौकर ने कहा कि क्योंकि उस जहाज़ पर बहुत सारा कीमती सामान था इसलिये वे वहीं रहना चाहते थे और चोरों के डर से उन्होंने जहाज़ का लंगर भी वहीं डाला था।

वे वहॉ से नहीं हटेंगे जब तक कि राजा उनको चोरों की वजह से जो कुछ भी उनका नुकसान हो वह सब वापस देने का वायदा नहीं करता और अगर वे किसी दूसरी जगह रुकेंगे तो वे चोर जरूर

आयेंगे इसलिये वे वहीं रुकना चाहते थे। जब राजा ने यह सुना तो उनको वहाँ रात को ठहरने की इजाज़त दे दी।

अगले दिन पंज फूल ने मोतियों के कुछ हार लिये जो लैम्प की रोशनी में बनाये गये थे और उनको राजकुमारी के बागीचे के पास देखने के लिये फैला दिये।

कुछ ही देर में राजकुमारी की दासियाँ वहाँ नहाने के लिये आयीं तो उन्होंने पंज फूल को देख कर उससे पूछा कि वह कौन था। उसने कहा कि वह एक बहुत ही अमीर व्यापारी का नौकर था जो जहाज़ पर था।

वह बहुत ही अच्छा था और उसके पास बहुत सारा खजाना था खास कर के मोतियों के हार जो दुनियाँ भर में बहुत सुन्दर थे और बहुत कीमती थे। जब उन दासियों ने यह सुना तो वह उस खजाने को देखने की बहुत इच्छुक हुईं। पंज फूल भी उनको उन्हें दिखाने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गयी।

जब उन्होंने वे सुन्दर हार देखे तो उन्होंने पंज फूल से कहा कि वे हार वे अपनी मालकिन को दिखाना चाहती थीं। पंज फूल राजी हो गयी और वे हार उनको उनकी राजकुमारी को दिखाने के लिये दे दिये।

राजकुमारी को वे हार इतने पसन्द आये कि वह उनको वापस देना ही नहीं चाहती थी। उसने अपनी दासियों से उन हारों के दाम

पूछने को कहा और कहा कि वह और भी हार खरीद लेगी – जितने भी वह व्यापारी उसे दे सके।

जब वे दूसरे हार भी उसके पास आ गये जो कि बहुत सारे थे तो राजकुमारी ने व्यापारी से खुद मिलने का फैसला किया क्योंकि उसने सोचा कि यह व्यापारी कोई बहुत बड़ा आदमी होगा जिसके पास इतना कीमती खजाना है।

सो परदा लगा कर वह व्यापारी के पास गयी और वहाँ पहुँच कर पंज फूल से पूछा जो व्यापारी का नकली नौकर था कि व्यापारी का कमरा कौन सा था ताकि वह उन हारों का सौदा कर सके जो उसने चुने थे।

पंज फूल तो इस बात की आशा कर ही रही थी। वह इस मामले में किसी को भी धोखा देना नहीं चाहती थी सो उसने राजकुमारी से कहा कि व्यापारी तो उस समय उससे मिल नहीं सकता क्योंकि उस दिन उसने कोई खास पूजा की थी सो वह इस समय किसी स्त्री से बात नहीं कर सकता था।

राजकुमारी ने उससे पूछा — "मैं उस व्यापारी से क्यों नहीं मिल सकती। मैं एक अच्छी स्त्री हूं और मैंने ऐसा अजीब आदमी कभी नहीं देखा। मुझे यकीन है कि मेरे यहाँ होने से उसकी कोई बदनामी नहीं होगी।"

पंज फूल फिर बोली — “अगर मैं आपको उसके कमरे तक ले भी जाऊँ तो भी वह आपसे नहीं मिलेगा बल्कि और गुस्सा होगा। वह आपके सामने आयेगा ही नहीं।”

यह सुन कर राजकुमारी की उससे मिलने की इच्छा और बढ़ गयी। उसने कहा कि वह अकेले ही उसके कमरे में उससे मिलने जायेगी और इस तरह से पंज फूल की इस बात में कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

पंज फूल कुछ नहीं बोली और राजकुमारी व्यापारी के कमरे तक अकेली ही चली गयी और जा कर उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया। व्यापारी ने दरवाजा नहीं खोला और अन्दर से ही बोला — “मैं तुम्हारे लिये दरवाजा नहीं खोल सकता। मैं किसी अजनबी स्त्री से नहीं मिल सकता इसलिये में तुम्हें अन्दर भी नहीं बुला सकता।”

पर राजकुमारी तो उसकी सुनने वाली नहीं थी। उसने पूछा “किसलिये। मैंने कभी किसी अजनबी आदमी का चेहरा नहीं देखा। मैं एक अच्छी स्त्री हूँ। मेहरबानी कर के मुझे अन्दर आने दीजिये। मैं एक अच्छी स्त्री हूँ और आपसे शादी करना चाहती हूँ। मेरी बस एक यही इच्छा है। हम लोग आपस में एक दूसरे से क्यों नहीं मिल सकते।”

इस तरह दबाव डाले जाने पर व्यापारी ने दरवाजा खोल दिया। दोनों ने एक दूसरे को देखा तो दोनों के मन में एक दूसरे के लिये

प्यार जाग उठा। वे बहुत देर तक बात करते रहे। फिर व्यापारी ने उसको अपना खजाना दिखाया।

राजकुमारी उस अजीब व्यापारी के लिये अपने दिल में प्यार और उसके खजाने के लिये आश्चर्य लिये अपने घर लौट आयी। जैसे ही वह महल पहुँची उसने अपने पिता को बताया कि वह कहाँ गयी थी उसने वहाँ क्या क्या देखा और किस तरह से वह उस व्यापारी के प्रेम में पड़ गयी थी। और अब वह उससे शादी करना चाहती थी।

उसका पिता एक बहुत अच्छा राजा था उसने राजकुमारी से व्यापारी से मिलने का वायदा किया और अगली सुबह उससे मिलने के लिये जहाज़ की तरफ चल दिया।

जब उसने व्यापारी को देखा तो वह उसको देख कर बहुत खुश हुआ। वह कितना अच्छा बोलता था कितना अक्लमन्द था। उसने भी अपने दिल में उसको अपना दामाद चुन लिया। घर जा कर यह बात उसने अपनी बेटी को बतायी।

राजकुमारी तो यह सुन कर बहुत खुश हुई। उसकी खुशी की तो कोई हद ही नहीं थी। वह उस दिन का इन्तजार करने लगी जब उससे उसकी शादी होगी। शहर भर में खुशियाँ मनायी जा रही थीं। शादी हुई और बड़ी शान से हुई जैसी कि परियों के देश की राजकुमारी की होनी चाहिये थी।

कुछ समय तक गुल्लाला शाह राजकुमारी के महल में ही रहा और वहॉ जा कर बहुत खुशहाल हो गया। पर फिर भी उसका मन सन्तुष्ट नहीं था। एक दिन उसने राजकुमारी को अपने बारे में सब कुछ बताया कि वह वहॉ क्यों आया था। कैसे उसकी फूल लेने की इच्छा थी और कैसे वह फूल ले कर वह अपने देश जाना चाहता था।

राजकुमारी ने यह सब अपने पिता को बताया और उससे **12** हजार फूलों वाले पेड़ अपने साथ ले जाने की इजाज़त मॉगी जो राजा ने उसको तुरन्त दे दी। जाने की तैयारियॉ शुरू हो गयीं।

बारह हजार पेड़ों को ले जाने के लिये **12** हजार गाड़ियॉ तैयार की गयीं। राजा ने जो कुछ भी अपनी बेटी को दिया था उसको ले जाने की भी तैयारी की गयी। बहुत सारे सिपाही और हाथी भी उन दोनों को दिये गये।

आखिर जाने की घड़ी आयी। यह बड़े दुख का मौका था क्योंकि उन दोनों को लोग बहुत प्यार करते थे। वे पहले गुल्लाला शाह के उस देश गये जहॉ उसकी पहली पत्नी रहती थी। राजा उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उनको रहने के लिये एक बहुत ही शानदार घर दिया और उन्हें जो कुछ और चाहिये था वह सब भी दिया।

गुल्लाला शाह वहॉ कुछ समय तक रहा फिर वहॉ से और भेंटें ले कर अपने देश चला जहॉ का वह रहने वाला था। यह एक लम्बी

और मुश्किल यात्रा थी पर वे सुरक्षित रूप से शहर की दीवार तक पहुँच गये। उन्होंने यह सोचते हुए शहर के बाहर ही अपना कैम्प लगाया कि अचानक इतने सारे लोगों के आने से कहीं लोगों को कोई परेशानी न हो।

जब उनके आने की खबर महल पहुँची तो राजा बहुत डर गया। उसने तुरन्त ही अपने वज़ीर को बुलाया और उससे सलाह माँगी कि इस बड़े राजा को खुश करने के लिये उसे क्या करना चाहिये जो अब यहाँ तक आ पहुँचा है। उसने कहा — "मुझे पूरा यकीन है कि यह इतने सारे आदमियों को ले कर यहाँ लड़ने के लिये ही आया होगा।"

वजीर ने मामले पर सोच विचार किया और बोला — "राजा साहब हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप अपनी सुन्दर बेटी को उसके पास भेजें जो वहाँ जा कर शान्ति लायेगी। कौन जानता है कि यह राजा आपकी बेटी की सुन्दरता से प्रभावित हो जाता है या नहीं और फिर हम सब बच जायें।"

राजा बोला — "मुझे अफसोस है वज़ीर साहब कि मैंने अपनी बेटी उस आदमी को देने का वायदा किया है जो फूलों वाले पेड़ ले कर आयेगा। इसके अलावा मेरी बेटी कई बार खुद किसी और आदमी से शादी करने के लिये मना कर चुकी है जो चाहे कितना भी बड़ा अक्लमन्द या अमीर ही क्यों न हो सिवाय इस आदमी के। मैं क्या करूँ।"

राजा और उसके सलाहकार इस तरह की बातें कर ही रहे थे कि गुल्लाला शाह ने रात के लिये अपने कैम्प को ठीक कर के अपने शाही और कीमती कपड़े उतारे और भिखारियों वाले कपड़े पहन लिये और इस तरह तैयार हो कर वह **12** हजार फूलों वाले पेड़ ले कर शहर की तरफ चला।

उसने गाड़ियों को चलाने वालों को सीधे महल जाने के लिये कहा और वह उनके आगे आगे चला। महल पहुँच कर उसने चौकीदार के हाथों राजा को सन्देश भेजा कि "अपने मालिक राजा साहब से कहो कि वह मुझे अन्दर आने की इजाज़त दें। मैं उनके लिये परियों के राजा के बागीचे के सुन्दर फूलों के पेड़ लाया हूँ।"

यह भी कितनी अजीब बात थी कि यह सन्देश भी राजा के पास तभी पहुँचा जब वह उन फूलों के बारे में बात कर रहा था। जब राजा ने चौकीदार का यह सन्देश सुना तो उसने उसका विश्वास ही नहीं किया बल्कि उसे लगा कि वह पागल हो गया था।

वजीर और दूसरे औफीसर लोग जो वहॉ पर मौजूद थे उनको भी यह सुन कर ऐसा लगा कि यह सच कैसे हो सकता था। राजा ने इसे एक मजाक समझते हुए हॅस कर कहा "ठीक है इस आदमी को अन्दर आने दो।"

गुल्लाला शाह अन्दर आया फटे कपड़ों में लिपटा हुआ पर हाथ में नमूने के कुछ फूल लिये हुए जिनको राजकुमारी और शाही परिवार इतना पसन्द करता था। अब तो यह बात सच हो गयी थी

कि जिन फूलों की मॉग थी वे सच में वहॉ मौजूद थे पर उनका लाने वाला एक नीचे परिवार का था – एक गन्दा सा फटे कपड़े पहने हुए भिखारी।

राजा ने अपनी ठोड़ी अपने दॉये हाथ में रखी और नीचे कालीन की तरफ काफी देर तक चुपचाप देखता रहा। वह सोच रहा था "क्या इस आदमी को मैं अपनी इतनी सुन्दर बेटी दे दूॅ। मुझे यकीन है कि यह आदमी ऐसी कोई चीज़ नहीं मॉगेगा जिसको मुझे इसे देने में शरम आये। मैं इसको बहुत सारा इनाम दे कर विदा कर दूॅगा।"

सो राजा ने उससे पूछा — "दोस्त तुम्हें क्या चाहिये। क्या तुम इस देश के वज़ीर बनना चाहोगे। या फिर तुम्हें बहुत सारा पैसा चाहिये। बोलो तुम्हें वही दे दिया जायेगा।"

भिखारी के रूप में गुल्लाला शाह बोला — अगर राजा साहब नाराज न हों तो मैं आपकी बेटी का हाथ मॉगता हूॅ। उसकी तुलना में मैं इज़्ज़त के सारे ओहदे और कितना भी पैसा बेकार समझता हूॅ। मैं आपसे प्रार्थना करता हूॅ कि आप अपना वायदा पूरा करें।"

राजा बोला — "तुम्हारी प्रार्थना तो बिल्कुल ठीक है और अगर मैं मना कर दूॅ तो मैं अपना वायदा तोड़ूॅगा सो मेरी बेटी तुम्हारी हुई तुम उसको ले जा सकते हो।"

जब वहॉ मौजूद सारे लौर्ड, नौकर चाकर और गुल्लाला शाह ने राजा के ये शब्द सुने तो वे राजा के दिमाग की कुलीनता पर आश्चर्य प्रगट करने लगे। क्योंकि हालॉकि यह एक छोटी सी बात

थी पर अगर राजा इस भिखारी की मॉग को पूरा नहीं करता तो वे क्या कर लेते। फिर भी सब लोगों ने इसे ठीक और न्यायपूर्ण समझा।

गुल्लाला शाह को नौकरों के साथ एक शानदार घर में भेजा गया जहॉ वह कुछ दिन रहा जब तक शादी का इन्तजाम किया गया। उसके लिये उसके लायक कपड़े बनवाये गये और और भी बहुत सारी चीज़ें उसके लिये लायी गयीं।

जब यह सब हो गया तब राजा ने अपनी काउन्सिल बुलायी और उससे राय ली कि अब इस हालत में जब कि एक आदमी फूल ले कर आ गया है जिससे राजा अपनी बेटी की शादी का वायदा कर चुका है और दूसरी तरफ एक ताकतवर राजा शहर के बाहर आया हुआ है उसको क्या करना चाहिये।

वे लोग काफी देर तक बात करते रहे पर कुछ भी निश्चित रूप से नहीं सोच पाये सिवाय इसके कि वह और उसका वजीर उस राजा से जा कर मिलते हैं और उसके आने का उद्देश्य पता करते हैं।

सब लोगों के जाने के करीब एक घंटे बाद राजा और वजीर अपने कुछ नौकरों को साथ ले कर अपने मन में चिन्ता लिये शहर के बाहर लगे कैम्प की तरफ चले ताकि वे उस राजा के आने का उद्देश्य पता लगा सकें। ऐसा लग रहा था जैसे कि ये लोग शाही पार्टी के बजाय किसी तीर्थयात्रा पर जा रहे हों।

इस बीच गुल्लाला शाह अपने नौकरों को बहका कर अपने शाही घर से निकलने में कामयाब हो गया। वह अपने कैम्प पहुँचा और राजा के वेश में आ गया। जब राजा को उससे मिलवाया गया तो उसने गुल्लाला शाह को बिल्कुल भी नहीं पहचाना।

वे लोग रस्मो रिवाज के साथ मिले एक दूसरे को भेंटें दी गयीं और फिर दोनों बात करने के लिये बैठे। बात गुल्लाला शाह ने शुरू की राजा के देश और उसके लोगों के बारे में पूछ कर। तब राजा ने पूछा कि वह वहाँ कब आया और कहाँ से आया।

गुल्लाला शाह ने उसे अपने बारे में बताया और उससे कहा कि वह उसकी बेटी का हाथ माँगने आया था। राजा बोला — "बड़े अफसोस की बात है राजा साहब कि मैंने अपनी एक कसम के अनुसार अपनी बेटी की शादी एक भिखारी से तय कर दी है।

अगर ऐसा न हुआ होता तो मैं आपके अलावा और किसी से उसकी शादी करता ही नहीं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि इसके लिये आप मुझ पर दया करें क्योंकि यह बात मैं आपसे बड़े दुखी मन से कह रहा हूँ।"

गुल्लाला शाह बोला — आप बहुत ही न्यायप्रिय कुलीन और अच्छे राजा हैं। आपने मुझे यह बता कर बहुत अच्छा काम किया है क्योंकि अपनी जान गँवाना, अपना राज्य हारना और अपना सब कुछ खोना अपने वायदे से फिरने से कहीं ज़्यादा अच्छा है।

क्या ही अच्छा होता अगर दुनियाँ के सारे राजा ऐसे होते जैसे आप हैं। तब लोग ज़्यादा खुश रहते ज़्यादा खुशहाल होते और सारी दुनियाँ में शान्ति होती। अल्लाह ने आपको खुशहाली दी है और आगे भी देता रहेगा। बस आप अपने लोगों के वफादार रहें और अपनी बात पर कायम रहें।

अब मैं आपको एक बात बताता हूँ कि वह भिखारी जिसको अपने अपनी बेटी देने का वायदा किया है वह भिखारी और कोई नहीं मैं खुद ही हूँ। और मैं वही लड़का हूँ जिसे लोग खरिया के नाम से जानते थे। जिसके पिता बिना किसी वारिस के मर गये थे और जिसकी जायदाद और पैसा राजा ने ले लिये थे।

इस वजह से उसकी माँ ने एक किसान के यहाँ नौकरी की। अल्लाह मेरे साथ था। उसने मुझे बहुत पैसा दिया। फिर मैं आपके एक दूत से मिला जिसने मुझे आपकी इच्छा के बारे में बताया। मैंने उससे कहा कि मैं वे फूल ले कर आऊँगा।

फिर मैं बहुत दिनों तक इधर उधर घूमता रहा। इस घूमने में मैंने बहुत कुछ सीखा बहुत बड़ा और अमीर आदमी बन गया। आखीर में मैं वे फूलों के पेड़ ले कर आपके राज्य लौट आया। मैंने सोचा कि मैं उन फूलों के साथ आपसे पहले एक भिखारी के रूप में मिलता हूँ ताकि आपके वायदे और न्यायप्रियता को परख सकूँ। पर आप तो अपने वायदे के पक्के निकले।

मैं आपसे विनती करता हूँ कि अगर मैंने इस मामले में कुछ गलत किया हो तो आप मुझे माफ करें और अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दें।"

यह कह कर गुल्लाला शाह ने राजा के हाथ पकड़ लिये और उनको अपने साथ इज़्ज़त के साथ बिठाया।

जब राजा ने यह अच्छी खबर सुनी तो वह तो खुशी मारे आपे से बाहर हो गया। उसके मुँह से निकला "अल्लाह का शुक्र है। ओह अल्लाह का शुक्र है।" और यह कह कर गुल्लाला शाह को अपने गले लगा लिया।

फिर बोला — "मैं तुम्हें अपनी बेटी जरूर दूँगा पर यह वायदा करने वाला मैं कौन होता हूँ। तुम जो कुछ मेरी ताकत के अन्दर है वह जो चाहे माँग लो मैं तुम्हें वही दे दूँगा।"

इस मिलने की खबर तुरन्त ही राजकुमारी को सुनायी गयी तो उसको तो विश्वास ही नहीं हुआ जब तक गुल्लाला शाह खुद उसके सामने नहीं आया और उसने अपने आपको उसे नहीं बताया।

कुछ समय बाद दोनों की शादी बड़ी शानो शौकत के साथ की गयी। गुल्लाला शाह फिर अपनी चार राजकुमारी पत्नियों के साथ खुशी खुशी वहीं रहने लगा क्योंकि पंज फूल भी राजा के नकली नौकर का रूप छोड़ कर फिर अपने असली रूप में आ गयी थी।

गुल्लाला शाह कुछ ही साल में बहुत ही लोकप्रिय और खुशहाल हो गया और राजा के मरने के बाद उसकी राजगद्दी पर बैठा। उसने

कुछ और देश भी जीते और सब कुछ उसने बड़ी अच्छी तरह से सॅभाला। वह अपने समय का सबसे बड़ा राजा बन गया। सारे राजा उसकी इज़्ज़त करते थे और उसको टैक्स देते थे।

कुछ लोग सोच रहे होंगे कि गुल्लाला शाह इतना बड़ा आदमी बन कर अपनी मॉ और रिश्तेदारों को भूल गया होगा पर ऐसा नहीं था। उसने अपनी मॉ को ढूँढ लिया और उसको रहने के लिये एक बहुत बढ़िया मकान दिया नौकर चाकर दिये।

उसने उन लोगों का भी पता किया जिन्होंने उसकी गैरहाजिरी में उसकी मॉ की सहायता की थी और उनको अपने राज में अच्छे ओहदे दिये। इस तरह वह सबका प्यारा बन कर रहा।

इसी लिये इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह सबका प्यारा था। उसका राज्य बहुत बढ़ा और वह काफी बूढ़ा होने तक राज करता रहा। जब वह मरा तो बूढ़े और बच्चे स्त्री और आदमी गरीब और अमीर सभी को बहुत दुख हुआ।

63 मछली हॅसी क्यों[40]

एक बार की बात है कि एक मछियारिन अपनी मछलियॉ ले कर राजा के महल के पास से गुजर रही थी कि रानी ने अपने महल की एक खिड़की से बाहर झॉका और उसको अपने पास बुलाया और उसके पास जो कुछ था वह उसे दिखाने के लिये कहा।

उसी पल एक बहुत बड़ी मछली उसकी टोकरी की तली में से बाहर कूद गयी। रानी ने पूछा कि यह मछली नर है या मादा। मुझे तो मादा मछली चाहिये।

यह सुन कर मछली बहुत ज़ोर से हॅस पड़ी। मछियारिन बोली "यह तो नर मछली है।" और उसे बेचने के लिये फिर से महल का चक्कर काटने चल दी।

रानी गुस्सा हो कर अपने कमरे में लौट आयी। जब राजा शाम को अपनी रानी से मिलने आया तो उसने देखा कि उसकी रानी कुछ परेशान है। राजा ने पूछा — "क्या बात है तुम कुछ परेशान हो"

रानी बोली — "नहीं ऐसी तो कोई खास बात नहीं पर मैं एक मछली के व्यवहार से कुछ नाराज हूॅ। आज एक स्त्री एक मछली ले कर मेरे पास आयी थी और जब मैंने उससे पूछा कि यह मछली नर है या मादा तो वह मछली बड़े बुरे तरीके से हॅस पड़ी।"

---

[40] Why the Fish Laughed (Tale No 63)

राजा हॅस कर बोला — "तुमने क्या कहा कि मछली हॅस पड़ी? यह तो नामुमकिन है। तुमने जरूर कोई सपना देखा होगा।"

रानी बोली — "मैं कोई बेवकूफ नहीं हूॅ। मैं वही बोल रही हूॅ जो मैंने अपनी ऑखों से देखा और अपने कानों से सुना।"

राजा बोला — "बड़ी अजीब सी बात है। चलो ऐसा ही सही कि मछली हॅसी। ठीक है मैं मालूम करूॅगा कि क्या मामला था।"

अगले दिन राजा ने अपने वजीर को बुला कर उससे वही कहा जो रानी ने उससे कहा था और उससे इस मामले की जॉच करने के लिये कहा कि मछली क्यों हॅसी। और कहा कि अगर छह महीनों के अन्दर अन्दर उसने इस बात का जवाब ला कर नहीं दिया तो वह उसको मार देगा।

वजीर ने राजा से वायदा किया कि वह अपनी पूरी कोशिश करेगा हालॉकि उसको लग रहा था कि वह यह बात कभी मालूम नहीं कर पायेगा और उसकी मौत अब उसके सामने खड़ी थी।

पूरे पॉच महीने तक वह मछली के हॅसने की वजह ढूॅढता ढूॅढता थक गया। उसने हर जगह ढूॅढा हर किसी से पूछा – अक्लमन्द से और विद्वान से जादू जानने वालों से और बहुत तरीके की चालें खेलने वालों से। कोई भी तो उसको मछली के हॅसने की वजह नहीं बता सका। सो वह टूटा दिल ले कर अपने घर लौट आया।

अब उसने अपनी मौत की तैयारी करनी शुरू कर दी थी क्योंकि उसको राजा के बारे में बहुत अच्छा अनुभव था कि वह

अपनी धमकी से वापस नहीं फिरेंगे। और दूसरी तैयारियों के साथ साथ उसने अपने बेटे को भी तब तक घूमने फिरने भेज दिया था जब तक राजा का गुस्सा थोड़ा कम होता है।

वजीर का नौजवान बेटा सुन्दर भी था और अक्लमन्द भी। वह अपने घर से चल दिया जहाँ भी उसको उसकी किस्मत ले जाये। उसको गये हुए कुछ ही दिन हुए थे कि उसको एक बूढ़ा किसान मिल गया जो किसी गाँव को जा रहा था।

उसको वह बूढ़ा अच्छा लगा तो उसने यह बताते हुए कि वह भी उसी जगह जा रहा था जहाँ वह जा तहा था उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ जा सकता था। बूढ़ा राजी हो गया और वे दोनों एक साथ चलने लगे। दिन गरम था और रास्ता लम्बा और थका देने वाला।

नौजवान बोला — "क्या वह आसान नहीं होता अगर हम एक दूसरे को बारी बारी से उठा कर ले चलते?"

बूढ़े ने सोचा यह नौजवान कितना बेवकूफ है। हम लोग एक दूसरे को उठा कर कैसे ले जा सकते हैं। सो उसने उसकी बात को टाल दिया।

इस समय वे लोग मक्का के एक खेत से हो कर गुजर रहे थे जो कटने के लिये तैयार खड़ा था। जब वह हवा से हिलता था तो ऐसा लगता था जैसे सोने का समुद्र हो।

नौजवान ने पूछा — "यह खा लिया गया है या नहीं।"

बूढ़े की यह बात बिल्कुल समझ में नहीं आयी तो वह बोला “पता नहीं।”

कुछ देर बाद ये दोनों यात्री एक बड़े से गाँव में आ गये जहाँ आ कर नौजवान ने अपने बूढ़े साथी को एक चाकू दिया और कहा — “दोस्त यह लो और इससे दो घोड़े खरीद लो। पर ध्यान रहे कि तुम इसे वापस ले आना क्योंकि यह बहुत कीमती है।”

बूढ़े को उसकी यह बात सुन कर हँसी भी आयी और गुस्सा भी आया। उसने उसका चाकू कुछ ऐसे बड़बड़ाते हुए उसी को वापस कर दिया जैसे कि उसका दोस्त या तो कुछ पागल था या फिर बेवकूफ था।

नौजवान ने भी उसके जवाब की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और जब तक चुप ही रहा जब तक वे लोग शहर नहीं पहुँच गये। शहर के कुछ दूर बाहर ही उस बूढ़े किसान का घर था। वे बाजार से हो कर मस्जिद गये पर किसी ने भी उनको अन्दर आने और सुस्ताने के लिये नहीं कहा।

नौजवान के मुँह से निकला — “अरे यह तो एक बहुत बड़ी कब्रगाह लगती है।”

बूढ़े किसान ने सोचा पता नहीं इस नौजवान के यह कहने का क्या मतलब है जो इतने बड़े शहर को यह कब्रगाह कह रहा है। यहाँ से आगे चलने के बाद वे एक कब्रगाह से गुजरे जहाँ कुछ लोग कब्रों पर प्रार्थना कर रहे थे और अपने मरे हुए प्यारों के नाम पर

आने जाने वालों को रोटी और कुलचे[41] बॉट रहे थे। उन्होंने इन दोनों यात्रियों को भी अपने पास बुलाया और इनको भी खाने के लिये दिया जितना भी इनको चाहिये था।

नौजवान बोला — "ओह कितना सुन्दर शहर है।"

यह सुन कर तो बूढ़े को यकीन हो गया कि यह नौजवान बिल्कुल ही पागल है। पता नहीं आगे यह क्या कहेगा – पानी को जमीन और जमीन को पानी। और जब रोशनी होगी तो यह ॲधेरे की बात करेगा और जब ॲधेरा होगा तब उसे रोशनी कहेगा। पर उसने अपने ये विचार अपने तक ही रखे।

चलते चलते वे एक नदी से हो कर गुजरे जो कब्रगाह के बराबर से गुजरती थी। पानी थोड़ा गहरा था सो बूढ़े किसान ने अपने जूते उतार दिये और अपना पाजामा ऊपर चढ़ा लिया पर नौजवान ने वह नदी जूते और पाजामा पहने ही पार की।

यह देख कर बूढ़े ने अपने मन में कहा "मैंने आज तक ऐसा बेवकूफ नहीं देखा जो ऐसी बेवकूफी की बातें करता है और ऐसी बेवकूफी के काम करता है।"

फिर भी उसको यह आदमी अच्छा लगा। उसने सोचा कि यह आदमी उसकी पत्नी और बेटी को हॅसायेगा सो उसने उसको अपने घर बुलाया और उसको तब तक रहने के लिये कहा जब तक वह उस गॉव में रहे।

---

[41] Kulacha is kind of leavened bread shallow fried on the grill. It is a Punjabi and Kashmiri dish.

नौजवान बोला — “आपका बहुत बहुत धन्यवाद पर अगर आपको बुरा न लगे तो पहले मैं आपसे एक बात पूछ लूँ। क्या आपकी छत की शहतीर[42] काफी मजबूत है।”

बूढ़े किसान ने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और हॅसते हुए अपने घर में घुसा। घर वालों के आदाब का जवाब देते हुए वह बोला — “बाहर एक आदमी खड़ा है। वह मेरे साथ बहुत दूर से आ रहा है। मैं उसको तब तक यहाँ ठहराने के लिये ले आया हूँ जब तक वह इस गॉव में रहता है क्योंकि उसको इसी गॉव में ठहरना है।

पर यह आदमी इतना बेवकूफ है कि मैं तो इसकी एक भी बात का कोई मतलब नहीं निकाल सका। अभी यह यह जानना चाहता है कि मेरे घर की शहतीर मजबूत है कि नहीं। अरे उसको इस बात से क्या मतलब कि मेरे घर की शहतीर मजबूत है या नहीं। मुझे तो यह आदमी कुछ पागल सा लगता है।”

और यह कह कर वह अपने आप ही बड़े ज़ोर से हॅस पड़ा। किसान की बेटी बहुत अक्लमन्द थी बोली — “पिता जी जो भी यह आदमी है वह बेवकूफ नहीं है जैसा कि आप सोचते हैं। वह केवल यह जानना चाहता है कि आप उसको अपने घर में रखने का खर्चा उठा सकते हैं या नहीं।”

---

[42] Big wooden logs on which the roof of the house is rested. See their picture above.

किसान बोला — "क्यों नहीं क्यों नहीं। अब मैं समझा। तो शायद तुम मेरी दूसरी पहेलियों को भी सुलझाने में मेरी सहायता कर सको। जब हम साथ साथ आ रहे थे तो इसने मुझसे कहा "या तो मैं उसको ले चलूँ या वह मुझे ले चले" क्योंकि उसको लगा कि उस तरीके से शायद हम लोग ज़्यादा खुश खुश आयेंगे।

लड़की बोली — "यकीनन पिता जी। इससे उसका मतलब था कि या तो वह आपको कहानी सुनाता जाये या फिर आप उसको कहानी सुनाते जायें इससे रास्ता आसानी से कट जायेगा।"

किसान बोला — "अच्छा। जब हम मक्का के खेत में से गुजर रहे थे तो इसने मुझसे पूछा "क्या यह खेत खाया हुआ है।" इसका क्या मतलब हुआ।"

लड़की बोली — "और इसका मतलब आपको पता नहीं था? पिता जी वह केवल यह जानना चाहता था कि जिस आदमी का यह खेत था उसके ऊपर कोई कर्जा था या नहीं। क्योंकि अगर खेत के मालिक के ऊपर कोई कर्जा था तो उस खेत की पैदावार उसके लिये वैसी ही थी जैसी कि खायी हुई होती थी क्योंकि वह पैदावार तो उसका कर्जा निबटाने में ही चली जायेगी।"

किसान फिर बोला — "ओह हॉ। यह तो ठीक है। फिर हम लोग एक गॉव में घुसे तो इसने मुझे एक चाकू दे कर कहा कि मैं उससे दो घोड़े खरीद लूँ और वह चाकू वापस ला कर उसको दे दूँ क्योंकि इसका वह चाकू बड़ा कीमती है।"

लड़की बोली — "क्या दो मोटे मोटे डंडे दो घोड़ों के बराबर नहीं हैं पिता जी जो किसी यात्री को सड़क पर चलने में सहायता कर सकें। इस बात से उसका मतलब यह था कि आप दो मोटे मोटे डंडे काट कर ले आयें और उसका चाकू भी वापस ले आयें।"

किसान बोला — "ओह अब मैं समझा। फिर हम लोग एक शहर से गुजर रहे थे तो वहाँ हमको कोई दिखायी नहीं दिया जिसको हम जानते और किसी ने भी हमको कुछ खाने को भी नहीं दिया।

फिर हम एक कब्रगाह के पास से गुजरे तो वहाँ कुछ लोगों ने हमें अपने पास बुलाया और रोटी और कुलचा खाने के लिये दिया। इसलिये मेरे साथी ने शहर को कब्रगाह और कब्रगाह को शहर कहा।"

लड़की बोली — "यह बात भी बिकुल्ल साफ है पिता जी। अगर कोई यह सोचता है कि शहर में सब कुछ मिल जायेगा पर वहाँ ऐसे लोग बसते हैं जो मेहमाननवाजी जानते ही नहीं तो वहाँ के लोग तो मरे लोगों से भी बदतर हुए न।

शहर जो लोगों से भरा हुआ था ऐसा था। वह आपके लिये ऐसा था जैसे उसमें सब मरे हुए लोग रहते हों क्योंकि वहाँ किसी ने आपको खाने के लिये भी नहीं पूछा।

और वह कब्रगाह जहाँ कोई यह सोचता है कि वहाँ तो कोई ज़िन्दा आदमी उसकी मेहमाननवाजी करने के लिये होगा ही नहीं वहाँ

उसको भर पेट खाना मिल जाता है तो वह शहर जैसा हो गया। हो गया न।"

किसान ने आश्चर्य प्रगट करते हुए कहा — "तुमने ठीक कहा बेटी। फिर चलते चलते हम एक नदी से गुजरे तो इसने बिना जूते और पाजामा उतारे ही उसे पार कर लिया।"

लड़की बोली — "पिता जी मुझे उसकी अक्लमन्दी अच्छी लगी। मैंने अक्सर सोचा है कि वे लोग कितने बेवकूफ हैं जो इतनी तेज़ बहती नदी को जिसमे नुकीले पत्थर पड़े रहते हैं जूते उतार कर पार करते हैं।

अगर उनका पैर ज़रा सा भी इधर उधर पड़ जाये और वे गिर जायें तो वे तो सिर से ले कर पैर तक भीग जायेंगे। आपका यह दोस्त तो बहुत ही अक्लमन्द है। पिता जी मैं इस आदमी से मिलना चाहती हूँ और इससे बात करना चाहती हूँ।"

किसान बोला — "ठीक है। मैं उसको ढूँढता हूँ और बुला कर लाता हूँ।"

लड़की बोली — "आप उनसे कहियेगा पिता जी कि हमारे मकान की शहतीरें बहुत मजबूत हैं तो वह आपके साथ आ जायेंगे। मैं उनके लिये आपके हाथों एक भेंट भी भेजूँगी ताकि वह समझ जायें कि हम उनकी मेहमाननवाजी कर सकते हैं।"

सो उसने एक नौकर को बुलाया और उसको एक बर्तन भर ग्यव[43], 12 रोटी और एक बोतल दूध दे कर उसको उस आदमी के पास यह सन्देश दे कर भेजा "ओ दोस्त चाँद पूरा है। बारह महीनों का एक साल होता है और समुद्र में से पानी बह बह कर बाहर निकल रहा है।"

वह नौकर जब इस भेंट और सन्देश को ले कर चला तो आधे रास्ते में ही उसको अपना छोटा बेटा मिल गया। बेटे ने देखा कि उसके पिता जी के पास टोकरी में खाना था तो उसने उससे कुछ खाना माँगा। उसका पिता थोड़ा बेवकूफ था सो उसने उसको कुछ खाना दे दिया।

उसी समय उसने उस नौजवान को देखा जिसके लिये वह वह खाना और सन्देश ले कर जा रहा था। उसने बचा हुआ खाना और सन्देश उस नौजवान को दे दिया।

नौजवान ने कहा — "अपनी मालकिन को मेरा सलाम कहना और उनसे कहना कि चाँद नया है[44] मुझे साल में केवल 11 महीने ही मिले और समुद्र भी पूरा नहीं है।"

नौकर इन शब्दों का मतलब तो नहीं समझा पर उसने घर जा कर उसका सन्देश लड़की को ऐसा का ऐसा ही दे दिया। इस तरह उसकी चोरी पकड़ी गयी और उसको उसकी सजा भुगतनी पड़ी।

---

[43] Gyav means clarifieded butter (Ghee)

[44] Translated for the words "Moon is new" – means New Moon or Amaavasyaa

कुछ देर बाद ही वह नौजवान किसान के साथ घर आया तो उसका ज़ोर शोर से स्वागत किया गया और उसका इस तरह से स्वागत किया जैसे वह कोई बड़े बाप का बेटा है हालाँकि उसके मेजबान को उसके बारे में कुछ पता नहीं था।

काफी देर बात करने के बाद उसने उनको अपनी कहानी सुनायी – मछली के हॅसने के बारे में उसके पिता की मौत की सजा के बारे में और फिर अपने घर से निकाले जाने के बारे में। फिर उसने उनसे इस बारे में उनकी सलाह माँगी।

लड़की बोली — "ऐसा लगता है कि मछली की हॅसी ही इस सब मुसीबत की जड़ है। और मछली इसलिये हॅसी लगती है कि राजा के महल में कोई एक ऐसा आदमी है जिसका राजा को पता नहीं है।"

नौजवान बोला — "बहुत अच्छे बहुत अच्छे। अभी मेरे लौट जाने में कुछ समय बाकी है जिससे मैं अपने पिता को उनकी अन्यायपूर्ण मौत से बचा सकूँगा।"

अगले ही दिन वह किसान की बेटी को अपने साथ ले कर वापस अपने घर की तरफ लौट पड़ा।

अपने घर पहुँचते ही वह महल की तरफ दौड़ गया और जा कर उसे जो कुछ मछली के हॅसने का मतलब पता चला था बताया। बेचारा वजीर तो मौत के डर से अभी से मरा हुआ हो रहा था।

उसको तुरन्त ही राजा के पास ले जाया गया। उसने राजा को वही बता दिया जो उसके बेटे ने उसे बताया था।

राजा बोला — “नहीं कभी नहीं। ऐसा कभी नहीं हो सकता।”

वजीर बोला — “पर ऐसा ही होना चाहिये राजा साहब। जो कुछ भी मैंने सुना है उसकी सच्चाई को साबित करने के लिये मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप पहले तो एक गड्ढा खोदें फिर अपनी सारी दासियों को अपने महल में बुलायें और उन सबको उस गड्ढे के ऊपर से कूदने के लिये कहें। ऐसा करने से आदमी का पता चल जायेगा।”

यह सुन कर राजा ने एक गड्ढा खुदवाया और अपनी सब दासियों को उसके ऊपर से कूद जाने के लिये कहा। सब दासियों ने कोशिश की पर केवल एक ही दासी वह गड्ढा पार कर सकी। वह कोई दासी नहीं बल्कि एक आदमी था।

इस तरह रानी सन्तुष्ट हुई और वजीर अपनी मौत से बच सका। उसके कुछ दिन बाद वजीर के बेटे की शादी किसान की बेटी से हो गयी जो आगे चल कर बहुत सफल रही।

64 नागरे और हीमाल[45]

एक बार की बात है कि किसी जगह सोदाराम नाम का एक गरीब ब्राह्मण रहता था। उसके पास केवल एक टूटा फूटा मकान था और एक बुरे स्वभाव वाली मतलबी स्त्री थी जिसको वह अपनी पत्नी कहता था। उसके लिये उसका यह टूटा फूटा मकान कोई परेशानी नहीं थी पर यह स्त्री उसके लिये एक इम्तिहान थी।

वह अक्सर कहा करता था कि परमेश्वर ने मुझे ज़्यादा तो कुछ नहीं दिया पर मैं उससे शिकायत करने वाला कौन होता हूँ। वह अक्सर ही अपनी इस नीच पत्नी का गुस्सा और उससे अपनी बेइज़्ज़ती सहता रहता।

कभी कभी जब उसने रोज से कम कमाया होता था तो वह उसको पीट भी देती थी। पर यह उसके लिये कुछ ज़रा ज़्यादा ही हो जाता सो इसने उसे छोड़ने का निश्चय किया।

एक सुबह उसने अपनी पत्नी से कहा — "प्रिये मैंने सुना है कि हिन्दुस्तान में एक बादशाह गरीबों को रोज पाँच लाख रुपये दान में देता है। मैंने सोचा है कि मैं वहाँ जा कर उससे दान को लेने की कोशिश करता हूँ।"

---

[45] Nagray and Himal (Tale No 64)

स्त्री बोली — "ठीक है जाओ। मैं तुम्हें बिल्कुल भी याद नहीं करूँगी।"

ब्राह्मण ने अपनी यात्रा के लिये तुरन्त ही अपना कुछ सामान लिया और वहाँ से चल दिया। वह उस दिन बहुत जल्दी जल्दी और बहुत ज़्यादा चला। वह तब तक नहीं रुका जब तक वह एक जंगल में नहीं आ पहुँचा जहाँ उसको साफ और मीठे पानी की एक नदी मिली।

वहाँ उसने अपना बोझा उतार कर रखा और कुछ सुस्ताने कुछ खाना खाने और कुछ सोने के लिये बैठ गया। खाना खा कर जब वह सो रहा था तो एक छोटा सा साँप नदी में से निकल कर आया[46] और उसके उस थैले में घुस गया जिसमें उसका खाना रखा था।

इत्तफाक की बात कि उसी समय ब्राह्मण की आँख खुल गयी और उसको साँप दिखायी दे गया। उसके मुँह से निकला — "अरे यह क्या है।" कह कर उसने अपना थैला बन्द कर दिया।

एक विचार तो उसके मन में यह आया कि वह इसी समय अपनी पत्नी के पास वापस लौट जाये और यह थैला इसमें रखी हुई चीज़ों के साथ उसको दे दे। वह जरूर तुरन्त ही इस थैले को खोल कर देखेगी। जैसे ही वह इसे खोलेगी तो साँप इसमें से कूद कर उसको काट लेगा और फिर मैं उससे आजाद हो जाऊँगा।

---

[46] In the valley there are a large number of small streams of water to which a mysterious origin has been attributed by the people. Generally a snake is believed to have its abode in or by the spring.

इस विचार से खुश हो कर वह अपनी झोंपड़ी की तरफ दौड़ पड़ा और वहाँ पहुँच कर चिल्ला कर बोला — "प्रिये मुझे तो वापस आना ही पड़ा। मैं तुम्हें छोड़ नहीं सका न। लो मेरे हाथ से यह भेंट लो और मुझे माफ कर दो मैं अब तुम्हें छोड़ कर जाने की कभी सोचूँगा भी नहीं।"

स्त्री बोली — "क्या है? कहाँ है? कैसे? दिखाओ मुझे।"

ब्राह्मण बोला — "यहाँ नहीं। ऊपर वाले कमरे में चलो। वहाँ देखना।"

वे दोनों एक साथ सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर गये। ऊपर पहुँच कर ब्राह्मण ने वह थैला अपनी पत्नी को दे दिया और कमरे के अन्दर जा कर खोलने के लिये कहा। जैसे ही उसने वह थैला खोला तो यह देख कर उसके तो आश्चर्य की हद ही नहीं रही जब उसमें साँप जो कैद से थक गया था कूद कर बाहर निकल आया।

वह उसको देख कर इतनी डर गयी कि उसके हाथ से थैला छूट कर नीचे गिर गया और वह वहाँ से पागलों की तरह से चीखती हुई अपनी जान बचाने के लिये कमरे के बाहर भागी।

यह करीब करीब दस मिनट तक चलता रहा कि अचानक उसे रोशनी दिखायी दे गयी जैसे वह चाँद की रोशनी हो और उसमें से एक बहुत सुन्दर बच्चा दिखायी दिया। उस बच्चे को देख कर उस स्त्री का दिल खुशी से भर गया।

वह अपने पति से चिल्ला कर बोली जो अभी भी कमरे के बाहर दरवाजा कस कर पकड़े खड़ा था कि कहीं उसकी पत्नी बाहर निकल कर बाहर न भाग जाये या फिर वह उसे अन्दर बुला कर अपना आश्चर्य दिखाये पर तुरन्त ही उसने यह कह कर अन्दर आने से मना कर दिया कि वह अपने आपको साँप से कटवाना नहीं चाहता था।

उसकी पत्नी ने उसको बार बार पुकारा पर फिर भी उसने अन्दर आने से मना कर दिया।

आखिर जब उसने अपनी पत्नी की खुशी की आवाज सुनी तो उसने थोड़ा सा दरवाजा खोला और झाँक कर देखा तो उस सुन्दर चीज़ को देखा तो उसके मुँह से निकला — "तो वह साँप नहीं था जो मैंने इस थैले में बन्द किया था बल्कि यह सुन्दर लड़का था।"

वह भी उस बच्चे को देख कर बहुत खुश हुआ और उसने अपनी पत्नी और बच्चे दोनों को चूम लिया। उसी समय उसी जगह पति पत्नी में मेलजोल हो गया और दोनों खुशी से रहने लगे।

तभी से ब्राह्मण अमीर होता चला गया। उसका वह देवताओं की कृपा से पैदा हुआ बेटा दिनोंदिन सुन्दर हो कर बड़ा होता चला गया। उन्होंने उसका नाम नागरे रख दिया। वह बच्चा इतना अक्लमन्द निकला कि वह दो साल की उम्र में 10 साल की उम्र का लगता था।

देश भर में उससे किसी की बहस करने की हिम्मत नहीं होती थी। हालाँकि वह दूसरे बच्चों की तरह से नहीं पढ़ा था पर वह बहुत सारी भाषाऐं बोल और पढ़ सकता था। उसको बहुत सारी विद्या आती थी। ऐसा इसलिये था क्योंकि वह एक स्वर्ग से उतरा हुआ बच्चा था।

एक दिन नागरे जब सात साल का हुआ तो उसने अपने पिता से पूछा कि क्या वह एक साफ पानी के सोते[47] में नहा सकता था। उसने कहा कि वह सोता बिल्कुल साफ पानी का ही होना चाहिये वरना वह मर जायेगा।

उसके पिता ने कहा — "यह तो ठीक है पर इस देश में कोई भी नदी इतनी साफ नहीं है सिवाय उस नदी के जो राजा की बेटी के बागीचे में बहती है। और वह बागीचा एक बहुत ऊँची और मजबूत दीवार से घिरा हुआ जिसके अन्दर किसी का भी जाना मुश्किल है।"

फिर भी नागरे ने अपने पिता से विनती की कि वह उस बागीचे का रास्ता उसे दिखा दे।

ब्राह्मण बोला — "नहीं कभी नहीं। तुम उसके अन्दर नहीं जा सकते क्योंकि अगर राजा के सिपाहियों ने तुम्हें बिना किसी काम के वहाँ आसपास भी घूमते देख लिया तो वे जा कर राजा को बता देंगे और फिर हम दोनों मारे जायेंगे।

---

[47] Translated for the word "Spring"

खैर नागरे उससे जिद करता रहा कि वह एक दैवीय बच्चा था और उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता था तब कहीं जा कर वह माना।

जब वे बागीचे के पास पहुँचे तो नागरे ने देखा कि वह बागीचा तो वाकई बहुत मजबूती से सुरक्षित था तो उसने उस चहारदीवारी में एक छोटे से छेद की तलाश शुरू कर दी। जल्दी ही उसे एक छोटा स छेद मिल गया।

नागरे यह देख कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने आपको एक छोटे से साँप में बदला और उस छेद से हो कर बागीचे में चला गया। वहाँ उसको सबसे साफ पानी का एक सोता मिल गया। वहाँ जा कर उसने अपने आपको फिर से एक लड़के के रूप में बदला और जल्दी से उस पानी में नहा लिया।

इत्तफाक से उसका वहाँ आना पता चल गया। राजकुमारी उस समय अपने बागीचे में बैठी हुई थी तो उसने पानी में छपाक की आवाज सुनी तो उसने अपनी एक दासी को यह देखने के लिये भेजा कि यह छपाक की आवाज कहाँ से और कैसे आयी। पर जब वह दासी वहाँ आयी तो नागरे फिर से साँप में बदल गया और वहाँ से गायब हो गया।

कुछ दिन बाद वह फिर से उस बागीचे में आया और उस पानी में नहाने लगा। राजकुमारी जिसका नाम हीमाल था उस दिन भी वहीं बैठी थी जहाँ वह पहली बार बैठी हुई थी।

जैसे ही उसने नागरे के नहाने की आवाज सुनी तो उसने अपनी दासी से पूछा "कौन है यह जो मेरे बागीचे में इस तरह से घुसने की और मेरे तालाब में नहाने की हिम्मत कर सका। जाओ और जा कर देखो।"

दासी देखने के लिये गयी पर नागरे ने राजकुमारी का दिमाग पढ़ लिया और वहाँ से जल्दी से भाग गया। इस तरह से दासी को वहाँ कुछ नहीं मिला और वह फिर से खाली हाथ वापस आ गयी।

तीसरी बार नागरे फिर उस बागीचे में गया तो हीमाल वहीं सोते के पास ही बैठी थी सो उसने उस बहुत सुन्दर लड़के की शक्ल देखी। वह तो उसे देखती ही रह गयी। इतना सुन्दर लड़का न उसने पहले कभी देखा था न सुना था।

जब उस लड़के ने अपने आपको साँप में बदला तो उसने अपनी एक दासी से कहा कि वह उसके पीछे पीछे जा कर यह देखे कि वह कहाँ जाता है।

दासी उसका हुक्म मान कर उस साँप के पीछे पीछे गयी तो उसने देखा कि उस साँप ने तो अपनी शक्ल बदल ली थी। वह अब एक बहुत सुन्दर लड़का बन गया था।

उसने आ कर राजकुमारी को बताया कि अपनी शक्ल बदलने के बाद वह सोदाराम नाम के एक ब्राह्मण के घर में घुस गया। उसको लगा कि वह शायद उसका बेटा था। यह देख कर हीमाल ने सोचा कि यह लड़का तो सबसे ऊँची जाति का है और यह मेरे

बराबर का है। यह बहुत ज़्यादा सुन्दर भी है तो क्यों न मैं अपनी मॉ के पास जा कर बात करूँ कि वह मेरी शादी इससे कर दें।

यह सोचते हुए वह अपनी मॉ के पास गयी और उससे अपने दिल की बात कही कि कैसे उसने उस सुन्दर लड़के को देखा और उसके प्यार में पड़ गयी। और अब क्योंकि उसकी उम्र हो गयी थी तो वह उससे शादी करना चाहती थी।

रानी ने यह बात राजा को बतायी तो राजा अपनी बेटी के पास आया और बोला — "ओ मेरी ऑखों की कीमती रोशनी और मेरे दिल की खुशी। मुझे तुम्हारी इच्छा का पता चला और मैं ऐसे बहुत सारे राजकुमारों को जानता हूँ जो तुमसे शादी करने के लिये तैयार हैं। उनमें से किसी एक को चुन लो और मैं तुम्हारी शादी उससे कर दूँगा।"

हीमाल बोली — "पिता जी। मैंने एक बहुत ही सुन्दर ब्राह्मण का बेटा देखा है जिसके पिता का नाम सोदाराम है। मैं उससे शादी करना चाहती हूँ।"

यह सुन कर राजा बहुत गुस्सा हो गया और बोला — "ओ बेवकूफ लड़की। सोदाराम तो केवल एक मामूली सा ब्राह्मण है। मैं अपनी बेटी की शादी उसके बेटे से कर के अपने आपको कैसे इतना नीचे गिरा सकता हूँ।

नहीं नहीं यह नहीं हो सकता। यह काम तुम मुझे सौंप दो। मैं तुम्हारे लिये दुनियॉ का सबसे सुन्दर सबसे अमीर और सबसे इज़्ज़तदार राजकुमार ले कर आऊॅगा।"

हीमाल बोली — "नहीं पिता जी। मुझे जो कहना था मैंने कह दिया। मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं कि सोदाराम गरीब है या अमीर। उसके बेटे को मैंने अपना दिल दे दिया है इससे ज़्यादा मैं और कुछ नहीं कह सकती।"

यह सुन कर तो राजा और भी गुस्सा हो गया। उसको लगा कि राजकुमारी बिल्कुल पागल हो गयी है। उसके बाद कुछ और बात हुई और फिर राजा वहॉ से चला गया। आखिर उसे अपनी बेटी की बात माननी ही पड़ी और एक दिन सुबह राजा ने सोदाराम को बुलवाया।

जब सोदाराम ब्राह्मण ने राजा का बुलावा सुना तो वह डर के मारे कॉप गया और सोचने लगा कि उसको वहॉ बुलाने की क्या क्या वजहें हो सकती हैं। "क्या राजा ने मेरे बेटे का बार बार राजकुमारी के बागीचे में जाना देख लिया है।" "या फिर वह मेरी अमीरी से जलता है।" "वह मुझसे चाहता क्या है।" इस तरह के कई सवाल उसके दिमाग में घूम गये।

जब वह राजा के पास पहुॅचा तो राजा ने एक गहरी सॉस ली और सोचा कि "ओह मेरी बेटी ने किसके बेटे को चुना है। मैं उसकी इच्छा को अपने वज़ीरों से और इस आदमी से कैसे कहूॅ। वे

लोग इस मामले को ले कर मेरे ऊपर कितना हँसेंगे और मेरा कितना मजाक बनायेंगे। उफ़ मैं कितना दुखी हूँ।"

कुछ मिनटों बाद जब वह अपनी इस हालत से बाहर निकला तब वह ब्राह्मण से बोला — "ओ ब्राह्मण मैंने सुना है कि तुम्हारे एक बहुत ही सुन्दर और अक्लमन्द बेटा है। क्या तुम उसकी शादी मेरी बेटी से करने के लिये राजी होगे।"

ब्राह्मण बोला — "ओ राजा आप अपने कामों में बहुत बड़े और कुलीन हैं। अपने फैसलों में बहुत अक्लमन्द हैं। यह तो हमारे लिये आपका आशीर्वाद है कि आपने इस मामले में मुझसे बात की। मैं तो आपका बहुत ही छोटा और हुक्म बजा लाने वाला आदमी हूँ और आपकी खुशहाली चाहता हूँ।"

तब राजा ने अपने ज्योतिषियों को बुलवा कर उनसे शादी के लिये कोई अच्छा दिन निकालने के लिये कहा और सोदाराम अपने घर वापस लौट गया।

बेचारा सोदाराम। वह खुशी और दुख की मिलीजुली भावनाओं के साथ अपने घर लौटा। वह खुश था कि उसको राजा से यह इज़्ज़त मिल रही थी। वह दुखी था क्योंकि इस शादी में उसका बहुत सारा खर्चा होने वाला था। "मैं इतना पैसा कहाँ से लाऊँगा जो इस शादी में मैं इतना फिजूलखर्च करूँ।" उसने सोचा।

घर पहुँच कर उसने सब कुछ अपनी पत्नी और अपने बेटे को बताया। लड़का बोला — "पिता जी आप चिन्ता मत कीजिये।

आप राजा के पास जा कर पूछिये कि उनकी खुशी किसमें है मेरे सादे से ढंग से आने में या शान शौकत से आने में।"

सोदाराम अपने बेटे का यह जवाब सुन कर बहुत आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "ओह मेरे बेटे इस बात पर तो राजा मुझे यकीनन मार देंगे। मैं अमीर जरूर हूँ पर मेरे पैसे का राजा के पैसे से क्या मुकाबला।"

बेटा बोला — "मैंने कहा न पिता जी कि आप चिन्ता न कीजिये। आप मेरा विश्वास करें मेरे पास इतना खजाना है जिसकी कोई कीमत ही नहीं आँक सकता।"

सो अगली सुबह ब्राह्मण राजा के पास गया जहाँ उसको शान के साथ बिठाया गया। राजा बोला कि लड़का जितनी शान से उसके घर आ सकता था आये। यह सुन कर ब्राह्मण डर से काँपता हुआ अपने घर वापस लौट गया। वह सोच रहा था कि यह सब कैसे होगा।

जिस दिन की शादी थी उस दिन शहर में सब जगह बड़ी हलचल थी। शहर के सारे लोग अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने घूम रहे थे। चारों तरफ संगीत बज रहा था। लोग गाने गा रहे थे। राजा ने भी बहुत सारे राजाओं की अगवानी के लिये बहुत ही शानदार इन्तजाम कर रखा था। सबके लिये एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम था।

लेकिन उस सुबह ब्राह्मण अपने घर में दुखी सा बैठा हुआ था। उसने शादी का कोई इन्तजाम नहीं कर रखा था। उसने तो अपने रोज के कपड़े ही पहने हुए थे उनको भी नहीं बदला था क्योंकि नागरे ने उससे ऐसा ही करने के लिये कहा था।

आखिर जब शादी के समय में एक घंटा रह गया तो उसके बेटे ने उससे कहा — "आइये और मेरा खजाना देखिये।"

उसके बाद नागरे ने एक चिट्ठी लिखी और अपने पिता को दे कर कहा — "यह लीजिये इसे फलॉ फलॉ सोते पर ले जाइये और इसे उसमें फेंक दीजियेगा और वापस आइये।"

सोदाराम ने वैसा ही किया और जब वह वापस आते समय अपने घर के पास आ पहुॅचा तो उसे बाजों और ढोलों की बहुत तेज़ आवाज सुनायी दी और पास आया तो बहुत सारे सिपाही बहुत सुन्दर पोशाक पहने दिखायी दिये।

उसने बहुत सारे घोड़े देखे जो बहुत कीमती साज पहने थे। बहुत सारे हाथी देखे जिन पर अनगिनत खजाना लदा हुआ था – सोना चॉदी कीमती जवाहरात आदि। चारों तरफ हवा में खुशबू उड़ रही थी। यह सब देख कर उसको लगा कि शायद कोई विदेशी ताकत राजा पर चढ़ाई करने के लिये आ गयी है।

पर यह जान कर तो उसके आश्चर्य की हद नहीं रही जब उसे पता चला कि वे सब हाथी घोड़े सिपाही तो उसके बेटे के हुक्म से वहॉ मौजूद थे।

यह सब देख कर सोदाराम की जान में जान आयी और वह अपने घर में घुसा। उसने देखा कि उसका बेटा नागरे भी राजकुमारों जैसे कपड़े पहने था। कुछ सुन्दर कपड़े उसका भी इन्तजार कर रहे थे। समय आने पर दोनों अपनी बारात के साथ राजा के महल की तरफ चलने के लिये तैयार हुए।

जब वे राजा के महल के पास पहुँचे तो राजा ने देखा कि उसके यहाँ तो एक बहुत ही बड़ा जुलूस चला आ रहा है। उसने अपने वजीरों से कहा — "यह नहीं हो सकता। यह सोदाराम हो ही नहीं सकता। जरूर कहीं कुछ गलत है। यह या तो कोई राजकुमार लगता है या फिर कोई देवता है।"

उसका यह डर जल्दी ही चला गया जब उनके पास आने पर उसने देखा कि वे तो सोदाराम और उसका बेटा ही थे। शादी की रस्म बहुत ही शानदार तरीके से पूरी हुई। सब कुछ सन्तोषपूर्वक हो गया।

जैसे ही शादी खत्म हुई नागरे ने अपने सब लोगों को वापस भेज दिया पर वह खुद महल में ही रहा। वह रोज दरबार जाता था। फिर राजा ने उसको नदी के किनारे अपने लिये एक महल बनाने के लिये कहा।

पर नागरे की हीमाल के अलावा और भी कई पत्नियाँ थीं और उसकी ये पत्नियाँ उसकी इतनी लम्बी गैरहाजिरी से बहुत नाराज थीं। सो एक दिन वे सब अपने पति को वापस लाने के लिये प्लान

करने के लिये जमा हुईं। काफी देर बातचीत करने के बाद उनमें से एक पत्नी इस काम को करने के लिये तैयार हुई।

उसने एक जादूगरनी[48] का रूप रखा शीशे के कुछ बर्तन लिये जिनमें कुछ ऐसी ताकत थी कि अगर नागरे उनको देखता तो उसको अपनी पुरानी पत्नियों की याद आ जाती और उसकी उनके पास लौट आने की इच्छा हो आती। यह स्त्री नागरे के घर के पास गयी और मौके की तलाश में रही।

एक दिन वह हीमाल से मिली और उसे बताया कि वह शीशे के बर्तन बेचती थी। काफी तो वह बेच चुकी थी पर अब जो उसके पास बर्तन थे वह उन्हें बहुत सस्ते में बेचना चाहती थी। हीमाल ने उसके वह बर्तन देखे और उनमें से कुछ बर्तन उसने खरीद लिये।

शाम को जब नागरे घर आया तो उसने वह बर्तन उसको दिखाये तो उनको देख कर वह बहुत गुस्सा हुआ और उससे उन्हें तोड़ देने के लिये कहा और कहा कि वह ऐसे किसी की बात न सुने और न फिर ऐसी कोई चीज़ किसी से खरीदे। यह देख कर सॉपिन के मन में जो इच्छाऐं पनप रही थीं वे सब मर गयीं और वह वहॉ से चली गयी।

अब उसकी दूसरी पत्नियों में से एक दूसरी पत्नी ने यह काम अपने जिम्मे लिया। उसने एक वेश्या का रूप रखा और हीमाल के

[48] Translated for the word “Witch”. See its picture above.

पास जा कर कहा — “राजकुमारी जी मैं जाति से एक भंगी हूँ। मेरे पति नागरे ने मुझे छोड़ दिया है। अगर आपने उन्हें कहीं देखा हो या उनके बारे में कहीं कुछ सुन हो तो मेहरबानी करके मुझे बताइये।”

यह सुन कर हीमाल को बहुत गुस्सा आया। उसने तीखी आवाज में कहा — “क्या मेरा पति एक भंगी है।”

वह स्त्री बोली — “यह तो मैं नहीं जानती मुझे तो केवल अपना पति चाहिये। अगर आपको अपने पति की जाति पर शक हो तो आप खुद उनसे उनकी जाति एक सोते की सहायता से पूछ सकती हैं। उनको सोते के पानी में कूदने दीजिये। अगर वह डूब जाते हैं तब आप जान लीजिये कि वह भंगी नहीं हैं।”

हीमाल ने उस स्त्री के जवाब को बड़े ध्यान से सुना और जैसे ही वह वहाँ से गयी वह तुरन्त ही अपने पति के पास गयी और उससे कहा कि उसने सुना है कि वह एक भंगी है।

और वह यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं करेगी कि यह बात चारों तरफ उड़ जाये और सब लोग इस बात को जान जायें। इससे पहले कि यह सब हो वह चाहती है कि वह सोते के पास जाये और यह साबित करे कि ऐसा नहीं है।

जब नागरे ने यह सुना तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उसने अपनी पत्नी को फिर बहुत ज़ोर से डॉटा कि वह ऐसी वैसी स्त्रियों की बात न सुना करे।

वह फिर बोला — "मुझे मालूम है कि वह असल स्त्री नहीं है। उसको बस मेरे मामलों में रुचि है और वह हमको अलग कर देना चाहती है। तुम्हें ऐसे लोगों का विश्वास नहीं करना चाहिये।"

हीमाल बोली — "मैं विश्वास तो नहीं करती प्रिय पर तुम मुझे अपनी जाति तो बताओ।"

वे लोग बहुत देर तक बात करते रहे। हालाँकि नागरे ने अपने इस इम्तिहान से बचने की बहुत कोशिश की पर हीमाल अपनी इच्छा पूरी करने से नहीं डिग रही थी। आखिर उसने अपनी इच्छा पूरी करने के लिये नागरे को तैयार कर ही लिया।

कुछ देर बाद ही दोनों एक सोते की तरफ बढ़े जा रहे थे। सोते के पास पहुँचने पर नागरे पानी में उतरा। जैसे ही उसके पैर पानी से छुए वैसे ही वह रस्सी से कस कर बँध गये जो साँपिनों ने इस मौके के लिये खास तौर पर बनायी थी।

नागरे को तुरन्त ही पता चल गया कि उसके पैर पक्के तौर पर बाँधे जा चुके थे और अगर उसने वहाँ से जाने की कोशिश की तो उनको उसे वहीं छोड़ना पड़ेगा। उसने अपनी पत्नी को यह बात बतायी भी पर वह आखीर तक देखने के लिये अड़ी रही।

बहुत धीरे से नागरे पानी में नीचे और और नीचे उतरा जब तक कि पानी उसकी छाती तक नहीं आ गया। फिर वह कन्धों तक आया फिर मुँह तक फिर आँखों तक और फिर माथे तक आ गया।

अब वह सारा का सारा पानी के अन्दर था केवल उसकी चोटी ही बाहर थी।

अब हीमाल सन्तुष्ट थी उसने उसकी चोटी पकड़ कर खींची ताकि वह अपने पति को पानी से बाहर खींच सके। पर अफसोस उसके हाथ उसके कुछ ही बाल आ पाये। इस तरह नागरे की सॉप पत्नियों ने अपने पति नागरे को वापस पा लिया और हीमाल ने अपने सुन्दर दैवीय पति को खो दिया।

बेचारी हीमाल बड़ी नाउम्मीद हो कर अकेली ही महल वापस लौट आयी। पर अब वह वहॉ खुश नहीं थी। उसने वह महल छोड़ दिया और एक सड़क के किनारे एक बहुत बड़ी सराय[49] बना कर उसमें रहने लगी।

अब वह अपना ज़्यादातर समय यहीं बिताती। गरीब लोगों की जरूरतों को पूरा कर के उनकी सहायता करती जो उसके पास रोज ही बहुत सारी संख्या में आते और नागरे के नाम पर उससे भीख मॉगते।

काफी दिनों बाद एक दिन जब उसके पास गरीब और बीमार लोगों की सहायता करते करते पैसे और ताकत खत्म होने वाले हो रहे थे तो एक बहुत ही गरीब आदमी और एक लड़की जो उसकी बेटी लग रही थी उसके पास आये।

[49] Inn

उनकी गरीबी देख कर हीमाल का दिल उनके लिये दया से भर गया। उसने उनको अन्दर बुलाते हुए कहा — “आओ अन्दर आओ। मुझे तुम्हारी सहायता करके बहुत खुशी होती पर इस समय मेरे पास सोने की इस ओखली और मूसल[50] के अलावा और कुछ नहीं रह गया है। सो तुम ये ले जाओ। उसके बाद मैं लेट जाऊँगी और मर जाऊँगी। अब मुझे ज़िन्दा रहने की भी कोई इच्छा नहीं है।”

वह भिखारी और उसकी बेटी शाम तक उस सराय में रहे। लेकिन जाने से पहले उस भिखारी ने उसे यह कहानी सुनायी —

“राजकुमारी जी। हम दोनों यानी मैं और मेरी बेटी हमेशा ही खाने के लिये इधर उधर घूमते फिरते हैं। कल हम लोग एक जंगल में थे जहाँ हमें एक सोता मिल गया। यह देख कर कि वह सोता बहुत ही साफ और मीठे पानी का सोता था हमने वह रात वहीं बिताने का निश्चय किया। हम लोग एक पेड़ के खोखले तने में सो गये।

सोने से पहले हम लोग तारों की तरफ देख ही रहे थे कि हमने कुछ शोर सुना और जब हमने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि एक राजा अपनी बहुत बड़ी सेना ले कर उस सोते में से निकल रहा था।

जब आखिरी सिपाही भी उस सोते से बाहर आ गया तो खाने की तैयारी की गयी। खाना खाने से पहले राजा ने बलि दी उसके

[50] Translated for the words “Mortar and Pestle” – see their picture above.

बाद सब खाना खाने बैठे। खाना खाने के बाद राजा की सब सेना तो उस सोते में समा गयी और गायब हो गयी पर वह राजा बाहर ही रहा। उसके हाथ में एक खाने की थाली थी।

जैसे ही उसके सारे सिपाही गायब हो गये उसने बहुत ऊँची आवाज में आवाज लगायी "क्या यहाँ कोई गरीब आदमी है।"

यह सुन कर हम दोनों उसके पास गये और उसने यह कहते हुए अपनी वह थाली हमें दे दी "बेवकूफ हीमाल के नाम।" और फिर सोते में जा कर गायब हो गया। फिर सब कुछ पहले जैसा हो गया।

वह कहानी सुनते समय हीमाल की क्या हालत हुई होगी उसका अन्दाजा भी नहीं लगाया जा सकता। उसकी साँस जैसे रुकने को थी उसकी आँखें जैसे उसके चेहरे से बाहर आने को थीं। उसका सारा शरीर काँप रहा था।

उसको खुद को यह पता नहीं था कि वह उस समय कैसा महसूस कर रही थी या क्या कर रही थी या बहुत खुश थी क्योंकि उसको यह कहानी सुन कर निश्चित हो गया था कि यह राजा और कोई नहीं उसका अपना नागरे था।

उसने सोने की ओखली और मूसल उस गरीब आदमी को दे कर कहा — "लो यह तुम्हारा ही है। अब तुम मेरे ऊपर एक मेहरबानी और कर दो तुम मुझे वह जगह दिखा दो जहाँ तुमने यह दृश्य देखा था।"

बूढ़े आदमी को तो खजाना मिल गया था। उसने वह ले कर राजकुमारी से कहा कि वह उसके लिये कुछ भी करने को तैयार है। वह उसी समय उठा और उसको उस सोते के पास ले चला।

जब वह हीमाल को ले कर उस सोते के पास पहुँचा तो कुछ अँधेरा सा हो गया था सो उन्होंने वह रात वहीं गुजारने का निश्चय किया। बूढ़ा भिखारी और उसकी बेटी तो जल्दी ही सो गये पर हीमाल ने तय किया कि वह सारी रात जागेगी और देखेगी कि वह राजकुमार अपनी सेना के साथ फिर से सोते में से निकलता है या नहीं।

वह नाउम्मीद नहीं हुई। बीच रात में जब सब कुछ शान्त था नागरे और उसकी सेना वहाँ फिर से प्रगट हुई और पहले की तरह से एक बहुत बड़ी दावत की तैयारी हुई।

दावत खत्म होने के बाद उसकी सेना तो सोते में समा कर गायब हो गयी पर राजा वहीं बाहर ही रहा। जब सब सोते में गायब हो गये राजा पहले की तरह चिल्ला कर बोला "क्या कोई गरीब आदमी यहाँ है?"

हीमाल अपने पति को अकेला और बड़ा कुलीन और शानदार देख कर अपने आपको उसके पास जाने से रोक नहीं सकी। उसके पास जा कर उसने उसका हाथ पकड़ लिया और बोली — "मेरे प्यारे नागरे। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। मुझे माफ कर दो और फिर से मेरे साथ आ कर रहो।"

नागरे यह देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गया। वह बोला — "अफसोस मैंने तुम्हें पहचाना नहीं।"

हीमाल बोली — "मुझे देखो तो। इन ऑखों को देखो। क्या मैं तुम्हारी पत्नी नहीं हूॅ।"

तब नागरे को उस पर प्यार आ गया और उसने उसको पहचान लिया पर अब वह उसके साथ रह नहीं सकता था। उसने कहा कि उसकी सॉप पत्नियॉ अब उसे कहीं जाने नहीं देंगी। अभी तुम यहॉ से जाओ और एक महीने बाद मैं तुमसे मिलने फिर आऊॅगा।"

लेकिन हीमाल बोली — "नहीं कभी नहीं। मैं तुम्हें अब यहॉ छोड़ कर कहीं नहीं जा सकती। अगर तुम मेरे साथ नहीं आओगे तो मैं तुम्हारे साथ चलॅूगी।"

सो नागरे को इस बात पर राजी होना पड़ा। पर वह अपनी पत्नी को अपने साथ कैसे ले जाये यह वह नहीं जानता था। यह उसके लिये बहुत मुश्किल काम था।

आखिर बहुत सोचने के बाद उसने निश्चय किया कि वह उसको एक छोटे से पत्थर[51] में बदल देगा और उस पत्थर को वह अपनी जेब में रख कर ले जायेगा। वह केवल इसी तरीके से उस सोते में उसके घर जा पायेगी और उसकी दूसरी पत्नियों के हमले से बची रहेगी।

[51] Little stone. Translated for the word "Pebble".

उसने ऐसा ही किया। हीमाल को उसने एक छोटे से पत्थर में बदला और अपने घर चला गया। जब वह अपने घर पहुँचा तो उसकी साँप पत्नियाँ और उसका परिवार उसके स्वागत के लिये आया। पर उसको लगा कि कहीं कुछ तो गलत था। वे अपने मन में कोई भेद छिपाये हुए थीं।

उसने पूछा कि क्या मामला था तो उसे मालूम हुआ कि उन्होंने उसके ऊपर किसी धरती के आदमी की खुशबू पहचान ली थी और उणको शक था कि वह बाहर की दुनियाँ से किसी बाहर के आदमी को अपने साथ सोते में ले कर आया है।

नागरे बोला कि उनका शक सही था और अगर वह यह वायदा करें कि वे उस आदमी को कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगी तो वह उस आदमी को उन्हें दिखायेगा। उन्होंने वायदा किया कि वे उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगी।

उसने वह छोटा पत्थर अपनी छिपी हुई जगह से निकाला और उसे उसका असली रूप दे दिया। जब उसकी साँप पत्नियों ने एक बहुत सुन्दर लड़की को देखा तो वे उससे जलने लगीं। उन्होंने तुरन्त ही अपने मन में यह तय कर लिया कि वे उसको एक मामूली नौकरानी बना कर रखेंगी।

उसको यह काम दिया गया कि वह परिवार के अनगिनत बच्चों के लिये दूध उबाले। तरीका यह था कि जब दूध तैयार हो जाये तो वह एक बर्तन बजा दे। बच्चे उस बर्तन के बजने की आवाज सुन

कर जान जायेंगे कि उनका खाना तैयार है और वे हीमाल के पास आ जायेंगे।

पर हीमाल अपने काम में कुछ बहुत ज़्यादा अच्छी नहीं थी सो एक दिन उसने तभी बर्तन बजा दिया जबकि दूध अभी थोड़ा गर्म ही था। साँप के छोटे छोटे बच्चों ने सोचा कि दूध पीने के लिये तैयार होगा तुरन्त ही दौड़े दौड़े रसोईघर में आये और सारा दूध पी गये।

लेकिन साँप गर्म दूध नहीं पी सकते तो वे गर्म दूध पी कर वे सारे बच्चे मर गये। दुखी माँओं को बहुत दुख हुआ। सारे घर में से रोने पीटने की आवाजें आने लगीं।

जब बड़े साँपों को पता चला कि हीमाल की भूल से उनके बच्चे मर गये तो उन्होंने उसको इतना काटा इतना काटा कि वह मर गयी। नागरे को भी यह जल्दी ही पता चला तो वह बहुत दुख में डूब गया।

जब वह कुछ सँभला तो उसने हीमाल की लाश के लिये एक छोटा सा बिस्तर बनाया और उसको सोते के पानी से बाहर निकाल कर एक पेड़ पर रख दिया। रोज वह उसको देखने के लिये बाहर आता और फिर सोते में वापस चला जाता।

एक सुबह एक पवित्र आदमी उधर से गुजर रहा था तो उसने एक पेड़ के ऊपर एक बिस्तर लगा देखा। वह यह देखने के लिये उस बिस्तर में क्या था पेड़ के ऊपर चढ़ गया। वहाँ उसने देखा कि एक बहुत सुन्दर लड़की वहाँ सोयी हुई थी।

उसने उस लाश को नीचे उतारा तो उसका दिल उस सुन्दर लड़की के लिये दर्द से भर गया। उसने नारायण की प्रार्थना की कि वह उसे ज़िन्दा कर दे। उसकी प्रार्थना स्वीकार हुई और हीमाल ज़िन्दा हो गयी। वह उस पवित्र आदमी के साथ उसके घर चली गयी।

जब नागरे अगली बार उस लाश को देखने के लिये धरती पर गया तो उसने देखा कि उसका छोटा सा बिस्तर और वह लाश दोनों ही वहाँ से गायब थीं। उसने सोचा “क्या किसी ने उसकी लाश चुरा ली? या हीमाल खुद ही ज़िन्दा हो गयी और मुझे छोड़ कर चली गयी?”

सो उसने उसकी खोज शुरू कर दी। वह अपनी पत्नी को ढूँढने के लिये सब जगह घूमता फिरा। आखिर में वह उस पवित्र आदमी के घर पहुँचा। जब वह वहाँ पहुँचा तो हीमाल सो रही थी सो उसने अपने आपको एक साँप में बदला और चुपचाप से उसके बिस्तर पर कुंडली बना कर बैठ गया।

जब वे लोग इस तरह बिस्तर पर एक साथ लेटे हुए थे कि इत्तफाक से उस पवित्र आदमी को बेटा वहाँ आ गया। उसको हीमाल बहुत पसन्द थी और वह उससे शादी करना चाहता था। जब उसने हीमाल के पास एक साँप कुंडली मारे बैठा देखा तो वह बहुत डर गया कि कहीं वह उसको काट न खाये। उसने तुरन्त ही अपना चाकू खोला और उस साँप के दो टुकड़े कर दिये।

इससे जो शोर हुआ उससे हीमाल की ऑख खुल गयी और वह चिल्ला पड़ी — "ओह यह तुमने क्या किया। तुमने मेरे पति को मार दिया। ओह मेरा प्यारा नागरे अब नहीं रहा।"

उसी शाम को सॉप की लाश को चन्दन की लकड़ी के ढेर पर रख कर जला दिया गया। उस समय की सती प्रथा के अनुसार हीमाल भी उसी के साथ जल कर मर गयी।

वह पवित्र आदमी इस दुख भरे दृश्य को देख कर बहुत दुखी हुआ। वह जहॉ वे दोनों लाशें जली थीं वहॉ गया और दोनों लाशों की राख उठायी और उनको अपने सामने रख कर दिन रात रोता रहा। उसको किसी तरह भी तसल्ली नहीं दी जा सकी।

खुशकिस्मती से उस दिन शिव जी और पार्वती जी एक चिड़िया के रूप[52] में उसी पेड़ की एक शाख पर बैठे थे जिसके नीचे वह पवित्र आदमी बैठा रो रहा था। उन्होंने उस पवित्र आदमी के रोने की आवाज सुनी तो उन्होंने उसकी सहायता करने की सोची।

शिव जी ने अपनी पत्नी से कहा — "ज़रा इस आदमी का दुख तो देखो। काश वह यह जान पाता कि इस राख की क्या ताकत है। अगर यह इस राख को इस सोते में फेंक दे तो दोनों फिर से ज़िन्दा हो जायेंगे।"

---

[52] [My Note: Shiv Ji is one of the three main gods of Hindus – Brahmaa Vishnu and Shiv. Paarvatee Jee is Shiv's wife. We have read in several stories of Punjab, Kashmir and Bengal about two birds – Sudabror and Budabror who talk in the same way as these two birds are now talking here. So it seems that these two birds are also the same birds and those birds are also Shiv and Paarvatee in the form of birds.]

पवित्र आदमी ने चिड़ियों की यह बातचीत सुनी और तुरन्त ही उस राख को सोते के पानी में फेंक दिया। जैसे ही उसने यह किया कि नागरे और हीमाल दोनों फिर से ज़िन्दा और तन्दुरुस्त प्रगट हो गये।

इसके बाद तो सब ख़ुशी ख़ुशी रहने लगे। वे उस सोते के पास ही एक छोटा सा मकान बना कर रहने लगे। वह पवित्र आदमी भी उनके पास ही रहने लगा।

उसकी सहानुभूति के लिये अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिये वे उस आदमी को कहीं और जाने ही नहीं देते थे। उसको उन्होंने उसके मरते दम तक सेवा की। भगवान ने उनको अच्छे काम करने का आशीर्वाद दिया।

List of the Tales of Folktales of Kashmir

Part 1

1. Seven Legged Beast
2. The Cat Who Became a Queen
3. Good King Hatim
4. Metempsychosis
5. The Charmed Ring
6. The Crow Girl
7. One Laksh Rupees For a Bit of Advice
8. Ogress Queen
9. The Goldsmith and His Friends
10. The Tale of a Princess
11. The Prince Who Was Changed into a Ram
12. Saiyid and Said
13. The Cruel Merchant
14. The Man From Shiraz
15. Shabrang Prince and Thief

Part 2

16. The Troublesome Friend
17. The Wicked Stepmother
18. The True Friendship
19. Three Blind Men
20. All For a Paisa
21. Pride Abased
22. The Two Brothers
23. Base Friend
24. Haya Band and Zuhra Khotan
25. The Clever Jackal
26. A Stupid Boy
27. Four Princes Turned Into Stones
28. Brave Princess
29. The Three Princes
30. The Diligent King
31. The Ivory City and Its Fairy Princess
32. A Strange Request
33. The Unjust King and Wicked Goldsmith
34. The Philosopher's Stone
35. How the Wicked Sons Were Duped

Part 3

36. A Stupid Husband and His Clever Wife
37. The Prayerful Faqir
38. Unity is Strength
39. The Pir of Phattapur
40. The Sagacious Governor
41. Their Only Ruby
42. The Jackal King
43. The Black and White Beards
44. The Story of a Weaver
45. The Robbers Robbes
46. The Young Gambling Merchant
47. The Day Thief and the Night Thief
48. The Cunning Goldsmith
49. How the Princess Found Her Husband
50. The Clever Parrot
51. The Malecontent Cured
52. The Stupid Peasant
53. Karm or Dharm
54. Four Wicked Sons and Their Luck
55. Sharaf the Thief
56. The King and His Treacherous Wazir

Part 4

57. The Shipwrecked Prince
58. Gagar Wol and His Servant Ratun
59. Wicked Queens
60. The Four Princes
61. Jogi's Daughter
62. Gullala Shah
63. Why the Fish Laughed
64. Nagray and Himal

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi
by Sushma Gupta

12th Cen	**Shuk Saptati.**
No 29	By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot". शुक सप्तति — ।
c1323	**Tales of Four Darvesh**
No 24	By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes. किस्सये चहार दरवेश
1868	**Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23	By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889). पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियाँ
1872	**Indian Antiquary 1872**
No 34	A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.
1880	**Indian Fairy Tales**
No 30	By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales. हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ
1884	**Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
	By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.
1887	**Folk-tales of Kashmir.**
No 11	By James Hinton Knowles. 64 Tales. काश्मीर की लोक कथाऐं
1889	**Folktales of Bengal.**
No 4	By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales. बंगाल की लोक कथाऐं
1890	**Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18	By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. 26 Tales सूरज की कहानियाँ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं
1892	**Indian Nights' Entertainment**
No 32	By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales. भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फ्रैडैरिक क्रेन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Panjab
By Charles Swynnerton – a collection of short tales given in his two books – "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment" given above – No 31 and 32. **1903**.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022